वैश्विक संवाद

9.2

17 भाषाओं में एक वर्ष में 3 अंक

समाजशास्त्र पर बातचीत नन्दिनी सुन्दर के साथ

जोहाना ग्रबनर

रूपांतरण एवं विकल्प

मैट डॉसन
रेनर रिलिंग
मेतियों मार्तिनेज अबारका
अब्देलकाडर लात्रो
टेरेसा पेरेज
क्रिस्टोफर मबजा

स्मृति में: एरिक ओलिन राइट

माइकल बुरावे
मिशेल विलियम्स

लिंग एवं सामाजिक असमानता

बिर्गिट रिग्राफ
लीना अबीराफेह
कादरी आविक
लिजा हुसु
ब्लांका न्यकलोवा
मार्गरिट अब्राहम
निकोला पाइपर
जेफ हर्न

(दक्षिण) अफ्रीका से समाजशास्त्र

जेरेमी सिकिंग्स
मोकोंग एस. मपाडिमेंग
असांडा बन्या
थबांग सेफलाफला
मार्क सी. ए. वेगरिफ
जबुसिल मध्यजविमबिशि शुम्बा
एलेक्सिया वेबस्टर
एडवर्ड वेबस्टर

खुला अनुभाग

> एकजुटता परिपेक्ष्य से दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद

पत्रिका

GD
अंक 9 / क्रमांक 2 / अगॅस्ट 2019
http://globaldialogue.isa-sociology.org/

International Sociological Association

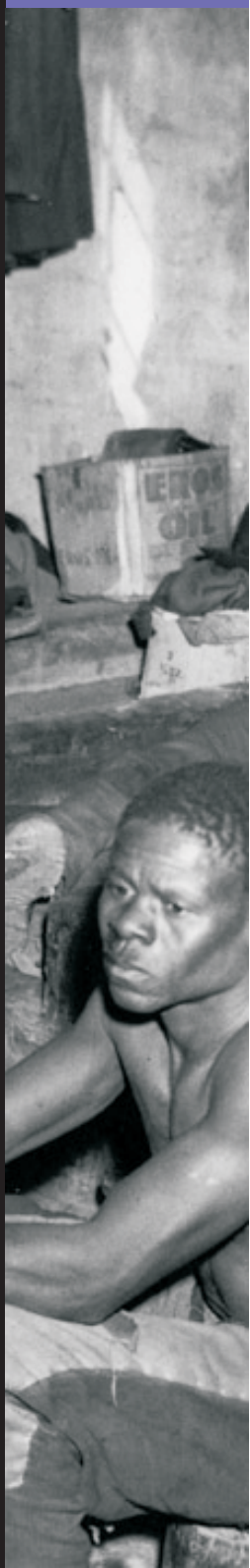

> Editorial

समाजशास्त्री न केवल विषय के अन्तर्गत विमर्श को बढ़ाने का उद्देश्य रखते हैं बल्कि वे सार्वजनिक बहस और विवादों में भी संलग्न रहते हैं। पिछले दशक में, नन्दिनी सुंदर, प्रख्यात भारतीय समाजशास्त्री एवं सामाजिक कार्यकर्ता ने शैक्षाणिक समुदाय और सक्रियतावाद के मध्य सीमाओं को चुनौती दी है और राजनीतिक कार्यवाही के माध्यम से भारत में सामाजिक अन्याय का मुकाबला किया है। वैश्विक सवांद के इस अंक के प्रारंभिक साक्षात्कार में, सुंदर भारत के "बस्तर में युद्ध" के अतीत और वर्तमान परिस्थिति के बारे में और इस भगते हुए समय में एक अच्छे विद्वान होने और एक अच्छे कार्यकर्ता होने की मुश्किलों के बारे में बात करती हैं।

हमारा पहला परिसंवाद "रूपातंरण एवं विकल्प" दो आख्यानों से प्रारम्भ होता है जो समाजशास्त्र के इतिहास के पार वैकल्पिक समाज और संभावित भविष्य पर समाजशास्त्रीय चिंतन को ट्रेस करते हैं और चर्चा करते हैं कि इस तरह का चिंतन मुक्तकारी विचारों के साथ समाजशास्त्रीय समालोचना के संघटन के लिए क्यों आवश्यक है। लेटिन अमरीका से एक आख्यान एकजुट समाज के लिए राजनैतिक संघर्ष और ब्यून विविर जैसी अवधारणा की भूमिका को उजागर करता है। कतर से एक लेख अरब दुनिया के संभावित भविष्य की तुलना प्रस्तुत करता है। दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे से लेख इस विषय पर आनुभाविक शोध प्रस्तुत करते हैं कि लोग अपने जीवन के मुख्य परिवर्तनों को कैसे संबोधित करते हैं (इस मामले में जलवायु परिवर्तन द्वारा लाये गये) और वांछित नीति परिवर्तनों को किस प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

एरिक ओलिन राइट, एक ऐसे विद्धान जिनका जीवन और कार्य समानता, स्वतन्त्रता और समुदाय के विचारों को समर्पित था का जनवरी 2019 में निधन हो गया। उनके जाने से हमने ऐसा समाजशास्त्री खो दिया जिसके वर्ग, मार्क्स और "वास्तविक आदर्श लोक" के कार्य ने न केवल दुनिया के सभी जगहों के सहकर्मियों को बल्कि एक अधिक न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के लिए लड़ रहे सक्रियकर्ताओं को प्रेरित किया। विश्व के भिन्न हिस्सों से दो करीबी मित्र उनके जीवन कृत्यों को श्रद्धाजंली देते हैं।

हमारे द्वितीय परिसंवाद में बिरगित रिग्रफ, लीना अबीराफेह एवं कादरी आविक दुनिया भर से विद्वानों को "लिंग एवं सामाजिक असमानता" के मध्य सम्बन्धों पर उनके शोध को प्रस्तुत करने के लिए आंमत्रित करती हैं। लेख इन सम्बन्धों के विभिन्न पक्ष जैसे यूरोपीय एवं नोर्डिक परिपेक्ष्य से शोध फडिंग में लैंगिक असमानता, चेक गणराज्य में लैंगिक अध्ययनों की यथा–स्थिति और भविष्य, अरब क्षेत्र में लैंगिक असमानता के मार्ग और बाधाएं, एवं एशियाई संदर्भ में लैंगिक श्रम को चिन्हांकित करते हैं। ये लेख सामाजिक प्रगति पर बहस या लैंगिक समानता में प्रतिघात पर अन्तदृष्टि प्रदान करते हैं और एक विषय के रूप में समाजशास्त्र कैसे समानता और सामाजिक न्याय के लिए ठोस समाधान प्रदान कर सकता है पर चर्चा को भड़काते है। लेख सामाजिक कार्यवाही की आवश्यकता पर और एक समान समाज के मार्ग को और प्रशस्त करने के लिए लैंगिक समानता के संघर्ष को बनाये रखने की आवश्यकता को इंगित करते है।

"(दक्षिण) अफ्रीका से समाजशास्त्र" के क्षेत्रीय फोकस के हिस्से के रूप में, पहला लेख दक्षिण अफ्रीका में निर्धनता और असमानता के सतात्यता को चिन्हांकित करता है और इसे सम्पूर्ण अफ्रीका के लिए एक चेतावनी के रूप में प्रस्तुत करता है। दूसरा लेख दक्षिण अफ्रीका के करिश्माई गिरिजाघरों की बढ़ती लोकप्रियता और उनके ईद गिर्द विवादों की चर्चा करता है और इस मुददे पर समाजशास्त्रीय आवाजों की खामोशी को सम्बोधित करता है। इसके बाद के दो लेख दक्षिण अफ्रिका के खदान श्रमिकों की परिस्थिति पर बहस करते हैं। उनमें से एक समावेशी जैसे शब्दाडम्बर कैसे कुछ निश्चित कार्यो से महिलाओं के अपवर्जन का खण्डन करता है जबकि दूसरा अश्वेत बेरोजगार पूर्व–खदान श्रमिकों का एक नृवंशीय अध्ययन प्रस्तुत करता है और बेरोजगारी से उनके आत्मविश्वास और स्व–योग्यता पर पडने वाले प्रभाव को दिखाता है। तंजानिया के कार्यशील लोगों से हम क्या सीख सकते हैं, दर एस सलाम की खाद्य व्यवस्था की जॉच करने वाला एक लेख हम तक पहुँचाता है। जिम्बाब्वे के इतिहास पर फोकस कर, अगला लेख जिम्बाब्वे के हिसंक राज्य को पोषित एवं बदलने वाले संचय एवं राजनैतिक पुनरूत्पादन के तरीकों का विवेचन करता है। इस परिसंवाद का अंत एलेक्सिया एवं एडवर्ड वेब्स्टर के अदभुत फोटो–निबन्ध द्वारा किया गया है जिसमें जोहान्सबर्ग के इतिहास के बारे में अंतदृष्टि को स्वर्ण पर निर्मित शहर के उल्लेखनीय छायाचित्र के साथ प्रस्तुत किया है।

इस अंक के खुले अनुभाग में सम्मिलित लेख आस्ट्रिया एवं हंगरी पर फोकस कर यूरोप में दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद के समय में एकजुटता की जांच करते हैं। ■

ब्रिजिट ऑलनबाकर एवं क्लॉस डोरे
वैश्विक संवाद के सम्पादक

> *वैश्विक संवाद* आई.एस.ए वेबसाइट पर 17 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियाँ <globaldialogue.isa@gmail.com> पर भेजी जा सकती हैं।

> संपादक मण्डल

संपादक : ब्रिजिट ऑलनबॉकर, क्लॉस डोरे

सह-सम्पादक : जोहाना ग्रबनर, क्रिस्टीन शिकर्ट

सहयोगी सम्पादक : अर्पणा सुन्दर

प्रबंधन संपादक : लोला बुसुतिल, अगस्त बागा

सलाहकार : माइकल बुरावे

मीडिया सलाहकार : जुआन लेजाररगा

परामर्श संपादक :
साडी हनाफी, ज्योफी प्लीयर्स, फिलोमिन गुतिरेज, एलोइजा मार्टिन, सावाको शिराहेस, इजाबेला बरलिंस्का, तोबा बेन्सकी, चिह–जुए जे चेन, जेन फ्रित्ज, कोइची हासेगावा, हिरोशी इशिदा, ग्रेस खुनो, एलिसन लोकोन्तो, सुसन मेकडेनियल, एलिना ओइनास, लोरा ओसो कैसास, बंडाना पुर्कायस्था, रोह्डा रेडॉक, मौनीर सैदानी, आयसे सकतांबर, सेली स्कालोन, नाजानीन शाहरोकनी।

क्षेत्रीय संपादक

अरब दुनिया : साड़ी हनाफी, सोराया मौलोदजी, गराउदजी, फातिमा रधौनी, मौनीर सैदानी।

अर्जेन्टीना : एलेक्जेंड्रा ओतामेंडी, जुआन इग्नासियो पियोवानी, पिलर पी पुइग, मार्टिन उर्टुसन।

बंग्लादेश : हबीबुल हक खोंडकर, हसन महमूद, जुवेल राणा, यूएस रोकेय अख्तर, तूफिका सुल्ताना, असिफ बिन अली, खैरून नाहर, काजी फदिया एशा, हेलल उदीन, मुहिमिन चौधरी, मोहम्मद यूनस अली।

ब्राजील : गुस्तावो तानिगुती, एंड्रेजा गली, लुकास अमरल ओलिविरा, बेनो वार्केन, एंजेलो मार्टिन्स जूनियर, दिमित्रि सर्बोन्सीनी फर्नाडीस।

फ्राँस/स्पेन : लोला बुसुतिल

भारत : रश्मि जैन, निधी बंसल, प्रज्ञा शर्मा, मनीष यादव, संदीप मील।

इंडोनेशिया : कमांतो सुनार्तो , हरि नुग्रोहो, लूसिया रतीह, कुसुमादेवी, फिना इट्रियती, इंदेरा रत्ना इरावती पट्टिनसारानी, बेनेडिक्टस हरि जूलियावान, मोहम्मद शोहीबुद्दीन, डोमिंगगस एलसीड ली, एंटोनियस एरियो सेतो हार्डजाना, डायना तेरेसा पाकासी, नुरूल ऐनी, गेगेर रियांतो, आदित्य प्रदान सेतियादी।

ईरान : रेयहाने जावदी, नियाश डॉलाती, अब्बास शाहरबी, सैयद मोहम्मद मुतालेबी, वाहिद लेन्जानगदे।

जापान : सतोमी यामामोतो, यूको मसायुई, रिहो तनाका, मेरी यायामोतो, शोगो अरियोशी, कोजमा कावासाकी, साई कोदामा, कोकी कोयानगी, तत्सुहीरो ओहाता, शुंजी सुगीहारा, रयो वाकामत्सु।

कजाकस्तान : अइगुल जाबिरोवा, बायन स्मागमबेट, आदिल रोदियोनोव, अल्माश त्लेसपयेवा, कुआनिश टेल, अलमागुल मुस्सीना, अकनूर ईमानकुल।

पौलैंड : जेकब बारस्जेवस्की, इवोना बोजादज्जेवा, कतारज्यना देब्स्का, एना डुलनी–लेसजस्किंस्का, करजिस्तोफ गुबांस्की, मोनिका हेलक, सारा हरस्जींस्का, जुस्तिना कोसिंस्का, अगाता कुकला, एडम मुलर, वेरनिका पीक, जोफिया पेन्जा–गेबलर, जोनाथन स्कोविल, एग्निजका स्जिपुल्स्का, एलेक्सांड्रा वेगनर, मातुसुज वोजदा।

रोमानिया : कोसिमा रूधिनिस, राइसा–गेब्रियला जमीफिरेस्कू, लुसियाना एनास्तोसोई, क्रिस्तियन चीरा, डायना एलेक्सेंड्रा डुमित्रेस्कु, राडू डुमिस्ट्रेस्कू, युलिआन गेबर, डैन गिओर्टमैन, एलेक्सांड्रा इरिमि–एना, क्रिस्तियना लात्रिया, इयाना मोलुरेनु, बियांका मिहायला, एंड्रिया ऐलेना मोल्दोवीनु, ओना–एलेना नेग्रिया, मिओआरा पराशिव, कोद्रुत पिनजारू, सुसाना मरिया पोपा, एड्रियाना सोहोदोलानु, मारिया स्तोइसेस्कू, कतालिन वरजारी।

रूस : ऐलेना ज्द्रावोम्यस्लोवा, अनास्तासिया दौर, वेलेंटीना इसाऐवा।

ताईवान : जिंग–माओ हो।

तुर्की : गुल कोरबासियोग्लू, इरमक एवरेन।

समाजों के वर्तमान संगठन के रूपांतरण एवं विकल्पों पर चिंतन हमेशा से समाजशास्त्रीय चिंतन का एक भाग रहे हैं, उतना ही जितना सामाजिक परिवर्तनों एंव रूपातंरण पर आनुभाविक शोध। दुनिया भर के ये लेख इन मुद्दों पर सैद्धान्तिक के साथ आनुभाविक अंतदृष्टि प्रदान करते हैं।

*वैश्विक स्तर पर, महिलाएं अभी भी निर्धन और अधिकारहीन में बडे अनुपात में हैं। इस निबन्ध संग्रह के लिए एकत्रित लेख विभिन्न क्षेत्रों–शोध फंडिग एवं नवउदारवाद से लेकर राज्य एवं श्रम तक, में **लिंग और असमानता** के सम्बन्ध पर बहस करते हैं।*

यह खण्ड दक्षिण अफ्रीका से केवल इस देश के बारे में ही नहीं बल्कि जिम्बाब्वे और तंजानिया के साथ साथ सम्पूर्ण अफ्रीका से सम्बन्धित मुददों पर सैद्धान्तिक और आनुभाविक शोध पर एक अंतदृष्टि प्रदान करता है। जोहान्सबर्ग के इतिहास के बारे में एक फोटो निबंध शहर की तस्वीर प्रस्तुत करता है।

GD

सेज प्रकाशन की उदार ग्रांट से ***वैश्विक संवाद*** का प्रकाशन संभव है।

> इस अंक में

Editorial 2

> समाजशास्त्र पर बातचीत

जलते हुए वन: नन्दिनी सुन्दर के साथ एक साक्षात्कार
जोहाना ग्रबनर, आस्ट्रिया द्वारा 5

> रूपांतरण एवं विकल्प

समाजशास्त्रीय विकल्पों का एक संक्षिप्त इतिहास
मैट डॉसन, यूनाइटेड किंगडम द्वारा 8

निर्मित होता भविष्य
रेनर रिलिंग, जर्मनी द्वारा 10

ब्यून विविर के कई स्वर
मेतियों मार्तिनेज अबारका, मेक्सिको द्वारा 12

अरबी दुनिया का दूसरा भविष्य
अब्देलकाडर लात्रे, कतर / अल्जीरिया द्वारा 14

कलंक कैसे नीतियों को बाधित करता है : दक्षिण अफ्रीका में कचरा बीनने वाले
टेरेसा पेरेज, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 16

जलवायु परिवर्तन के साथ अनुकूलन: जिम्बाब्वे के लघु किसान
क्रिस्टोफर मबेजा, जिम्बाब्वे द्वारा 18

> स्मृति में: एरिक ओलिन राइट

एरिक ओलिक राइट: एक वास्तविक यूटोपियन
माइकल बुरावे, यू.एस.ए द्वारा 20

एरिक ओलिन राइट को स्मरण करते हुए
मिशेल विलियम्स, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 22

> लिंग और सामाजिक असमानता

लिंग और असमानता का संबन्ध: एक परिचय
बिर्गिट रिग्राफ, जर्मनी, लीना अबाराफेह, लेबनान एवं कादरी आविक, फिनलैंड द्वारा 23

शोध वित्तपोषण में लैंगिक चुनौतियां
लिजा हुसु, फिनलैंड / स्वीडन द्वारा 25

चेक गणराज्य में लैंगिक समानता को चुनौती
ब्लांका न्यकलोवा, चेक गणराज्य द्वारा 27

दृढाग्रह एवं परिवर्तन : अमरीका में लैगिंग असमानता
मार्गरिट अब्राहम, यू.एस.ए. द्वारा 29

अरब क्षेत्र में जेण्डर और असमानता
लीना अबीराफे, लेबनान द्वारा 31

एशियाई संदर्भ में लैंगिक श्रम और असमानता
निकोला पाइपर, यू.के. द्वारा 33

आईपीएसपी : सामाजिक, कुछ लैंगिक चिंतन
जेफ हर्न, फिनलैंड/स्वीडन/यू.के. द्वारा 35

> (दक्षिण) अफ्रीका से समाजशास्त्र

निर्धनता एवं असमानता: अफ्रीका के लिए चेतावनी के में रूप दक्षिण अफ्रीका
जेरेमी सिकिंग्स, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 37

दक्षिण अफ्रीका में पेंटेकोस्टलिज्म और करिश्माई ईसाई धर्म
मोकोंग एस. मपाडिमेंग, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 39

स्थान लंघनकारी: भूमिगत महिला खनिक
असांडा बेन्या, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 41

बेरोजगारी के अतिरिक्त–आर्थिक प्रभाव
थबांग सेफलाफला, दक्षिण अफ्रिका द्वारा 43

विश्व को खाद्य कैसे उपलब्ध कराये: तंजानिया से सीख
मार्क सी. ए. वेगरिफ, दक्षिण अफ्रिका द्वारा 45

जिम्बाब्वे का शिकारी सज्य: पार्टी, सेना और व्यवसाय
जबुसिल मध्यजविमबिशि शुम्बा जिम्बाब्वे द्वारा 48

जोजी: स्वर्ण का अनिश्चित शहर
एलेक्सिया एवं एडवर्ड वेबस्टर, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 50

> खुला अनुभाग

एकजुटता परिपेक्ष्य से दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद
जोर्ग फ्लेकर, करीना आल्ट्राइटर, इस्तवान गैज्जर एवं सस्कजा शिंडलर, आस्ट्रिया द्वारा 55

"संकट के समय में सबसे कठिन है यह याद रखना कि हमारे पास शोध करते रहने का उत्तरदायित्व भी है। कभी कभी समाजशास्त्रीय लेखन निजी प्रोजक्ट के रूप में प्रतीत होता है जो लेखक के अलावा किसी को भी लाभ नहीं पहुँचाता हैं, कभी कभी यह निरर्थक लगता है, विशेष तौर पर जब यह अभूतपूर्व न हो, लेकिन अंत में हम सब पर जो कुछ भी वार्धिक ज्ञान जोड़ सकते है की जिम्मेदारी है।"

नन्दिनी सुन्दर

> जलते हुए वन

नन्दिनी सुंदर के साथ एक साक्षात्कार

नन्दिनी सुदंर दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की प्रोफेसर हैं। उनके नवीनतम प्रकाशनों में ये सम्मिलित है : द बर्निंग फॉरेस्ट : इंडियास वार इन बस्तर (जगरनॉट प्रेस, 2016 एंव द बर्निंग फॉरेस्टः माओवादियों के खिलाफ भारत का युद्ध शीर्षक के तहत नया संस्करण, वर्सो, 2019); एक सम्पादित अंक, अनुसूचित जनजाति एवं उनका भारत (ओयूपी, 2016); दक्षिण एशिया में गृह युद्ध : राज्य, संप्रभुता, विकास (अपर्णा सुंदर के साथ सह–सम्पादित, सेज, 2014); एवं पोस्ट रिफॉर्म भारत में असमानता और सामाजिक गतिशीलता, समकालीन दक्षिण एशिया का विशिष्ट अंक (रविंदर कौर के साथ सह–सम्पादित, 2016) उन्होंने सबाल्टर्नस एण्ड सोवरेन्सः एन एथ्रोपोलोजिकल हिस्ट्री ऑफ बस्तर (द्वितीय संस्करण 2007); सह लिखित ब्राचिंग आउट : ज्वाइट फारेस्ट मैनेजमेण्ट इन इंडिया (2001); सम्पदित लीगल ग्राउण्डस : नेचुरल रिर्सोसेस, आइडेन्टिटी एवं द न्यू लॉ इन झारखण्ड (2009); और सह–सम्पादित एन्थ्रोपोलोजी इन द ईस्ट : द फाउण्डरस ऑफ इंडियन सोश्यिोलोजी एण्ड एन्थ्रोपोजी (2001) भी लिखी हैं। सुदंर 2007 से 2011 तक कान्ट्रिब्यूशन्स टू इंडियन सोशियोलोजी की संपादक रही है और उन्होंने कई पत्रिकाओं, अनुसंधान संस्थाओं एवं सरकारी समितियों के बोर्ड पर कार्य किया है। उन्हें 2010 में सामाजिक विज्ञान के लिए इंफोसिस पुरस्कार (सामाजिक मानवशास्त्र), 2016 में विकास में शोध के लिए इस्टर बोसेरप पुरस्कार और 2017 में विकास अध्ययन में उल्लेखनीय योगदान के लिए मैल्कॉम अदिसेशियाह अवार्ड प्रदान किया गया।

2005 से सुन्दर मानवाधिकार मुकदमेंबाजी और सक्रियता में संलग्न है। 2011 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने नंदिनी सुंदर बनाम छतीसगढ़ राज्य के एक ऐतिहासिक फैसले के तहत सशस्त्र सतर्कता के लिए राज्य समर्थन पर प्रतिबंध लगा दिया था। वे समसामयिक मुददों पर मीडिया में नियमित रूप से लिखती है। और अनके लेख http://nandinisundar.blogspot.com पर उपलब्ध हैं।
पर उपलब्ध हैं।

यहां, जोहान्स केपलर विश्वविद्यालय, लिंज, आस्ट्रिया में पीएचडी शोधकर्त्ता और *वैश्विक संवाद* की सहायक संपादक **जोहाना ग्रबनर** उनका साक्षात्कार ले रही हैं:

नन्दिनी सुंदर

जे.जी.: समीक्षकों द्वारा प्रशंसित आपकी पुस्तक सबाल्टर्न्स एण्ड सोवरेन्स: एन एथ्रोपोलोजिकल हिस्ट्री ऑफ बस्तर 1997 में प्रकाशित हुई और वह बस्तर के उन्नीसवीं–एंव बीसवीं सदी के इतिहास पर केन्द्रित है। क्या आप मध्य भारत में इस क्षेत्र पर ध्यान केन्द्रित करने वाले कार्य की प्रांरभिक रूचि एवं प्रेरणा के बारे में बता सकती हैं?

एनएस: जब मैनें 1980 के दशक के उत्तरार्ध में कोलम्बिया विश्वविद्यालय के मानवशास्त्र विभाग में पीएचडी कार्य प्रारम्भ किया, मैं इ.पी. थ्राम्पसन और एरिक हाब्सबॉम जैसे मार्क्सवादी इतिहासकारों के कार्य के साथ साथ जून नैश और विलियम रोजबेरी जैसे मानवविज्ञानी जिनका फोकस राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर था, से प्रेरित थी। जब भारत में, विद्धान इतिहास के सबाल्टर्न स्कूल पर बहस कर रहे थे, मुझे पता था कि मै उपनिवेशवाद, पूंजी के विस्तार और कृषक विद्रोह, समकालीन सामाजिक आन्दोलनों का अध्ययन करना चाहती

>>

हूँ, लेकिन कहां और कैसे के बारे में पता लगाने में समय लग गया। मैं पहली बार बस्तर गई और ऐसा लगा कि वहां मेरी पीएचडी के लिए आवश्यक सभी सामग्री थी – उदार लोग, चल रहे सामाजिक आंदोलन, एक विद्रोही अतीत ... और किसी ने वास्तव में इस इतिहास पर कार्य नहीं किया था।

जे.जी.: अपनी नवीनतम पुस्तक जलते वनः माओवादियो के खिलाफ भारत का युद्ध में आपने बस्तर के क्षेत्र में किये अपने सतत शोध एवं श्रेत्रीय कार्य के निष्कर्षों पर चर्चा की है। क्या आप इस क्षेत्र में आज होने वाले विशिष्ट सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों का संक्षेप में वर्णन कर सकती हैं?

एनएसः पिछली शताब्दी या उससे अधिक से मध्य भारत का अपने वनों और खनिज संसाधनों के लिए शोषण किया गया है। यह एक प्रक्रिया है जो 21वीं सदी के प्रारम्भ में अधिक तीव्र हो गई। बडे कार्पोरेटों को खनन पट्टे दिये गये जिसके कारण स्थानीय समुदायों का विस्थापन हुआ एवं पर्यावरणीय एवं सामाजिक संकट पैदा हुआ। लोग कई तरह के आंदोलनों के माध्यम से विस्थापन का प्रतिरोध कर रहे हैं। पिछले कुछ दशकों में होने वाला एक रूप भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी (माओवादी) के साथ सशस्त्र गुरिल्ला गतिविधियों में भाग लेना रहा है। सरकार के आतंक विरोधी गतिविधियों के अंतर्गत अतिरिक्त न्यायिक हत्याओं की बड़ी संख्या, सुरक्षा शिविरों की भारी मात्रा और भू–भाग का सैन्यीकरण सम्मिलित था। वर्तमान में, सरकार और माओवादी दोनों ही सरास्त्र तरीकों को अपनाने में दुराग्रही है, यद्यपि वे दोनों लोगों के हित में संवाद और शांति चाहने का दावा करते हैं।

जेजीः जलते वन मे, आप भारत में लोकतंत्र और लोकतांत्रिक परिपाटियों की समझ और परिस्थिति पर प्रश्न खड़े करती है और कहती हैं कि भारत सभी संस्थानों के साथ एक लोकतंत्र है [...], लेकिन उनका अर्थ वह नहीं है जिसकी हम अपेक्षा करते हैं।" क्या आप हमारे लिए इस आलोचना की रूपरेखा बता सकती हैं?

एनएसः चुनाव या कल्याणकारी उपाय, जिन्हें अक्सर लोकतंत्र के लिए आवश्यक तत्व माना जाता है, अक्सर प्रतिरोध के वैकल्पिक तरीकों के साथ साथ राज्य के रोजगार विहीन वृद्धि की दृष्टि के साथ मेल न खाने वाले जीवन के उन रूपों को अवैधानिक करने के लिए काम में लिये जाते है। इनमें जंगलों के साथ सह–अस्तित्व के स्वरूपों के साथ कारीगर उत्पादन प्रथाओं की श्रखंला सम्मिलित है। ''सामान्य समय'' में भी चुनावी प्रतिनिधित्व संरचनात्मक असमानताओं, जिसके तहत वह कार्य करता है, के कारण समस्याग्रस्त है जैसे चुनाव लड़ने के लिए आवश्यक धन की भारी रकम जिसके कारण पार्टियाँ बड़े व्यवसायों पर निर्भर होती हैं और विभिन्न प्रकार की भ्रष्ट प्रथाओं को सुगम बनाती हैं। हालांकि, प्रति विद्रोहिता या संघर्ष के दौरान, लोकतांत्रिक तंत्र का प्रतिनिधित्व की बजाय उत्पीडन के एक साधन के रूप में उपयोग विशेषतः स्पष्ट है। उदाहरण के लिए, लोगों को राजनैतिक व्यवस्था को वैधता प्रदान करने हेतू मतदान करने के लिए मजबूर किया जाता है और पार्टियों एवं सगंठनों को चुनिंदा रूप से प्रतिबंधित किया जाता है। वर्तमान में भारत में, मीडिया के एक बड़े हिस्सें को दक्षिण पंथ द्वारा सहयोजित किया गया और वे राष्ट्रवादी के मुखौटों के पीछे घृणा प्रचारक के रूप में कार्य कर रहे हैं। उत्तरोत्तर रूप से लोकतंत्र की समर्थक सभी संस्थाएं जैसे न्यायपालिका, नियामक प्राधिकारी आदि को खोखला किया जा रहा है। लोकतांत्रिक राजनीति, शक्ति के विभाजन और लोकप्रिय सहमति के माध्यम से रचनात्मक विकल्पों के द्वारा सोच की बाह्य सीमा के रूप में कार्य करती है।

जेजीः बस्तर में सामाजिक और राजनीतिक संघर्षो में राज्य सम्मिलित हैं, साथ ही विभिन्न संरचना और भिन्न राजनीतिक और सामाजिक उद्देश्यों के साथ कई राजनीतिक और सामाजिक समूह सम्मिलित हैं। क्या आप उस सैद्धान्तिक ढांचे के बारे में जिससे आप आकर्षित होती हैं, साथ ही इन भिन्नता को पकड़ने के लिए जिस अनुभवजन्य दृष्टिकोण को अपनाती हैं, के बारे में बता सकती हैं और आप उन्हें उपयोगी क्यों मानती हैं।

एनएसः मेरा अंतर्निहित सैद्धान्तिक ढांचा मोटे तौर पर मार्क्सवादी रहा है। हालांकि जलते वन में मैंने लोकतंत्र का प्रजातिलेखन करने का प्रयास किया है। ऐसा मैने इस प्रक्रिया में लोगों द्वारा लाई आकांक्षाओं के माध्यम से मीडिया, न्यायपालिका एवं राजनैतिक दलों जैसे विभिन्न संस्थाओं के प्रत्युत्तर के माध्यम से किया है। हमने देखा कि कैसे असभ्यता और अनिश्चितता सह–निर्मित होती हैं लेकिन यह भी की लोगों मे जीवित रहने और लड़ने की इच्छाशक्ति कैसे है। मैंने सामान्य दर्शकों से अपील करने की कोशिश की है, इसलिए आलोचना अन्तर्निहित है। पद्धति और स्थान का चुनाव मोटे तौर पर परिस्थितियों द्वारा निर्धारित हुआ। चूंकि मै जिसके बारे में लिख रही हूं के साथ मानवाधिकार उल्लंघन के खिलाफ प्रतिवादी के रूप में गहन रूप से सबंद्ध रही हूं – कुछ स्थानों तक पहुचना काफी कठिन था जैसे कि पुलिस और सुरक्षा बलों की दुनिया। हालांकि अन्य स्थान अंतरंग गहन अध्ययन के लिए उपलबध हो गये जैसे कि जनहित याचिका दायर करने की कानूनी प्रक्रिया और न्यायपालिका कैसे कार्य करती हैं।

जेजीः आपके अनुभव में, क्या समाजशास्त्रीय क्षेत्रीय अध्ययन जैसे आपने बस्तर में आयोजित किया, हमें सघर्ष की सामाजिक संरचना में अन्तदृष्टि प्राप्त करने में साधारणतया मदद कर सकते हैं? यदि हां तो क्या आप अपने कार्य के उन कुछ तत्वों के बारे में बता सकती हैं जिन्हें आप बस्तर के संदर्भ से परे सामाजिक संघर्ष को देखते हुए विशेष रूप से महत्वपूर्ण पाती हैं?

एनएसः बस्तर में जो हो रहा है और अन्य स्थानों पर, विशेष रूप से संसाधन समृद्ध क्षेत्रों में स्वदेशी लोगों के साथ जो हो रहा है के मध्य कई अनुनाद। लेटिन अमरीकी आंदोलनों और राज्य हिंसा पर साहित्य के साथ आंतक विरोधी गतिविधियों पर अध्ययन जिसमें ब्रिटिश द्वारा आपातकालीन कानून का उपयोग और मलाया, वियतनाम इत्यादि में सामाारिक हेमलेटिंग सम्मिलित हैं, से मैनें बहुत कुछ सीखा हैं।

इस तरह के विषय को देखने के कई तरीकें हो सकते हैं, और मैं कम से कम तीन वैकल्पिक पुस्तकें, जिन्हें मैं लिख सकती थी, के बारे में सोच सकती हूँ: अतिसतर्कता और सत्ता, राज्य द्वारा परोक्ष लेखकत्व के प्रश्न, और व्यक्तिगत अभियोज्यता, कानून के आस पास एवं उसकी क्षणिक उपस्थिति और वह जिस प्रकार राज्य को गढ़ती है, या गृह युद्ध के द्वन्द्वात्मक भावनाओं के आसपास। इसके अलावा, लेटिन अमरीकी सैन्य वामपंथ पर किये गये उत्कृष्ट समाजशास्त्रीय/मानवाशास्त्रीय कृत्य के विपरीत, हमारे पास माओवादी आंदोलन पर कोई ठोस अध्ययन नहीं है जो उदाहरणतः भूमि वितरण और स्थानीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था में उनके द्वारा लाये गये बदलावों का अध्ययन करता है। मुझे लगता है यह करने लायक है।

जेजीः उन स्थितियों में जहॉ लाकतांत्रिक सिद्धान्तों को चुनौती मिली है और बुनियादी मानवाधिकारों का उल्लघन हुआ हो, आप के अनुसार समाज विज्ञानों की और विशेष रूप से विषय के रूप में समाजशास्त्र की क्या जिम्मेदारी होनी चाहिए?

एनएसः हम सभी के पास कई जिम्मेदारियॉ हैं – नागरिक, समाजशास्त्री, शिक्षक के रूप में। कई बार हमें नागरिक की

>>

जिम्मेदारी ओढने का आह्वान होता है – प्रदर्शन में भाग लेना, याचिका पर हस्ताक्षर करना, अदालत में सबूत पेश करना या जो कुछ भी अन्य समय पर, हमारे विद्यार्थियों और सहकर्मियो के प्रति जिम्मेदारी आगे आ जाती है और शैक्षाणिक जीवन का अथक परिश्रम अन्य प्रकार की गतिविधियों को होने नहीं देता है। संकट के समय में सबसे दुष्कर बात यह है कि अनुसंधान करते रहना हमारी जिम्मेदारी है। कभी कभी समाजशास्त्रीय लेखन एक निजी प्रोजेक्ट की तरह लगता है जो लेखक के सिवाय किसी अन्य को लाभ नहीं पहुँचाता है, कभी कभी यह व्यर्थ महसूस होता है। विशेषतः जब अभूतपूर्व न हो लेकिन अंततः हमें दुनिया में वृद्विपरक ज्ञान में वृद्धि करने के लिए भुगतान प्राप्त होता है। शैक्षणिक अस्थिरता के इन दिनों में, यह आवश्यक है कि हम स्वयं की स्मरण कराये कि रोजगार में होना एक विशेषाधिकार है।

जेजीः आप को शैक्षणिक एवं साामाजिक कार्यकर्ता के रूप में माना जाता है। क्या आप इस विवरण से सहमत है? और आप भारत में शैक्षाणिक जगत और राजनीति के मध्य सामान्य सम्बन्ध का किस प्रकार वर्णन करेगीं और इसने आप के कार्य को कैसे प्रभावित किया है?

एनएसः मैं हमेशा से विभिन्न नागरिक स्वतन्त्रताओं और सांप्रदायिकता विरोधी प्लेटफार्मों में संलग्न रही हूँ चूंकि एक शोधकर्ता के रूप में गहन रूप से बस्तर से जुडी थी कि 2005 में मैं पूर्णकालिक मानवाधिकार सक्रियता में प्रेरित हुई। 2007 में जब हमने सतर्कतावाद और राज्य उत्पीडन के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में मुकदमा दायर किया, यद्यपि मैंने इसकी कल्पना नहीं की थी कि 2019 में भी हम न्यायालय में ही होंगे। 2011 में सतर्कता समिति के सदस्यों के राज्य समर्थन को निषेघ करना एवं सभी पीडितों के लिए मुआवजा प्रदान करने का एक बडा फैसला आया, लेकिन सरकार ने इसे लागू करने से मना कर दिया, अतः हम अभी न्याय के लिए संघर्ष कर रहे हैं। 2016 में छतीसगढ पुलिस ने हम छह लोगो के खिलाफ हत्या, हथियार रखने, दंगा फसाद इत्यादि के आरोपों के साथ भारत के मुख्य आंतक–विरोधी कानून, गैर–कानूनी गतिविधियाँ निवारण अधिनियम के अर्न्तगत प्रतिशोधी एवं झूठी शिकायत दायर की। सौभाग्य से हमें न्यायालय से राहत मिली और जेल नहीं गये लेकिन आरोप 2019 में ही हटाये गये।

समय के साथ, छतीसगढ में मेरी सक्रियता कम हो गई है क्योंकि अन्य लोग इस मुददे पर कार्य करने लगे हैं। निजी तौर पर मुझे एक अच्छा कार्यकर्ता और एक अच्छा शिक्षाविद बनना कठिन लगता है। ऐसा यदि और कुछ कारण नहीं तो कम से कम इसमें जो समय लगता है उसके कारण। एक स्तर पर कई भारतीय समाज वैज्ञानिक किसी तरह की सक्रियता से जुडे हुए है चूंकि हमारे आस पास की समस्याएं इतनी अधिक दिखाई देती है और गंभीर है। लेकिन कई ऐसे लोग भी हैं जो यह दावा करते हुए कि यह उन्हें वस्तुनिष्ठता और समुचित सैद्धान्तीकरण से विमुख करता है सक्रियता के बारे में अवमानी है। मोदी शासन के अन्तर्गत विश्वविद्यालय को एक अकादमिक स्थान के रूप में संरक्षित रखना एक चुनौती बन गया है क्योंकि सेमीनार एवं कार्यशालाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, आमंत्रित वक्ताओं को मना किया जा रहा है और पुस्तकों को – मेरी सहित, पाठ्यक्रम से राष्ट्र–विरोधी कह कर हटाया जा रहा है।

जेजीः चूंकि आपके कार्य ने पहले से ही काफी ध्यान आकर्षित किया है, निश्चित रूप से कई लोग भविष्य के बारे में आपके इरादों को लेकर उत्सुक होगें। क्या आप हमें आने वाले वर्षों के लिए एक सक्रिय कार्यकर्ता और विद्वान के रूप में आपकी योजना के बारे में थोडा बता सकती हैं?

एनएसः आंशिक रूप से यह भारत के राजनीतिक भविष्य और भावी शासनों के तहत विश्वविद्यालयों के साथ कैसा सलूक किया जायेगा पर निर्भर है। मेरें दिमाग में कई प्रोजेक्ट हैं जिसमें भारतीय संविधान के निर्माण का एवं राष्ट्रीय राजनीति में छात्र आंदोलनों का योगदान शामिल हैं लेकिन अभी मुझे पता नहीं है कि मैं किस पर अपना ध्यान केन्द्रित करूंगीं। मै अन्य महाद्वीप पर भी अनुसधान करना चाहूँगी लेकिन यह अभी पक्का नहीं है कि यह संभव है और कब होगा। इसमें से बहुत कुछ मेरे विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त करने पर निर्भर होगा, जो इन दिनों में अत्यन्त कठिन है। ■

सभी पत्राचार नंदिनी सुंदर को <nandinisundar@yahoo.com> पर प्रेषित करें।

समाजशास्त्रीय विकल्पों का एक संक्षिप्त इतिहास

मैट डॉसन, ग्लासगो विश्वविद्यालय, यूनाइटेड किंगडम द्वारा

समाज को सगंठित करने हुतु वैकल्पिक तरीकों के बारे में सोचना हमेशा से समाजशास्त्र का एक अभिन्न अंग रहा है।
फोटो : सी डंकन/फ्लिकर। कुछ अधिकार सुरक्षित।

"तो विकल्प क्या है?" मैं ही एकमात्र समाजशास्त्री नहीं हो सकता जिससे यह पूछा जाए कि समाजशास्त्र द्वारा साावधानी से कैटलाग की गई सामाजिक समस्याओं के लिए क्या विकल्प हैं। आंशिक रूप से यह सवाल और इसका उत्तर प्रदान करने में मेरी सामयिक अक्षमता ने मुझे वैकल्पिक समाजों के लिए सामाजिक सिद्धान्त लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जहॉ मैंने समाजशास्त्रियों द्वारा प्रस्तुत विकल्पों के संग्रह को रेखांकित करने का प्रयास किया है। ऐसा करने की प्रक्रिया ने मुझे सिखाया कि समाजशास्त्रीय विकल्पों का एक समृद्ध इतिहास है। जैसा अन्य लोगो ने इंगित किया है, एक विषय जो स्वयं को विवेचना और क्या है जैसे प्रश्नों पर आधारित करता है, जैसा समाजशास्त्र उत्तरोत्तर रूप से करता है, स्वतः ही क्या होना चाहिए के प्रश्नः विकल्पों के प्रश्न का सामना करता है। इस विचित्रता से जूझ रहे समाजशास्ियों के लिए, इन विकल्पों के इतिहास के बारे में जागरूकता लाभकारी होगी ।

जब हम इस इतिहास का अध्ययन करते हैं तो हम समालोचना एवं विकल्प के मध्य घनिष्ठ संबंध पाते हैं। कार्ल मार्क्स जिन्होंने प्रसिद्ध रूप से यह कहा कि वे भविष्य की पाकशालाओं के लिए विधि नहीं लिख रहे थे, ने भी पूंजीवाद की अपनी आलोचना को बढाने के तरीकों में साम्यवाद कैसा लग सकता है जैसे निजी सम्पति का उन्मूलन, श्रम के विभाजन में कमी, श्रम हमारी "सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता" इत्यादि जैसे विचारों को काम में लिया। यही बाद के मार्क्सवादी लेखकों मे पाया जाता है, चाहे वे स्वसंगठन एवं प्रबंधन के विकल्प परिचालन के तरीकों को उजागर करने के लिए काम में लेने वाले हेनरी लेफेब्रवे हों, 1960 और 1970 के दशक के "ग्रेट रेफ्यूजल" आंदोलनों द्वारा सुझाये मानवता के लिए "नई वस्तुनिष्ठता" पर प्रकाश डालने वाले हबर्ट मार्कस हों या घातक कारागार औद्योगिक परिसर के प्रत्युत्तर में कारागार उन्मुलन की एंजेला डेविस की वकालत हो। क्या हैं के स्थायित्व पर प्रश्न करने की आवश्यकता के रूप में विकल्पों को देखने की दृष्टि में ये मार्क्सवादी एकजुट थें।

>>

अन्य परिपेक्ष्यों के समाजशास्त्रियों ने विभिन्न संदर्भो में समालोचना एवं विकल्पों के अंतरग संबंधों पर इस मत को साझा किया। इमाइल दुर्खीम ने विरासत पर प्रतिबंध सहित कई विकल्प प्रस्तुत किये। व्यक्तिवादिता और योग्यता पर ध्यान केन्द्रित करने वाले उभरते आधुनिक फ्रांस में विरासत को असंगत के रूप में प्रस्तुत किया गया। ऐसा उन्होंने आर्थिक असमानता के समस्याग्रस्त स्वरूपों को बढा चढ़ा कर प्रस्तुत कर के किया और कहा कि इसलिए इसे प्रतिबंधित कर देना चाहिए। स्कॉटलैंड में, पेट्रिक गिडस ने औद्योगिक शहर की भीड़ भाड़ और अस्वास्थ्यकर स्थितियों को "परम्परागत सर्जरी" की प्रणाली जो शहरों के नागरिक स्थानों पर फोकस कर पुनः रचना पर ध्यान केन्द्रित करती है, के द्वारा दूर करने का प्रयास किया था। एडिनबर्ग का पुराना शहर अभी भी पेट्रिक गिड्स हेरिटज ट्रेल में उनके विचारों के प्रभाव को दर्शाता हे। इस बीच, अमरीका में, डबल्यू.इ.बी. डूबोइस ने नृजातीय असमानताओं की बदलती शासन व्यवस्था का भिन्न विकल्पों के साथ प्रत्युत्तर दिया।

वे एक आशावादी, विज्ञान एवं शिक्षा में उदार विश्वास करने वाले, जो "निग्रो एकेडिमिज़" की वकालत से व्यक्त होता है, से अश्वेत आर्थिक पृथक्करण के अतिवादी दावे की तरफ मुड गये। यह पूंजीवाद के आगे एक विकल्प की संभावना की तरफ इंगित करता है।

द साशियोलोजिकल इमेजिनेशन में सी. राइट मिल्स के इस दावे को देखते हुए कि समाजशास्त्र समाज को अधिक लोकतांत्रिक बनाने का प्रयास कर रहा है, लोकतंत्र को बढाने पर ध्यान केन्द्रित करने वाले विकल्पों को देखना काफी अप्रत्याशित हैं। शिकागों में जार्ज हर्बर्ट मीड लोकतंत्र में सभी लोगों की "प्रतिभा" को व्यक्त करने की कठिनाई पर प्रकाश डालते हैं जिसने राजनीति को व्यक्तित्व की लडाई में तब्दील कर दिया और इसके बजाय उन्हानें सामाजिक सुधार के कुलक सामाजिक बस्तियॉ, शहरी क्लब, अप्रवासी संरक्षण लीग, हडताल, मध्यस्थता मताधिकार अभियान, विशिष्ट शिक्षा की वकालात की जिसने यह सुनिश्चित किया कि सभी नागरिकों को लाकतांत्रिक तरीके से खुद को व्यक्त करने का मौका मिले। इस बीच लंदन में निर्वासित कार्ल मैनहीम ने लड़ाका लोकतंत्र की प्रणाली में कडाई से लागू किये केन्द्रीय लोकतांत्रिक मूल्यों के एक सेट और समाजशास्त्र में शिक्षित एक "नवीन शासक वर्ग" को रेखांकित किया।

नारीवादी समाजशास्त्र ने भी विकल्पों की खोज में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सेल्या जेम्स और मारिया रोसा डला कोस्ता ने मार्गरेट बेन्टसन जैसे पूर्व लेखकों को प्रत्युत्तर देते हुए पितृसता की असमानता को दूर करने के लिए गृह कार्य के समाजीकरण, गृह कार्य के लिए भुगतान की वकालत की । उन्हें उम्मीद थी कि इस के माध्यम से वे समाजवादी समाज के क्रांतिकारी संघर्ष में महिलाओं को एक केन्द्रीय हिस्सा बना पायेगीं। बाद में उन चिंताओं को जवाब देते हुए कि अश्लीलता ने "लैगिक संस्तरण" पैदा किया था और महिलाओं को पुरूषों की संतुष्टि के प्राथमिक स्त्रोत की धारणा को पुनरूत्पादित किया, एंड्रिया डवोरकिन एवं कैथिरीन मेककिनान ने अश्लीलता पर प्रतिबंध लगाने की माँग की । इस के प्रत्युत्तर में लीनी सेगल एवं शीला मैक ग्रेगोर जैसी नारीवादीयों ने बहस की कि अश्लीलता पर प्रतिबंध लगाने की मांग की बजाय हमें कामेच्छा के अधिक नारीवादी अभिव्यक्ति की तलाश करनी चाहिए।

ये और अन्य विकल्प जैसे एथोनी गिडिन्स का "थर्ड वे", उलरिख बेक की "अ युरोप ऑफ सिटिजन्स" या मूल आय पर बहस में योगदान देने वाले कई समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्र द्वारा सार्वजनिक हस्तक्षेपों की प्रकृति पर ध्यान देने की आवश्यकता पर जोर दिया है। जहॉ माइकल बुरावे की "सार्वजनिक समाजशास्त्र" की वकालत ने समाजशास्त्रियों को उनकी सार्वजनिक गतिविधियों की प्रकृति पर चिंतन करने के लिए प्रेरित किया है। इसे कई बार सार्वजनिक समाजशास्त्र के ऐतिहासिक उदाहरणों से हटा दिया गया है। हालांकि जब हम इस इतिहास को उस लेंस के माध्यम से देखते हैं कि समाजशास्त्रियों ने कैसे विकल्प पेश किये है, गिड्स का नगरीय पुननिर्माण, मीड का सामुदायिक संगठन, डेविस की कारावास विरोधी संक्रियता से लेकर मैनहीम के रेडियो व्याख्यान जैसे हमें वर्तमान के लिए समृद्ध उदाहरण मिलते हैं, ऐसा फोकस हमे समाजशास्त्रियों को अपने विकल्पों को रेखांकित करने में उपन्यासों की भूमिका के बारे में स्मरण कराता है। शायद यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बच्चों का सामूहिक लालन पालन और मानवता एवं प्रकृति के मध्य धारणीय सम्बन्ध पर जोर देने वाला शार्लेट पर्किन्स गिलमैन का नारीवादी आदर्श *हरलैंड* है।

रूथ लेविटास सुझाव देती हैं कि, चूंकि हम अपने इस मान्यता के साथ कि ये हटाये जा सकते हैं काफी प्रयास असमानता और शक्ति के स्वरूपों की आलोचना में लगा देते हैं। समाजशात्री अपने कार्य में "मूक यूटोपिया" रखते हैं। मुझे आशा है कि यह लघु लेख दर्शाता है कि अक्सर समाजशास्त्री उनके द्वारा पेश किये विकल्पों पर चुप नहीं रहे हैं। समाजशास्त्र में बहस और आलोचना से प्रेरणा लेने के लिए विकल्पों का एक समृद्ध इतिहास है। जब हम से पूछा जाता है" कि, विकल्प क्या है?, हमारे पास देने के लिऐ कई उत्तर हैं। ■

सभी पत्राचार मैट डॉसन को <Matt.Dawson@Glasgow.ac.uk> पर प्रेषित करें।

> निर्मित होता भविष्य

रेनर रिलिंग, मारबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी द्वारा

कौन और क्या हमारे भविष्य को आकार देता है?
फोटोः एस वस्तानो/फ्लिकर। कुछ अधिकार सुरक्षित।

रूपांतरण शब्द का छोटा लेकिन विविध इतिहास है। यह विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों के दैनिक से लेकर राजनैतिक–वैज्ञानिक विवरण तक विस्तृत है जिसमें राजनैतिक व्यवस्था परिवर्तन और उत्तर–उपनिवेशी व्यवस्था का उदार लोकतांत्रिक पूंजीवाद में विकास से वैश्वीकृत पूंजीवाद के भिन्न प्रकार, और अधिक व्यापक रूप से मानव प्रकृति सम्बन्ध के "महान रूपांतरण", राज्य–समाजवादी व्यवस्था का पूंजीवाद में परिवर्तन और उसके परे सम्मिलित हैं। जहॉ रूपांतरण वृत्तान्त अक्सर इस विवाद पर केन्द्रित होते हैं कि विभिन्न कर्ता "यहाँ" से "वहाँ" किसके साथ और कैसे पहुँच सकते है, इन वृत्तान्तों ने अक्सर काफी कुतूहल तरीके से "भविष्य की राजनीति" के कुछ पक्षों की उपेक्षा की है।

"भविष्य पहले से ही यहॉ है, अभी तक यह समान रूप से वितरित नहीं किया गया है।" साइबर स्पेस" शब्द का अविष्कार करने वाले विलियम गिब्सन ने एक चौथाई सदी पूर्व ऐसा कहा था। यद्यपि वे इस भविष्य के वर्तमान और भावी वितरण के बारे में चुप रहे जबकि यह प्रश्न कई सदियों पूर्व से ही अग्रभाग में था। बुर्जआ आधुनिकतावाद में समय के आधुनिक सम्बन्ध के उद्भव ने न सिर्फ पूर्व, वर्तमान और भविष्य के मध्य अब तक के वैध अन्तर में क्रांतिकारी परिवर्तन किया और भविष्य के अर्थ को निष्क्रिय से सक्रिय (भविष्य बनाया गया) में बदल दिया। बल्कि इसने समय के साथ लाभकारी एवं गणना को नई आर्थिक व्यवस्था के केन्द्र में स्थापित किया। अंततः अतीत पर ध्यान केन्द्रित करने वाले पूर्व–पूंजीवादी समाज भविष्य पर ध्यान केन्द्रित करने वाले पूंजी–संचित समाजों में बदल गये। तब से ही व्यापक रूप से "भविष्य के महाद्वीप" के स्थान को हडपने का उद्देश्य रखने वाले सामरिक प्रोजेक्ट अस्तित्व में रहे हैं।

बाजारों के सार्वभौमिकरण एवं पूंजीगत धन और उनके क्षेत्रीय के साथ साथ सामाजिक "डिसएमबेडिग" (कार्ल पोलान्यी) के द्वारा, जो अस्तित्व में आये वे वर्तमान भविष्य (निकलस लुहमन) जैसे सामरिक प्रारूप ये जो आज हमेशा एवं हर जगह मौजूद हैं। आज उदाहरण के लिए ये हैं वित्तीय उद्योग के प्रबल धन–शक्ति संकुल के भविष्य पर वैश्विक शर्त, प्रतिबंधक, हिंसक और सैन्य राज्य के "भावी उपकरणों" की सुरक्षा एवं विस्तार का वादा या भू–अभियांत्रिकी और जीवाश्म–पश्चात ईंधन "हरित पूंजीवाद" के परिवर्तनकारी युग्मन के माध्यम से परिस्थितिक संवहनीयता और आर्थिक लाभ। कुछ और से अधिक, तथाकथित उघोग 4.0, बिग डाटा, डिजीटल सोसाइटी, स्मार्ट स्पेसेस और डिजीटल प्रबलता द्वारा निर्मित तकनीकी सामाजिक नवाचार की जटिल व्यवस्था समकालीन पूंजीवाद के सूचना–उद्योग उत्पादक बलों के परिवर्तन रूपातंरण हेतु प्रोजेक्ट के वैश्विक समेकन के महान वादे को दर्शाती है।

>>

यह सुझाव देने के लिए और बहुत कुछ है कि यह एक बार पुनः उन्नीसंवी शताब्दी से उभरने वाली समय सम्बान्धित वैयक्तिक और सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवहार प्रतिमानों के साथ सामाजिक रीतियॉ जैसे एहतियात, रोकथाम, पूर्वक्रय अधिकार, तैयारी और अनुकूलन (लचीलापन) के बडे बंड़ल में क्रांतिकारी परिवर्तन होगा, जो भविष्य के लिए एक मजबूत और निरंतर प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

उसी समय में, ये बड़े प्रारूप भविष्य के लिए पूंजीवादी क्षमताओं के सार्वजनिक और निजी खण्ड हैं और इनसे संबधित भविष्य की अनिश्चितताओं में लाभ और शक्ति का मार्ग प्रशस्त करना अपेक्षित है। उनकी गतिकी मे न तो हिंसा की कमी है और न ही संकट की, निश्चित रूप से इसलिए चूंकि समकालीनता के अभाव के बावजूद, उन्होंने अपनो की समितियों के साथ शक्ति के साधनों को विकसित किया है और अतः वे एक असाधारण रूप से पारिवर्तनकारी और सांसारिक बल हैं।

इसी समय, इन प्रोजेक्ट में से प्रत्येक जो "भविष्य के महाद्वीप" के शोषण का उददेश्य रखता है, वैश्विक रूप से प्रभावी नई दृष्टि, यूटोपिया, मिथक और गहन एवं व्यापक अपेक्षाओं (जेन्स बेकर्ट) जो समकालीन पूंजीवाद की व्यवस्थागत व्यवहार्यता को आधार प्रदान करती है, का निर्माण करता है। ये प्रोजेक्ट" विवेक के जनक" (जार्ज बोलेनबेक) के रूप में कार्य करते हैं और दुनिया एवं उनके "वर्तमान भविष्य" की मार्गदर्शक व्याख्याओं में योगदान देते हैं।

जब हम भविष्य के बारे में निर्माण करते हैं, बताते हैं, गणना करते हैं, लिखते है, आशा करते है, योजना बनाते हैं या कल्पना करते हैं तो क्या होता है? परिणामस्वरूप भविष्य वर्तमान (वास्तविक, असली) बनते हैं, भविष्य का नामकरण व्याख्या और फ्रेम कर परिभाषित किया जाता है और ऐसा करने से, उन्हें वर्तमान में लाया जाता है ताकि वे "वर्तमान भविष्य" बन सके। दांव पर लगे सभी वायदे अपने संबधित वर्तमान में ला कर नाम दिया जाता है, समझे, और व्याख्या किये जाते है ताकि वे तात्कालिक निर्णय लेने के लिए तैयार बनें। यह पूरी प्रक्रिया उनके वास्तविक "भविष्य वर्तमान" और तात्कालिक "वर्तमान भविष्य" के मध्य अंतर को कम करने के प्रयास के साथ होती है चूंकि प्रत्येक "वर्तमान भविष्य" को यहॉ और अभी और फिर एवं वहॉं के मध्य रखा गया है। वर्तमान भविष्य मौजूद हैं लेकिन उसी समय अनुपस्थित भी हैं चूंकि वे अभी हुए नहीं हैं, अभी तक आये नहीं है और शायद कभी न हो जो कि ऐसे वर्तमान भविष्य को निर्णय, कार्यकलाप या गैर–कार्यों का पात्र बनाते हैं।

अतः यह उस बारे में है कि भविष्य वर्तमान के वर्तमान भविष्य में कौन समय–छाप (जीटाबड्रक) छोड़ता है। दूसरा, वर्तमान में भविष्य की तरफ केन्द्रित विचारों, मॉडल, कल्पनाओं, वृतान्तों और क्रियाओं के बारे में निर्णय लेना आवश्यक है जो निष्ठा, विश्वसनीयता, स्वीकृति, अनुमोदन और अतंतः सुरक्षा जो यह विशिष्ट भविष्य वर्तमान प्रस्तुत करता है को उत्पन्न करने के लिए काम में लिए जा सकते हैं। यह यद्यपि अनिश्चितकालीन है और पूर्वाभासी नही है लेकिन इसके घटित होने की अंततः सुरक्षा प्रदान करता है। यह "भविष्य राजनीति " की पंच लाइन है। यह अस्थिर पैरों पर खड़ी है लेकिन ये दिग्गजों के पैर हैं।

हालांकि वर्तमान भविष्य को विकसित करने का अर्थ उन्हें अन्य से दूर ले जाना भी है जैसा कि ब्रिटिश भविष्यवादी बारबरा एडम कहती हैः ''हम भविष्य को बनाते हैं और लेते है – जैसे कि शोषित, अत्यन्त निर्धन , बेघर, दस्तावेज बिना, जेल कैदी या शरणार्थी का भविष्य।'' यहॉं, कोई भी शक्तिशाली और प्राधान्य भविष्य–निर्माण करने वाला आदिरूप, उसका अनुसरण करने वालों के भविष्य वर्तमान को आकारित और क्षति पहुँचाता है। संकट, निर्धनता, विपत्ति और मित्तव्यत्ता उनके समय को आवश्यक में संकुचित कर देती है इस वर्तमान के संकट में जीवित रहना अतः यह भविष्य के आकर्षण, बेहतर जीवन और उसकी कल्पना के लिए कोई समय नहीं छोड़ती है। मित्तव्यत्तता निर्धन के भविष्य पर एक निर्बाध हमला है। भविष्य के इस क्षेत्र को बंद करने के लिए इस "सभावनाओं के गोदाम" (लुहमैन) और शक्ति से उन, सबको बाहर करना जो समकालीन उपसंरचनाओं के माध्यम से प्रभावी प्रोजेक्ट के विपरीत चल सकते हैं,यहॉ और अभी भी प्रभावी भावी राजनीति का एक चिह्न है।

हांलाकि यह पूजीवादी वायदे के महान सांस्कृतिक मॉडल और वृत्तान्तों की पहुँच नहीं है बल्कि उनकी आकारित करने की शक्ति और उनकी स्थिरता है जो पिछले 50 वर्षों में स्पष्ट रूप से मिटी है। पिछले एक दशक में, आर्थिक संकट का अनुभव, सामाजिक–लोकतांत्रिक–उदारवादी व्यवस्था का तीव्र ध्वंस और दक्षिण पंथ की हिंसक राजनीति के उभार ने इस अस्थिरता को तीव्र किया है। बाजार नहीं बल्कि कसूरवार कुलीन के बारे में राष्ट्रवादी और फासीवादी वृत्तान्त पुनर्जीवित और अद्भुत किये जा रहे हैं। 2008 के बाद से वितीयकरण और आर्थिक संकट ने लाखों कल्पित भविष्य ने वर्तमान का अवमूलयन एंव नाश किया। सहस्त्राब्दी के मोड़ के बाद से भविष्य के नवीन प्रमुख सांस्कृतिक मार्गों, जिन्हें पुनः सक्रिय किया या जिन अनुभवों एवं संभावनाओं को संघटित किया गया, वे अधिकाधिक अर्थव्यवस्था में मेगा–ट्रेंड के टूटने और व्यवधानों पर दक्षिणपंथी प्रतिगामी संस्कृति का लागू करने के लिए भरोसा करते हैं। अतः अतीत के राजनैतिक विरोधी–वृत्तान्त अधिक वजनदार बनते है और स्वयं को संस्थागत और आर्थिक रूप से स्थिर करते है।

जो लोग आज के पूंजीवाद की आलोचना करना, उसमें सुधार करना या मौलिक रूप से बदलना चाहते है उन्हें जाहिर तौर पर इस तथ्य का सामना करना पडता है कि इतिहास में पहली बार पूंजीवाद भविष्य का समाज जो सभांवित, स्वीकार्य और मुमकिन भविष्य पर कार्य करता है– जिसका वर्तमान यंत्र, निश्चित रूप से, अतीत की राजनीति के वृतान्तों का व्यापक आह्ववान है। ■

सभी पत्राचार रेनर रिलिंग को <rillingr@mailer.uni-marburg.de > पर प्रेषित करें।

> ब्यून विविर

कई स्वर

मेतियों मार्तिनेज अबारका, यूनिवर्सिदाद नेसियानल याॅटोनोमा दे मेक्सिको, मेक्सिको एवं सेन्टर फॉर सोशल स्टडीज, कोइम्ब्रा विश्वविद्यालय पूर्तगाल द्वारा

अर्बु द्वारा चित्रण

हाल के वर्षों में लेटिन अमरीका, विशेष रूप से एंडियन क्षेत्र में–ब्यून विविर के विचार से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण बहस पनपी है। पहले 1990 के दशक में देशज संघर्षों की गर्मी के दौरान विकसित किये गये प्रस्ताव के रूप में, फिर वामपंथी बौद्धिक एवं शैक्षणिक हलकों में गहन विमर्श के भाग के रूप में, और अंत में, इक्वेडोर जैसे देशों में 2008 में नये राष्ट्रीय संविधान के निर्माण में एक निर्णायक सम्बोध (और इस प्रकार बाद में सार्वजनिक नीति में अनुवादित) के रूप में, ब्यून विविर एक शक्तिशाली विचार है जो काफी कम समय में लंबी दूरी तय कर चुका है, लेकिन आखिरकार ब्यून विविर है क्या? क्या इसे एक वैकल्पिक समाज के निर्माण हेतु सिर्फ लेटिन अमरीका में नही, अपितु विश्व भर में व्यवहारिक प्राासंगिकता वाले एक प्रस्ताव के रूप में समझना चाहिए? ब्यून विविर को परिभाषित करने के कई तरीके हैं, जो काफी हद तक इसके स्थापना के स्थान पर निर्भर होते हैं। ठीक इस अर्थ में यह एक ऐसा विचार है जो इसके आह्वान करने वाले की आवाजों के स्वर और शक्ति दोनों के अनुसार रूप ले लेता है। इसलिए ब्यून विविर का सभी स्वदेशी लोगों, या सभी स्वदेशी महिलाओं, पारिस्थितिक कार्यकताओं, बुद्धिजीवियों गैर सरकारी संगठनों या फिर इक्वाडोर की सरकार भी, के लिए समान अर्थ नहीं है। ब्यून विविर जिसका स्पेनिश से अंग्रेजी भाषा में शाब्दिक अनुवाद "अच्छा जीवन" होगा, अतंतः एक समृद्ध लेकिन एक ऐसी रहस्यमयी अवधारणा जो अभी निर्माणाधीन की तरफ इशारा करती है जिसे आसानी से स्थिर नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह निरंतर निर्मित, पुनर्निमित, नेगोशियेट और रिनेगोशियेट होती रहती है।

उदाहरण के लिए, स्वदेशी लोगों के लिए ब्यून विविर को किसी विशिष्ट दर्शन में गहन कदम और यथार्थ के निरूपण के बिना समझना कठिन है। इक्वाडोर में किक्वा लोग सुमक कावसे की अवधारणा को व्यून विविर के समानार्थक के रूप में प्रयोग करते हैं। सुमक कावसे को पचमामा (पृथ्वी के रूप में अनुवादित) में निहित

>>

एक आदर्श विचार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें मनुष्य और प्रकृति के मध्य सभी सामाजिक सम्बन्ध समुदाय में पूरकता, पारस्परिकता, एकजुटता और समानता के सिद्धान्तों के आधार पर बने होते है। किचवा बोलने वालों के लिए, सुमक कावसे को ललकी कावसे या "बुरा जीवन", समुदाय की अनुपस्थिति, जीवन का दुर्भाग्यपूर्ण चरित्र के विपरीत समझा जा सकता है। बोलिविया के अयमार लोगों में समरूप फिर भी भिन्न सुमा कमाना सम्बोध है। पराग्वे के गुआरानी लोग इसे नान्द्रेको कहते हैं जबकि चिली और अर्जन्टीना के मापुचेस इसे कुमे मोंगेन कहते हैं और इसी तरह ...। बुद्धिजीवियों और विद्वानों के लिए, विशेष रूप से लेटिन अमरीकी वामपंथ में, ब्यून विविर विकास, वृद्धि और निष्कर्षण की समस्याओं के साथ एक मजबूत संबंध रखता है। जीवन के पूंजीवादी संगठन के तहत, आर्थिक वृद्धि मानव उत्पादक गतिविधियों और प्रकृति स्वयं के ("गैर–उत्पादक" मानव और प्राकृतिक प्रक्रियाओं को भी ध्यान में रखते हुए) वस्तुकरण पर आधारित है। अतः ब्यून विविर बाजार समाज के मूल्यांकन के तरीकों का अतिवादी प्रतिवाद हैः यह विनिमय मूल्य से अधिक उपयोग मूल्य की पुष्टि है जैसा उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के भौतिक सिद्धातकार इस भेद को फ्रेम कर सकते हैं। इस अर्थ में, ब्यून विविर का अर्थ न केवल विकास–पश्चात सामाजिक तर्क पर कार्य करने का प्रयास है बल्कि एक पूर्ण रूप से भिन्न पूंजीवादी–पश्चात आर्थिक तार्किकता का निर्माण करना है।

हर हालत में, ब्यून विविर को आधुनिकता के एक आलोचक के रूप में समझना चाहिए जो भिन्न, गैर पश्चिमी ज्ञान मीमांसा पर आधारित हैं। इनमें वे जो आम तौर पर औपनिवेशिक, वैश्विक शक्ति के यूरोकेन्द्रित पैटर्न के संकट के मध्य मार्क्सवाद के रूप में सम्मिलित हैं। अपने सैद्धान्तिक विकास के क्रम में, ब्यून विविर विवेचनात्मक सिद्धान्त, उत्तर–औपनिवेशिक सिद्धान्त, नारीवादी, सांस्कृतिक, नस्ल एवं लैंगिक अध्ययन और राजनीतिक पारिस्थितिकी से बहुल अंतदृष्टि प्राप्त करता है। लेकिन इसकी ऐतिहासिक प्रासंगिकता मुख्य रूप से संकीर्ण, प्रायः सामाजिक आंदोलनों के कठोर जीवन अनुभव, विशेष रूप से स्वदेशी आंदोलनों के अनुभव से प्राप्त होती है जिन्होंने अपने संघर्षों को मार्ग दिखाने वाले आदर्शों के एक कुलक के रूप में अपने चिंतन और प्रतिबद्धताओं के अनुवाद का प्रेरित किया है। उसी पैमाने पर, ब्यून विविर लगातार वस्तुकरण से बचता है। अन्य आदर्शवादी प्रस्तावों की सैद्धान्तिक निष्क्रियता के प्रतिकूल इस अवधारणा की तरलता इसके महत्वपूर्ण लाभों में से एक है।

कई अवसरों पर समुदायों ने ब्यून विविर के विचार से नये अत्यधिक व्यावहारिक अवधारणाओं को गढा जिन्होने उनकें संघर्षों के दौरान विशिष्ट चुनौतियों को संबोधित किया। इसका एक उदाहरण इक्वाडोर के अमेजॅन बेसिन के निवासी सरायाकू के स्वदेशी लोगो द्वारा विवेचित "कवासक सचा" या "जीवित वन" की धारणा होगी। यह प्रस्ताव उनके क्षेत्र में हुए तेल के शोषण के खतरे के प्रत्युत्तर के रूप में पैदा हुआ और इसका एक प्रमुख लक्ष्य 2000 के दशक के प्रारम्भ से निष्कर्षी मॉडलों के आरोपण के विकल्प के रूप में समुदाय की "जीवन परियोजना" को पोषित करना था। कुछ वर्ष वाद, सरायाकु एंव सम्बद्ध अभिकरणों ने 2015 में सीओपी 21 पेरिस जलवायु शिखर सम्मेलन में और इसके पश्चात 2016 में हवाई में आई.यू.सी.एन. विश्व संरक्षण कांग्रेस में कवासाक सचा पहल को प्रस्तुत किया।

ब्यून विविर ने केवल "पैतृक विश्वदृष्टियों" को पुनः अभिनीत नहीं किया है यद्यपि, यह स्वदेशी लोगों की ऐतिहासिक स्मृति से कई पारंपरिक तत्वों का बचाता और पुनर्जीवित करता है। अपितु यह अवधारणा विचारों और प्रथाओं के एक उन्नत निर्माण का पालन करती है जो एक ऐसे यथार्थ के लय के साथ सतत अनुकूलन करता है जिसमें श्रम और प्रकृति का निरंतर शोषण तटस्थ रहता हैं। यह वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण के शिक्षाविदों और कार्यकर्ताओं की गलती है कि वे ब्यून विविर की नई सदी अध्यात्मिकता की नवीनतम सुगंध के रूप में कल्पना करते है, जहॉ स्वदेशी लोगों एवं उनके सहयोगियों के समूह पूर्णिमा की रोशनी मे ड्रम बजाने के लिए एकत्रित होते है जबकि उनके आस–पास दुनिया ढह रही है।

ब्यून विविर को गुलाबी–आभा वाले तार्किक–व्यावहारिक लेंस के माध्यम से देखना अनजाने में प्रस्ताव के गैर–राजनीतिकरण को बढ़ावा देगा जो अपने विशुद्ध रूप में एक आंतरिक और गहन राजनैतिक चुनौती है।

इन जैसी व्याख्यात्मक त्रुटियॉ और कुछ सरकारें द्वारा इसके सिद्धान्तों का केवल राज्य तर्क के लिए गैर–राजनैतिक चयन ने ब्यून विविर को एक कटटरपंथी परिवर्तनकारी प्रस्ताव के रूप में बदनाम किया है। ऐसा इक्वाडोर में हुआ प्रतीत होता है, जहॉ ब्यून विविर 2008 से राष्ट्रीय संविधान का एक हिस्सा हे। अपनी परिवर्तनकारी क्षमता के बीज के बावजूद दक्षिण अमरिका में तथा कथित "गुलाबी ज्वार" के साथ संरेखित ब्यून विविर की अधीनता ने इक्वाडोर के समाज के लिए इसकी संभावना को अफसरशाही ढंग से खत्म कर दिया। ऐसा शासन के गहन निष्कर्षी एजेंडे में डूबने, अधिनायकवादी प्रथाओं और भ्रष्टाचार के घोटालों की एक श्रृखला के कारण हुआ। और तथापि, इस चतुर राजनैतिक–विरोधी प्रयोग ने भी आवश्यक आत्म–समालोचना, नवीनीकरण और सीखने की एक प्रक्रिया को इस प्रोजेक्ट के साथ लगातार तादाम्य स्थापित करने वाले और विश्वास करने वाले बहुल अधीनस्थ क्षेत्रों के मध्य प्रेरित किया है। और अंत में यह इन स्वरों का आधिक्य होगा जो उनके संघर्षों में दार्शनिक और राजनैतिक यंत्र के रूप में ब्यून विविर के भविष्य के बारे में अंतिम शब्द बोलेगें। ■

सभी पत्राचार मेतियो मार्टिनेज अबारका को <abortocronico@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> अरबी दुनिया का दूसरा भविष्य

अब्देलकाडर लात्रे, समाजशास्त्री और जनसांख्यिकी विज्ञानी, कतर/अल्जीरिया द्वारा

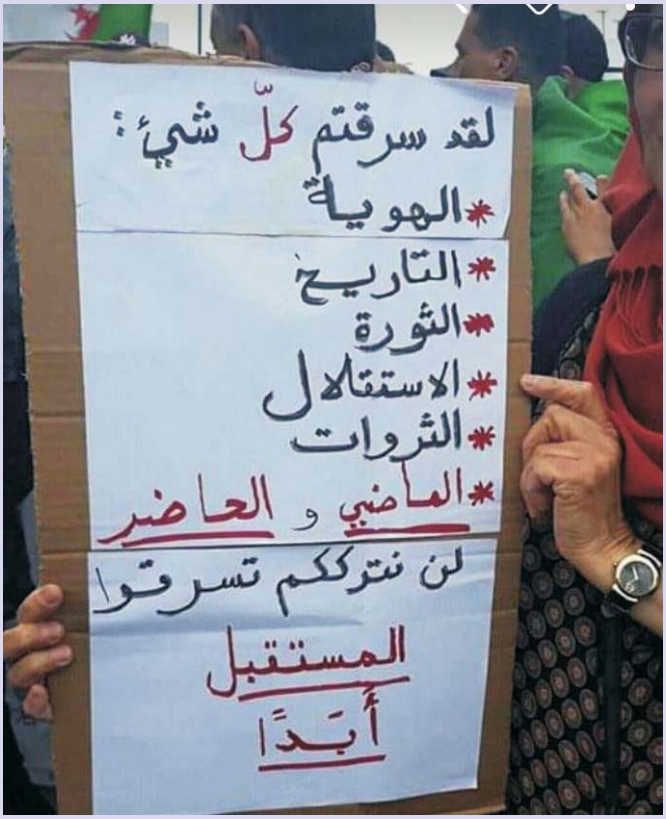

अल्जीरिया में एक प्रदर्शन में एक तख्ती पर लिखा था: "तुमने सब कुछ चुरा लिया है: हमारी पहचान, हमारा इतिहास, हमारी क्रांति, हमारी स्वतन्त्रा, हमारे संसाधन, हमारा अतीत और वर्तमान। लेकिन तुम हमारे भविष्य को नहीं चुरा पाओगे।" फोटो: अब्देलकादर लात्रे

अरब देशों या अरब दुनिया के भविष्य का पूर्वानुमान, पूर्वेक्षण या उसे आकारित करना एक चुनौतीपूर्ण और कठिन काम है। चुनौतीपूर्ण इसलिए क्योंकि यह भविष्य के बारे में अति मोहित उन देशों के साथ कार्य करता है जो अतीत के वैभव और वर्तमान के दुखों के मध्य विभाजित हैं। ये वे समाज हैं जो पारंपरिक (कादिम) और आधुनिक (जदीद) के मध्य अनन्त बहस और एक बेहतर कल की तलाश में फूटन और निरंतरता के बीच स्थाई द्वन्द्व में हैं जिसमें "अरब राष्ट्र" के मिथक के नवीकरण की अनन्त खोज सम्मिलित हैं। कठिन इसलिए क्योंकि अरब देश उन्नीसवीं शताब्दी के बाद से परिवर्तन के दौर में रहे हैं: उपनिवेशीकरण के बाद राष्ट्र–राज्य का निर्माण हुआ; उसके बाद नवीनीकरण (ताजदीद) की खोज और विभाजन एवं संघर्षों के कारण होने वाले विभिन्न प्रकार के संकट/उत्थान के लिए संघर्ष को आगे बढाते हुए पारंपरिकवाद के खिलाफ विद्रोह करता है और टूटन पैदा करता है। यही वजह है कि अरब देश हमेशा कमजोर दिखाई देते हैं और सब कुछ पुनः करना चाहते हैं; आजादी के लिए उनकी क्रांतियों में, यूरोप में उन्नीसवी सदी के समान, वर्तमान हमेशा इतिहास का विरोधी होता है जिसके चिन्हों को नष्ट करना चाहिए। इसके विपरीत, भविष्य नवीनीकरण, टूटन और आधुनिकतावाद के समान है जैसा उन्नीसवीं सदी के अरब पुनर्जागरण आंदोलन, जिसने अरब समाज की निश्चलता को अस्वीकार किया और एक नई आधुनिक राजनैतिक स्पेस के उभार को प्रोत्साहित किया, में देखा गया।

अरब देशों की स्वतन्त्रता के पूर्व और पश्चात अरब लोगों; "अरब राष्ट्रों या अरब देशों के भविष्य का विचार हमेशा ही अरबी चिन्तन, राजनैतिक आंदोलनों एवं पार्टियों में मौजूद रहा है। यह विचार जिसे अरब देशों के समकालीन इतिहास, विशेष रूप से पुनर्जागरण (नाहड़ा) वि–उपनिवेशीकरण, दशकों से आधुनिकीकरण और नये राष्ट्र–राज्यों के निर्माण के आंदोलन अरब एकता और/या समान अरब कार्यवाही से अनन्य रूप से जुड़ा है। अरब स्वप्न से सम्बान्धित सामाजिक और लोकप्रिय प्रयास अभी भी विभिन्न साहित्यिक, कलात्मक, खेल और अन्य क्षेत्रों में चल रहे हैं। स्पष्ट रूप से अरब लोगों के भविष्य का विचार पीढियों और समय दोनों से आगे जाता है। लेकिन यह विशेष रूप से अरब आबादी की भावी जनसांख्यिकीय वृद्धि के साथ अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया हैं।

> दूसरा भविष्य/अन्य भविष्य

अपनी आजादी के बाद से, अरब देशों ने नये राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक संस्थाओं, कानूनी एवं विधायी ढाँचे और विविध राष्ट्रीय एवं श्रेत्रीय विकास की नीतियों को तैयार और अपना कर राज्य के प्रबंधन को आधुनिक बनाने की रजामंदी दिखाई। इन राष्ट्रीय और क्षेत्रीय प्रयासों ने भारी मात्रा में राष्ट्रीय संसाधनों के संघटन को अनिवार्य किया है और ये हमेशा से ही धन के प्राथमिक स्त्रोत – तेल या गैस, पर्यटन, या कृषि पर निर्भर रहें हैं। प्राथमिक क्षेत्र में संकट – जैसे तेल और गैस को कीमतों में उतार–चढाव – एक बड़े घाटे को उत्पन्न करता है और सार्वजनिक निवेश को रोकता है और इस तरह यह आर्थिक के साथ सामाजिक सकंट भी उत्पन्न करता है। अरब अर्थव्यवस्थाओं की विलक्षणता और एक क्षेत्र पर उनकी पूर्ण निर्भरता कायम नहीं रह सकती है; अरब देशों को अपनी अर्थव्यवस्था को भिन्न तरीके से प्रबंधित करना होगा और अपने संसाधनों, विशेष रूप से तेल और गैस, के उपयोग के तरीकों को बदलना होगा। इस प्रमुख परिवर्तन, या "फूटन" को तेल और गैस के परे जानी वाली अर्थव्यवस्था के वास्तविक विविधीकरण जो उत्पादक कार्य के मूल्य को बढ़ाता है और समावेशी तरीके से स्थानीय उत्पादक पहलों को

>>

प्रोत्साहित एवं समर्थन करता है, की आवश्यकता है। इसके लिए लिंग, आयु, धर्म, प्रजातीयता, और अन्य के मध्य आर्थिक, सामाजिक, प्रादेशिक और जनजातीय संबद्धता के आधार पर सभी अपवर्जी रीतियों के उन्मूलन की आवश्यकता है। अरब देशों की भावी स्थिरता के लिए उनकी राजनैतिक व्यवस्था में सुधार और आधुनिकीकरण की आवश्यकता है ताकि आबादी के सभी घटको की भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सकें और बीसवीं सदी में अरब राजनैतिक परिदृश्य पर हावी जीवन पर्यन्त के लिए एक नेता (president à vie) की धारणा के साथ नाता तोड सकें। दूसरी संस्थागत टूटन का संबंध राष्ट्रीय राजनैतिक संस्थान की दक्षता में सुधार और क्षेत्रीय अरबी संस्थाओं को आधुनिकीकरण और व्यवसायीकरण से था; इनको सशक्त करने की और राजनीति से स्वायत्त बनाने की आवश्यकता है।

अरब लोगों के "अन्य" भविष्य में अर्थव्यवस्था, राजनीति, और समाज में भाग लेने वाले" नये नागरिकों" के निर्माण हेतु स्थानीय (वैयक्तिक या सामूहिक) पहलों के तीव्रीकरण और वर्धन पर आधारित नई रणनीतियों को अपना कर सभी अभिवृतियों का टूटन या भंजन सम्मिलित है। इस भागीदारी के लिए विभिन्न स्वतंत्र/मुक्त और स्वायत्त सामाजिक एवं पेशेवर सघों के निर्माण से नागरिक समाज के संगठन के साथ साथ उघमी, पेशेवर (वकील, इंजीनियर, शिक्षक), विद्यार्थी, युवा, महिलाएँ और सामाजिक संस्थाओं जैसे विभिन्न समूहों के लोगों की समाज के सामान्य विकास से निरतर सहभागिता की आवश्यकता होती है। इसमें राष्ट्रीय नीतियों के विकास पर आम बहस की आवश्यकता है। इसका मतलब राज्य की दक्षताओं में कमी नहीं है बल्कि शासन के समावेशी स्वरूप की रचना करने हेतु गैर–सरकारी भागीदारों का बढता जुड़ाव है जो शासित एवं शासन के मध्य सम्बन्धों को मजबूत करेगा।

व्यवहार और सोच दोनों में फूटन में शासन के प्रकार और तरीकों पर और लोकलुभावनवाद के सभी स्वरूपों से बचते हुए अरब देशों में महिलाओं की प्रस्थिति पर एक जिम्मेदार और साहसी चर्चा सम्मिलित है। इसी तरह, राज्य के अर्न्तगत इसकी केन्द्रीयता की पुष्टि करने हेतु समाज में इस्लाम के स्थान पर शांति से चर्चा करनी होगी।

21वीं सदी के अंत तक अरब देशों का भविष्य विशेष तौर पर संस्थागत और व्यवहारिक टूटन या भंजन पर निर्भर नहीं होगाः यह इस बात पर भी निर्भर होगा कि अरब लोग विश्व में राष्ट्र और एक क्षेत्र दोनों के रूप में अपने स्थान, भूमिका और प्रकार्य को कैसे देखते हैं। क्या वे हमेशा तेल और गैस के उत्पादक और विभिन्न उपयोगी और गैर–उपयोगी उपभोक्ता उत्पादों के आयातकर्त्ता बने रहेगें? क्या अरब क्षेत्र हमेशा संघर्षों और युद्ध का क्षेत्र बना रहेगा जो अधिकाधिक शरणार्थी और बहिष्कृत लोगों का पैदा कर रहा है? या क्या अरब देश बिना संघर्ष और विस्थापित लोगों के और मजबूत सामाजिक सुरक्षा एवं एक कार्य करने वाली शिक्षण एवं स्वस्थ्य प्रणाली के साथ एक स्थिर क्षेत्र बनेंगे? उद्योग, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी और विज्ञान के मामले में नई अरब पीढियॉ क्या सृजित करेंगी? उनका योगदान क्या होगा?

विभिन्न संस्थागत और व्यवहारिक टूटन एंव भंजन की अन्तर्क्रिया को दुनिया में अरब देशों की नई भूमिका और स्थान के उद्भव और विस्तार के साथ साथ होना चाहिए। इसके लिए विशिष्ट संस्थाओं या कानून की इतनी आवश्यकता नहीं है जितनी अन्य अरब दुनिया की संभावना में विश्वास की है। यह जैसा भविष्य अरब लोग चाहते है पर एक नई आंतरिक चर्चा का प्रांरभिक बिंदु हो सकता है। यह भविष्य कामचलाऊ राजनीतिक सुधारों, पुनरेकीकरण या एकता तक सीमित नहीं होगा बल्कि यह अरब देशों के व्यावहारिक, मौलिक और समान हितों पर स्थिरता के संधारण, संघर्ष, और समृद्धि, सुरक्षा, अंतर–क्षेत्रीय आदान–प्रदान और सहयोग के संकल्प पर आधारित एक क्षेत्रीय दृष्टि के विस्तार का लक्ष्य रखेगा।

21वीं सदी के अंत में अरब लोगों के भविष्य को भावी पीढियों द्वारा एक नये अरब दुनिया की नींव को उत्तराधिकार प्राप्त करने के लिए अरब लोगों के भविष्य को बनाना और नियोजित करना होगा। इस नींव को आंतरिक रूप से प्रारम्भ और डिजाइन करना होगा न कि इसे आयातित या कृत्रिम रूप से डिजाइन करना। यह पूर्व की सभी उपलब्धियों के साथ टूटन या भंजन नहीं होगा; पिछली शताब्दियों में अरब देशों ने भारी बदलाव को अनुभव किया है और घटनाओं पर प्रतिक्रिया दी है, और इन्हें भविष्य के निर्माण हेतु नींव के रूप में काम में लेना चाहिए। अतीत और वर्तमान के समान गलतियों, कुण्ठा और पराजय की पुनरावृति विशेष रूप से निकट और सुदूर भविष्य में आंतरिक और बाहय चुनौतियों के बहुलीकरण से बचने हेतु भविष्य को अब प्राथमिकता के रूप में मानना होगा।

न केवल अरब लोगों बल्कि उनके पड़ोसी और मित्रों द्वारा भी चाही एक नये समृद्ध अरब दुनिया के उद्भव की तटस्थ परिस्थितियॉ विविध है। जहॉ टूटन या भजंन आवश्यक है, उन्हें संवाद और आदान–प्रदान के माध्यम से होना चाहिए न कि हिंसा और अपवर्जन से। यह अरब लोगों की वर्तमान और भावी पीढियों दोनों के लिए सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है। इस कारण से अरब लोगों का भविष्य आज सभी अरब लोगों के लिए प्राथमिक चिंता होनी चाहिए न कि सिर्फ एक देश या एक क्षेत्र की चिंता। ■

सभी पत्राचार अब्देलकाडर लात्रे को <ablatre@yahoo.fr> पर प्रेषित करें।

> कलंक कैसे नीतियों को बाधित करता है:

दक्षिण अफ्रीका में कचरा बीनने वाले

टेरेसा पैरेज, केपटाउन विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका द्वारा

दक्षिण अफ्रिकी कचरा बीनने वालों का संघ/कॉपीराइट : एस.ए.डब्ल्यु.पी.ए.

पिछले महीने, मैंने केपटाउन में सात साल रहने के बाद ब्रिटेन वापिस जाने के लिये अपने सामान की आखिरी पैकिंग पूरी कर ली। जो कुछ भी मुझे नहीं चाहिये था, वो सामान घर के बाहर रख दिया गया और वह एक घंटे के अंदर चला गया। कचरा बीनने वालों ने मेरे सामान को एकत्रित किया, छांटा और बेच दिया। यह मेरे लिये यह कचरा कम करने का, और साथ ही लोंगों के लिये आय पैदा करने में सहायता करने का एक तेज और सुविधाजनक तरीका था। दूसरों के लिये, मैं बेघर लोगों को पडोस में आकर्षित और प्रोत्साहित करके गैर–जिम्मेदार बना रहा था, जो निःसंदेह शराब और गैरकानूनी पदार्थों पर पैसा खर्च करते हैं। कुछ सप्ताहों बाद पास के घरों में चोरी के बाद पडोस के निगरानी समूह शायद ही आश्चर्य व्यक्त करेगें: ये तथाकथित कचरा बीनने वाले अपराधियों की आंखे और कान होते हैं।

इस तरह की ध्रुवीकरण वाली अभिवृत्तियों को इस तरीके से समझाया जा सकता है कि कचरा बीनने वालों के द्वारा झेले जाने वाले कलंक से उबरने के लिये नीतियां बनना अभी बाकी है। नकारात्मक रूढिग्रस्तता कचरा बीनने के एक "ग्रीन जॉब" बनने या कचरा बीनने वालों के एक पुनर्चक्रण उद्योग के कर्मचारी बनने की संभावना को प्रभावित करती है। "कचरा बीनने वाला" का एक नकारात्मक अर्थ है, जो दूसरे शब्दों जैसे "पुर्नविक्रेता" को उपयोग करने की मांग की ओर ले जाता है। मेरे द्वारा "कचरा बीनने वाला" शब्द का उपयोग *द दक्षिण अफ्रीकन वेस्ट पिकरर्स एसोसियेशन* (एस.ए.डबल्यू.पी.ए.) और *द ग्लोबल एलांयस ऑफ वेस्ट पिकर्स* की भाषा को प्रतिध्वनित करता है, जो बेहतर कार्य करने की परिस्थितियों की वकालत करते हैं। उनके प्रयासों के बावजूद, किन्हीं भी परिस्थितियों (यदि कोई हो) पर आम सहमति नहीं हैं जिसके तहत कचरा बीनने वालों की सहायता की जानी चाहिये।

> नीति और छवि

कचरा बीनने के बारे में अस्पष्ता, विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न नीतिगत पैमानों में ली गयी स्थितियों की विविधता के द्वारा और गहरी हो जाती है। वैश्विक स्तर पर, कचरा बीनना अंतराष्ट्रीय श्रम संगठन के "सभ्य काम" के एजेंडा के अंतर्गत आता है। कचरा बीनने वालों को संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण

>>

माना गया है। इसका अर्थ है कि कचरा बीनने वाले वैश्विक दक्षिण की ग्रीन अर्थव्यवस्था में संभावित श्रमिक हैं। वैश्विक उत्तर में उनके समकक्षों के विपरीत, कभी कभी फ्रीगन्स और डंपस्टर चालकों की तरह जाने जाने वाले, कचरा बीनने वालों को पर्यावरणीय आंदोलनों के साथ संरेखित नहीं किया गया है। कचरा बीनने वालों को शायद ही कभी सक्रिय चयन करने वाले लोगों की तरह देखा गया है और इसके बजाय इन्हें हताशा से जोडा गया है। एक ओर, सरकारें कचरा कम करने के लिये अधिक श्रम–प्रधान प्रक्रियाओं को चुन सकती है जो कचरा बीनने वालों को रोजगार दे सके, परंतु वे गरीबी के उच्च स्तरों की ओर इंगित करती हैं। दूसरी ओर, वे तकनीकी समाधानों को लागू कर सकती हैं जो "कचरे–से–ऊर्जा" जैसे आधुनिक यूरोपीय तरीकों का अनुकरण करते हैं, परंतु ये कम नौकरियां पैदा करते हैं और इनके वर्तमान में काम कर रहे कचरा बीनने वालों के द्वारा भरे जाने की संभावना कम है।

2017 में केपटाउन अफ्रीका के पहले बडे पैमाने के कचरे–से–ऊर्जा संयंत्र का घर बन गया। बिजली की कमी और यह लेख लिखने के समय तक नियमित कटौतियों की वापसी के संदर्भ में, यूटिलिटी प्रदाता (एस्कॉम) को राष्ट्रीयकरण के लिये कोई विकल्प को बेचना आसान है। संयंत्र के शुभांरभ के समय एक अतिरिक्त लाभ यह था कि कर्मचारियों को (लगभग 80) कचरों के ढेरों से कचरा उठाने वालों की तरह से कचरा नहीं उठाना पडेगा। वास्तव में, अन्य स्थानीय सरकारों के विपरीत, जिन्होंने कचरा बीनने वालों को सहकारी समितियां बनाने में मदद की, केपटाउन में लैंडफिल साइटों से कचरा उठाना गैरकानूनी है। दक्षिण अफ्रीका में यह भिन्नता संभव है क्योंकि, यद्यपि राष्ट्रीय कानून (द वेस्ट एक्ट) निर्धारित करता है कि स्थानीय सरकारों के पास एक अपशिष्ट प्रबंधन योजना होनी चाहिये, शून्य–कचरा हासिल करने के साधन पूरी तरह से स्थानीय नीति–निर्माताओं के निर्णय पर है। "वर्ल्ड सिटीज" बनने का प्रयास कर रहे शहरी क्षेत्रों में, विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिये एक आधुनिक छवि का होना महत्वपूर्ण है। फीफा वर्ल्ड कप की मेजबानी जैसे उच्च कोटि के आयोजनों की तैयारी के लिये गलियों के कचरा बीनने वालों को केन्द्रिय व्यवसायिक क्षेत्रों से हटा दिया जाता है। गली के स्तर पर पुनः सुधार की मांग को स्थानीय अधिकारियों के द्वारा स्वैच्छिक की तरह देखा जाता है, परंतु अधिकतर हतोत्साहित किया जाता है। यह कुछ हद तक निवासियों की शिकायतों के कारण होता है, विशेषतः ऐतिहासिक रूप से "श्वेत" उपनगरों में, जहां निवासी गंदगी को अपराध से जोडते हैं।

> निवासियों के अनुभव

ग्रीन जॉब्स के विस्तार में जनता की भागीदारी शामिल है। सडक से संग्रह योजनाओं की सफलता निवासियों के द्वारा उनके कचरे के पृथक्करण और पूर्व कचरा बीनने वालों के द्वारा उनके घरों के कचरे तक पहुंच और छंटनी करने में खुश होने पर निर्भर करती है। फिलहाल, कचरा बीनने वाले अपने आप को संभावित श्रमिक के रूप में पेश करने के लिये और सार्वजनिक सेवा के रूप मे वे क्या करते है के लिये संघर्ष करते हैं। उन लोगों के चारों ओर संदेह का वातावरण है कि ये लोग, जो कचरादानों से छंटनी करते हैं, कौन है और उनकी वजह क्या है। सिर्फ दिखने के आधार पर, कचरा बीनने वाले निराश्रित आवारा से अलग नहीं है। अक्सर "बर्जीस" की तरह नामित लोग, जिन्होंने उनके मित्रों और रिश्तेदारों से संबंध बिगाड लिया है, संबंध जिन पर "सामान्य" लोग जरूरत के समय में भरोसा करने में सक्षम होतें हैं, उनके लिए यह माना जाता है कि कचरापात्र से छंटनी करना अंतिम उपाय है। कचरा बीनने वालों की शारीरिक दिखावट इस भावना से भी जुड सकती है कि वे भरोसे के योग्य नहीं है। कई कचरा बीनने वालों के जेल टैटू, घावों के निशान, और अन्य शारीरिक निशान हैं जो बदनाम निशानों की तरह प्रस्तुत होते हैं। यह उनके लिये अपने को ऐसे लोगों के रूप में प्रस्तुत करना कठिन बना देते हैं जिन्हाने नौकरी करके स्वंय को अपराध से सफलतापूर्वक बाहर निकल लिया हैं। इसके बजाय, कचरा बीनने वाले कुछ हद तक पहुंच से बाहर दिखायी पडते हैं। अतंक्रिया की कमी का अर्थ है कि निवासी कचरा बीनने वालों को समझने के लिये जानकारी के अन्य स्त्रोंतों पर भरोसा करते हैं।

संपन्न उपनगरों में, निजी सुरक्षा फर्मे कचरा बीनने वालों को देने के खिलाफ सलाह देकर पूर्वाग्रहों और भेदभाव को बढाती हैं; यह उस डर की भावना को पोषित करता है जिन पर उनका व्यवसाय निर्भर करता है। इसी तरह, पडोस के निगरानी समूह वे लोग जो अपनी आजीविका कमाने की कोशिश कर रहें हैं और वे जो उनके घर में जबरदस्ती घुसने वाले हैं, के बीच में अंतर करने में असमर्थ हैं। निवासियों ने पार्षदों के साथ मिलकर सडकों पर गश्त बनायी हैं जो "जाति", आयु, और लिंग के अनुसार प्रोफाइलिंग करते है, और जो भी सुरक्षा के लिये खतरा लगे उसे हटाने का कार्य करते हैं। निवासियों के व्हाटसएप समूह पर अश्वेत व्यक्ति के लिये बीएम को एक कोड के रूप में इस्तेमाल किया जाता हैं, ताकि वे पडोस में दिखायी देने वाले अवांछनीय प्रकार के व्यक्तियों पर नजर रख सकें। गली से कचरा बीनने वालों को गली और घरों के कचरे तक पहुंचने के लिये लगातार बातचीत और पुनःबातचीत करनी पडती है। जैसा कि यह सही है, कचरा बीनने वालों को आम जनता के द्वारा संभावित सेवा क्षेत्र के श्रमिकों के रूप में देखे जाने की संभावना नहीं है। दक्षिण अफ्रीका के सरकारी सहायता वाले कुछ हिस्सों में और हिमायती समूहों के कार्य के अलावा, कचरा बीनने वाले हाशिये पर बने हुये हैं। इसलिये, कचरा बीनने वालों को समूह बनाने और कर्मचारी बनाने में मदद करने वाली नीतियां, जैसा कि दक्षिण अमेरिका के भागों में देखा जाता है, उन लोगों तक नहीं पहुंचती है जो उपद्रवी के रूप में कलंकित हैं।

वैश्विक और स्थानीय स्तर पर असंगत नीतियों की वजह से उत्तेजित दक्षिण अफ्रीका में कचरा बीनने वालों के लिये कलंक एक बाधा है। व्याप्त पूर्वाग्रह, अनियमित (गैर–यूरोपिय) श्रमिकों के लिये ऐतिहासिक तिरस्कारों से भरे व्याप्त पूर्वाग्रह, उन्हें हरित अर्थव्यवस्था में भागीदारी के लिये आवश्यक समर्थन के स्तर को प्राप्त करने से रोकते हैं। कचरा बीनने वालों की आवारा की तरह व्याख्या की जाती है, जो शराब और गैरकानूनी पदार्थों पर निर्भर हैं, तार्किक सोच में अक्षम हैं, और संपन्न उपनगरों की सुरक्षा के लिये खतरा हैं। कचरा बीनने को पिछडे, गंदे और कचरा कम करने के एक अकुशल तरीके के रूप में देखा जाता है। यह नकारात्मकता उन नीतियों के प्रकाश में और अधिक बनी रहती हैं जो कचरा बीनने वालों और कचरा बीनने को विकासशील देश बनने के संकेतों के रूप में जोडती हैं। अतः, पर्यटन और व्यवसायों को आकर्षित करने के लिये सचेत शहरों में, पुनर्चक्रण के मशीनीकृत स्वरूपों के श्रम–प्रधान समकक्षों की तुलना में अधिक लोकप्रिय बने रहने की संभावना है। ■

सभी पत्राचार टेरेसा पैरेज को <tpz031@googlemail.com> पर प्रेषित करें।

> जलवायु परिवर्तन के साथ अनुकूलन: जिम्बाब्वे के लघु किसान धारक

क्रिस्टोफर मबेजा, जिम्बाब्वे मुक्त विश्वविद्यालय, जिम्बाब्वे द्वारा

वैश्विक जलवायु बदल रही है, यह तर्कसंगत संदेह के परे है। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को दुनिया भर में असंगत रूप से महसूस किया जा रहा है। विकासशील देशों के लोग इसके मुख्य समाधात का सामना कर रहे हैं। जिम्बाब्वे इसमें अपवाद नहीं है। जिम्बाब्वे के पूरे ग्रामीण परिदृश्य पर जलवायु परिवर्तन की छाप है। वर्षा की बढती परिवर्तनशीलता ने कहर ढाया है। लघु किसान एक सूखे से दूसरे सूखे के मध्य झूलते है ओर उनकी आजीविका अधिकाधिक अनिश्चित होती जा रही है। जलवायु परिवर्तन संकट के अग्रभाग से चर्चाएँ लघु धारक किसानों की भूमिका की अनदेखी करती हैं। इस अस्तित्वगत खतरे के मददेनजर, लघु किसानों ने जलवायु परिवर्तन के प्रति अदभुत अनुकूलन रणनीतियों का संयोजन किया है। दुखद रूप से, उनके नवाचार अक्सर बाराती होते हैं और शायद ही कभी नीति निर्माण में दूल्हे का रूप लेते हैं। ऐसा उन दृष्टिकोणों के सौजन्य से होता है जो ग्रामीण समुदायों को जलवायु परिवर्तन के साथ अनुकुलन करने में मदद करने वाले स्थानीय नवाचारों की महत्वपूर्ण भूमिका पर नाक चढ़ाते हैं। प्रौद्योगिकी हस्तातरण जलवायु परिवर्तन अनुकुलन को नीति कैसे देखती है, को प्रभावित करती प्रतीत होती है। फिर भी, यह आलेख बहस करता है कि लघु किसान रणनीतियाँ ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण हैं।

अनवरत प्रयोग ग्रामीण जिम्बाब्वे के लघु किसानों की पहलों के केन्द्र में है। इस तरह की पहल अपनी दृढता के बारे में शांत रूप से सारगर्भित हैं। नवाचार कई गतिरोधों का पीछा करते हैं। ये रणनीतियाँ लघु किसानों की भंगुर आजीविका के लिए सिल्वर बुलेट समाधान का गठन नहीं करती हैं। वे सिल्वर बकशॉट समाधान है। सिल्वर बकशॉट समाधान जलवायु परिवर्तन के साथ अनुकूलन हेतु आंशिक समाधानों का समूह या श्रंखला समूह हैं। इसका अर्थ है कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को सम्बोधित करने के लिए कोई एक समाधान नहीं है बल्कि कई समाधान एकजुट हो कर काम कर रहे हैं।

जिम्बाब्वे के शोना अनादि काल से जलवायु परिवर्तनशीलता के साथ अनुकुलन कर रहे हैं। वे देश के सबसे बड़े जातीय समूह हैं। वे स्वयं को आलसीपन के लिए शून्य सहिष्णुता वाले परिश्रमी श्रमिक के रूप में गर्व करते है। वे मुख्यतः अपनी भूमि को इसलिए जोतते हैं कि उनके पास भोजन हो। उनकी आजीविका वर्षा–आधारित कृषि पर निर्भर रहती है। इन किसानों के मध्य वे व्यक्ति हैं जो बदलते जलवायु पर्यावरण खेती करने और उसके साथ अनुकूलन करने में दक्ष हो गये हैं। इन निपुण किसानों को स्थानीय रूप से हुरूदजा के रूप जाना जाता है। कुछ मामलों में, इन उत्पादक किसानों को मटम्बानेवहु (जो मिट्टी के साथ "खेलता" है) के रूप में जाना जाता है। वे अथक रूप से प्रयोग करने वाले हैं। उनके अधिकांश नवाचार जल संरक्षण पर आधारित हैं।

वर्षा की बढ़ती हुई परिवर्तनशीलता से अनुकूलता स्थापित करने के लिए जल संचयन अधिकाधिक एक व्यवहार्य विकल्प बन रहा है। यह एक व्यवहार्य विकल्प इसलिए है कि इन सीमांत इलाको में वर्षा तेजी से आती और तेजी से जाती हैं। ग्रामीण जिम्बाब्वे में, जल संचयनकर्ता के रूप में विश्व–विख्यात किसान, दिवगत जैफानैहफिरी ने अपने जल संचयन कौशल के लिए नेशनल ज्योग्राफिक से पुरूस्कार जीता। उसने अपने घर के पास एक चट्टान से गिरने वाले जल का संचयन किया। वह कहते है "मै जल और मिट्टी का मेल कराता हूँ ताकि वे फरार नहीं हो और बहे नहीं बल्कि मेरी जमीन पर परिवार बसाएँ"। इसका अर्थ है कि उनके नवाचार मिट्टी अपक्षरण को रोकेगें। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि उन्होंने अधिकांश जल को अपनी फसल की सिंचाई के लिए काम में लिया। अधिकांश लघु किसान बहने वाले जल को एकत्र करते हैं और उन्हें अपने घरों में बनाये छोटे बाँधो में डालते है (चित्र 1 देखें)। वे विपणि खेती के लिए पानी का उपयोग करते है। अन्य जो स्वयं को "कटाव के हत्यारे" कहते हैं नाली के चारों तरफ एक दीवार का निर्माण करते है जिससे एक छोटा बॉध बनता है जिसे विपणि खेती के लिए काम में लिया जाता है (देखें चित्र 2)। ऐसा करके, वे नाली के कटाव पर अकुंश लगाते हैं।

1. एक लघु किसान के भूखण्ड पर एक छोटा सा बॉध। पानी का उपयोग पार्श्व में उसकी टमाटर की फसल में पानी पिलाने के लिए किया जाता है।

>>

2. यह लघु बांध "क्षरण हत्या" का एक परिणाम है।

जिम्बाब्वे के कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ गैर–सरकारी संस्थाओं संगठनों ने जलवायु परिवर्तन के साथ अनुकूलन करने में मदद के लिए संरक्षण कृषि (सीए) प्रारम्भ की है। सीए न्यून मिट्टी गडबड़ी और जल संचयन पर आधारित है। अधिकांश किसान जो सीए को अमल में लेते है, घास को मल्चिंग के लिए काम में लेते है (देखे चित्र 3)। कुछ नवोन्मेषी सीए किसान वर्षा गेज बनाने के लिए पुराने टिन को काम में लेते हैं (चित्र 4 देखें)। वे इन बनाई हुई वर्षा गेज से वर्षा की रिकार्डिंग करते हैं।

ग्रामीण जिम्बाब्वे में बढती जलवायु परिवर्तनशीलता ने एक "नीली क्रांति" जैसी अनहोनी घटना पैदा की है। नीली क्रांति मछली पालन

3. इन किसानों द्वारा घास का उपयोग माल्चिंग के लिये किया जाता है।

4. शुरूगवी में एक किसान एक खाली टिन से कामचलाउ वर्षा गेज बना कर संरक्षण कृषि (सीए) का अभ्यास कर रहा है।

है। मछली पालन पशुधन उत्पादन से इस अर्थ में अधिक लाभदायक है कि यह ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम करता है। यह ध्यान देने योग्य है कि मछली पालन जिम्बाब्वे के कुछ हिस्सों में एक प्रमुख गतिविधि बन रहा है। लघु किसान अपने घरों में मछली के लिए तालाब का निर्माण करते है (चित्र 5 देखें)।

अन्य किसान मुक्त–श्रेणी की मुर्गियाँ या जिसे मै "बिना सीमा वाली मुर्गियॉ" कहना पसंद करता हूँ, पाल रहे है। बिना सीमा की मुर्गीयों की खेती कई लघु किसानों की एक लोकप्रिय अनुकूलन हस्तक्षेप बन गई है। इन किसानों ने महसूस किया है कि विपत्ति में अवसर है। यह उस समझ पर आधारित है कि परिवर्तन के लिए एक मात्र प्रतिक्रिया उसमें अवसर तलाशना है। कुछ किसान बिना सीमा की 2000 से भी अधिक मुर्गियाँ पाल रहे है। वे अपनी मुर्गियॉ पड़ोसी शहरों में और विशेष कर राजधानी हरारे में बेचते है जहॉ आरगेनिक रूप से पाली मुर्गियों की अत्यधिक माँग हैं। अतः व्यापार अच्छा है और किसानों को अपनी मुर्गियों की संख्या में वृद्धि की उम्मीद हैं।

5. एक लघु किसान का मछली पालने का कुण्ड़

6. मोपानी कीड़े (अमाकिम्बी)

उद्यमी किसान अपनी आजीविका के विकल्पों में विविधता ला रहे हैं। वे गैर–टिम्बर वन उत्पाद जैसे मोपेन कीड़े, जिन्हें स्थानीय रूप से अमाकिम्बी (चित्र 6 देखें) कहा जाता है की खेती करते है। अमाकिम्बी एक स्वादिष्ट भोजन है और इसका एक सुगम विपणन योग्य बाजार है। इससे प्राप्त आय को भोजन खरीदने और स्कूल जाने वाले बच्चों की फीस का भुगतान करने हेतु काम में लिया जाता है।

लघु किसान जलवायु परिवर्तन अनुकूलन विमर्श में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वे अपने पर्यावरण को नीति विशेषज्ञों से बेहतर समझते हैं। वे ज्ञान के प्रमुख भंडार है जिसे जलवायु परिवर्तन के साथ समुदायों के अनुकूलन के लिए काम में लेना चाहिए। यह नीति निर्माताओं पर निर्भर करता है कि वे इन लघु किसानों के नवोन्मेषी सिल्वर बकशॉटस को काम में ले। ■

सभी चित्र : क्रिस्टोफर मबेजा

सभी पत्राचार क्रिस्टोफर मबेजा को <cmmabezah@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> एरिक ओलिन राइट
एक वास्तविक यूटोपियन[1]

माइकल बुरावे, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले द्वारा

"वास्तविक यूटोपियास" की अपनी अवधारणा के बारे में बोलते हुए एरिक ओलिन राइट।
रोजा–लक्समबर्ग–स्टिफ्टंग/फ्लिकर। कुछ अधिकार सुरक्षित।

यह कहाँ से शुरू हुआ ? यह कहना काफी कठिन है। एरिक स्वंय यूटोपिया में अपनी रूचि को 1971 से ट्रेस करना पसंद करते हैं जब वो भर्ती से बचते हुए, बर्कले के यूनीटेरियन–यूनिवर्सलिस्ट सेमिनरी में विद्यार्थी थे। तब उन्होंने "यूटोपिया और क्रांति" शीर्षक की एक छात्र–सेमिनार का अमरीकी समाज के क्रांतिकारी परिवर्तन की संभावनाओं पर चर्चा करने के लिये आयोजन किया। फिर उन्होंने जेल सुधार को समर्पित एक सक्रिय सगंठन से जुडते हुए एक छात्र पादरी के रूप में सैन क्वेंटिन सरकारी कारागार में कार्य किया।

इसने उन्हें सत्तर के दशक के शुरूआती दिनों में बर्कले में एक स्नातक विद्यार्थी बनने के लिए अच्छी से तैयार किया और वे उन दिनों के बौद्धिक प्रोजेक्टः समाजशास्त्र को मार्क्सवादी विषय के रूप में पुनःगढ़ने, में एक प्रमुख व्यक्ति बन गये। अतः एरिक के शोध ग्रन्थ ने मुख्य धाराई समाजशास्त्र को वैचारिक आधार पर नहीं बल्कि वैज्ञानिक आधार पर चुनौती दी। उन्होंने दिखाया कि वर्ग की पुनःनिर्मित परिभाषा स्तरीकरण के मौजूदा मॉडल और मानव पूंजी सिद्धान्त की तुलना में आय विषमताओं को बेहतर ढंग से समझा सकती हैं। जिस समय वे समाजशास्त्र को चुनौती दे रहे थे उसी समय मार्क्सवाद को पुनः गढ़ भी रहे थे। मध्यम वर्ग लंबे समय से मार्क्सवाद की राह में काँटा था – इसे खत्म होना था लेकिन यह और भी बड़ा हो गया। लुका पेरोन के साथ, एरिक ने "विरोधाभासी वर्ग लोकेशन" की अवधारणा को प्रयुक्त करके समस्या को सुलझा लिया। तीन ऐसी विरोधाभासी वर्ग लोकेशन थीं : छोटे बुर्जुआ और वृहद–स्तर पूंजी के मध्य लघु नियोक्ता, पूंजी और मजदूरी श्रम के मध्य निरीक्षक और प्रबंधक, एंव मजदूरी श्रम और छोटे बुर्जुआ के मध्य अर्थ–स्वायत्त कर्मचारी।

1976 में विसकोंसिन–मेडिसन विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर का पद लेने के बाद, एरिक ने वर्ग विश्लेषण का एक शोध प्रोग्राम विकसित करना प्रारम्भ किया। चूंकि मौजूदा सर्वेक्षण उनकी नई श्रेणियों को मेप करने के लिये डिजाइन नहीं किये गयें थे, उन्होंने अपना स्वयं का राष्ट्रीय सर्वेक्षण प्रारम्भ किया जो उनकी वर्ग श्रेणियों को मापने में समक्ष था। मार्क्सवादी प्रधानता के इस काल

>>

में, उनके विचार फैले और शीघ्र ही उन्होंने एक दर्जन देशों में, समांनातर सर्वेक्षण प्रारम्भ करने के लिये दल तैयार किये।

यदि उनका कोई एक गुण है जो उनके बौद्धिक कार्य में गुँघता है और वास्तव में उनके जीवन में, वह है चीजों को ठीक करने का दढ़ संकल्प। इसने न केवल सैद्धान्तिक विस्तार और अनुभवजन्य शोध के मध्य घनिष्ठ संवाद को विकसित किया, बल्कि उनकी विश्लेषणात्मक योजनाओं के आंतरिक तर्क को भी गहरा किया। आप उनकी सोच के उद्विकास को उनकी पुस्तकों के माध्यम से ट्रेस कर सकते हैं। *वर्ग, सकंट एवं राज्य* (1978) से प्रारम्भ कर तुरंत बाद उनके शोध प्रबंध, *वर्ग सरंचना एवं आय निर्धारण* (1979) और फिर जॉन रोमर की वर्गों में शोषण (1985) की धारणा को अपनाने से आने वाला गहरा खिसकाव और *द डिबेट ऑन क्लासेस* (1989) में अपने आलोचकों को प्रत्युत्तर इसका उदाहरण हैं।

1981 में एरिक मेधावी समाज वैज्ञानिकों एवं दार्शनिकों के एक समूह में सम्मिलित हो गये, जिनमे से वे दार्शनिक जी.ए. कोहेन एंव फिलिप वॉन पारिज और अर्थशास्त्री जॉन रोमर से सबसे अधिक प्रभावित थे। उन्होंने "विश्लेषणात्मक मार्क्सवाद" जो आम तौर पर "नो बुलशिट मार्क्सवाद" के रूप में जाना जाता था को प्रारम्भ किया और एक दूसरे के कार्य की बिना किसी संकोच के जिरह कर मार्क्सवाद की नींव को स्पष्ट किया।

यघपि प्रारम्भ से ही मार्क्सवाद को यूटोपियन सोच से परहेज था, 1989 के बाद राजनैतिक अटकलबाजी ने इसका ही आह्वान किया। एरिक ने यह चुनौती स्वीकारी। नये रूढ़िवाद के जोश का सीधा मुकाबला करते हुये उन्होंने समाजवादी एजेंण्डे को आगे बढ़ाया। ऐसा उन्होंने पूंजीवाद के विकल्पों को सुझा कर लेकिन पूंजीवादी समाज के अन्तर्गत केन्द्रक की खोज कर के किया।

नया प्रोजेक्ट 1991 में, जिस वर्ष सोवियत संघ का पतन हुआ, प्रारम्भ हुआ। एरिक ने "वास्तविक यूटोपिया" – कोई काल्पनिक आदर्श दुनिया नही बल्कि वास्तविक विकल्प जो मौजूदा समाजों के अर्न्तगत पाये जा सकते हैं – पर चर्चा करने के लिए संगोष्ठियों की एक श्रंखला का शुभारम्भ किया। संगोंष्ठियों के विषयों में साहचर्य लोकतंत्र, बाजार समाजवाद, सहभागी लोकतंत्र, सार्वभौम आय अनुदान और लैंगिक समानता सम्मिलित थे। संगोष्ठी में आये पत्रों को एरिक ने एकत्रित कर एक पुस्तक श्रंखला में प्रकाशित किया जिसका स्वयं के मेग्नस ओपस, एनविजनिंग रियल यूटोपियाज के साथ समापन हुआ।

एरिक समाजशास्त्र को अपने संस्थापकों – मार्क्स, दुर्खीम और वेबर – जो आज के पेशेवरों की तुलना में नैतिक मूल्यों पर अपने सैद्धान्तिक संरचना के निर्माण के बारे में कम नकचढे थे – को लौटा रहे थे। एरिक समाजशास्त्र के प्रोजेक्ट को उन मूल्यों को साकार करने की संस्थागत सभांवनाओं को समझने के रूप में परिभाषित करने में स्पष्ट थे।

अपने जीवन के अंतिम वर्षो में एरिक ने जाना कि ये वास्तविक यूटोपिया कार्यकर्ताओं को बहुत पंसद थे। उन्होंने अपना अधिक समय दुनिया भर में घूमते हुए अपने प्रोजेक्टों में उनके वैचारिक–बौद्धिक फेमवर्क को प्रयोग में लेने में रूचि रखने वाले समूहों से बात करते हुए बिताया। इस प्रकार उन्होने एनविजनिंग रियल यूटोपियाज को एक सुलभ रूप में प्रस्तुत करने, अकादमिक गपशप के हल्ले को दूर करने, पूंजीवाद विरोधी एक पुस्तिका जिसे उन्होने सटीक रूप में 21वीं सदी में पूंजीवाद विरोधी कैसे बने शीर्षक दिया, को तैयार करने का कार्य किया।

नागरिक समाज के मोर्चे वाले लोग इस सकरात्मक संदेश को सुनने के लिये उत्साहित थे। यहाँ एक ऐसा बुद्धिजीवी था जो उनके बड़े पैमाने पर अदृश्य श्रम को श्रद्धांजलि दे कर, किसी भी कीमत पर, अपमान और बदले के सहते हुए, पूंजीवाद का मुकाबला कर रहा था।

एरिक हमारे पास सोचने का तरीका और होने का तरीका दोनो छोड़ गये हैं। मुझे स्पष्ट कहने दीजिये। मैं और किसी को नहीं जानता हूँ जो एरिक से अधिक सहजता से सोचता हो, ऐसा कोई नहीं जो प्रभावी रूप से किसी मुददे में, कागज, पुस्तक में क्या दाँव पर है को काट सकता है। हम उनके जैसे नहीं हो सकते हैं लेकिन हम उनके काम से प्रेरित हो सकते हैं, उनके पदचिन्हों पर चल सकते हैं, उनके द्वारा प्रदत्त मानचित्र से मार्गदर्शित हो उसे परिष्कृत करते हुए आगे बढ़ सकते हैं। ■

1. यह जनवरी 2019 में जैकोबिन में प्रकाशित आलेख का संक्षिप्त संस्करण है। मूल आलेख यहाँ पाया जा सकता है।

> एरिक ओलिन की स्मृति में

मिशेल विलियम्स, विट्सवाटरसैंड विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका द्वारा

मैं उन लोगों में से एक हूँ जो एरिक ओलिन राइट की गणना अपने गुरू, सहयोगी, मित्र एवं सहयात्री के रूप में कर सकते हैं। कई श्रद्धाजंलियों ने उनके विशाल बौद्धिक योगदान, महान निर्देशन एवं मार्गदर्शन, पूंजीवाद के आगे जाने वाले मार्ग तलाशने की उनकी प्रतिबद्धता और संलग्नता और मार्क्सवाद में उनके योगदान पर ध्यान केन्द्रित किया है। जहाँ मुझे भी एरिक के इन पहलुओं का अनुभव हुआ है, मैं मानवतावादी एरिक, उनके विचित्र जुनून, संक्रामक कल्पना एवं मानव के सृजनात्मक पक्ष के लिए जुनून पर फोकस करना चाहूँगी।

मैं एरिक से पहली बार 1990 के दशक के उत्तरार्ध में उनके घनिष्ठ मित्र माइकल बुरावे, मेरे पर्यवेक्षक (मै बर्कले में स्नातक विद्यालय में था) के पास उनकी एक वार्षिक यात्रा के दौरान मिली। हमारी पहली बातचीतों में से एक के दौरान एरिक ने मुझसे कहा, "तुम जानती हो, मै तुम्हारा अंकल हूँ।" जिसका मैनें उत्तर दिया "सच्ची? मैं समझ नहीं पा रही हूँ।" उन्होने फिर मुझे समझाया कि माइकल मेरे शैक्षणिक पिता थे और उनके भाई थे, इस प्रकार वे मेरे अंकल हुए। मैनें तुरन्त महसूस किया कि यह उनकी दुनिया में मुझे शामिल करने का एक तरीका था। मुझे बाद में अहसास हुआ कि यह किस प्रकार दूसरों को गर्मजोशी से अपनी दुनिया में अंगीकार करने को गहनता से साझा करता है। वे अपने विशाल नेटर्वक में, अक्सर काल्पनिक रिश्तेदारी के माध्यम से, लोगों को सम्मिलित करने के तरीके ढूँढ़ लेते थे। प्रारम्भ से ही, एरिक की मामा की भुमिका हमारे सभी कार्यों में संलग्न रही – चाहे वे सिद्धान्त निमार्ण और अवधारणा निर्माण के मध्य अन्तर और कठिनाई के बारे में बता रहे हों या दक्षिणी अफ्रीका और केरल में कम्यूनिस्ट पार्टी के लोकतांत्रिक आवेगों के बारे में हमारी लंबी चर्चा हो, या कोई पहल पूंजीवाद विरोधी कैसे बनती है पर बहस हो, या हमारी पसंदीदा कथेतर साहित्य और उपन्यासों को साझा करना हो, या नाटक देखना (उन्हें दक्षिणी अफ्रीकी राजनैतिक नाटक पंसद थे), या व्यजंन विधि पर चर्चा करना और उनकी प्रसिद्ध चिकन कोक ऑ विन को एक शाकाहारी व्यंजन (जिसे उन्होनें काकलेस कोक ऑ विन कहा – जिसके बारे मुझे संशय था जब तक मैनें इसे चखा नहीं था) में बदलना। एरिक हमेशा लगन और खुशी से काम में लगे रहे। बर्कले की उनकी वार्षिक यात्राएँ माइकल के छात्रों के लिए उल्लास के क्षण थे क्योंकि एरिक हमेशा शानदार खाना पकाते थे और हमें माइकल के फ्लैट पर आंमत्रित करते थे (शेष वर्ष के दौरान हमें माइकल के फ्लैट पर अपनी बैठकों में भोजन लाना होता था क्योंकि माइकल खाना बनाना नहीं जानते हैं)। एरिक के साथ संबन्ध पूंजीवाद विरोधी विकल्पों को ढूढँने की हमारी समान प्रतिबद्धता के कारण अधिक गहराया, विशेष रूप से सहकारी समितियों और एकजुट अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में, जिसकी हमने अपने अपने साथी विश्वास सतगर के साथ जाँच की थी। जहाँ हम ठोस विकल्पों के माध्यम से सोचने के महत्व पर सहमत थे, हम उनकी विस्तृत सूचना पर हमेशा सहमत नहीं होते थे – मैं संस्कृति के विचारों, अर्थ–निमार्ण के महत्व और यथार्थ के प्रवण अस्तव्यवस्तता का परिचय दे कर उनके उग्र विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से अक्सर असहमत रहती थी। एरिक ने कभी भी हताशा या नाराजगी नहीं दिखाई बल्कि उन्हें विचारों के अनुसरण से प्रेम दिखाई देता था और वे मुझे यह आभास दिलाने में कामयाब रहे कि वे असहमत नहीं थे लेकिन सहमत भी नहीं थे। वे उदार भी थे – मैं कम से कम दो ऐसे अवसरों के बारे में जानती हूँ जहाँ उन्होनें रोहिंटन मिस्त्री और जेक्स म्दा जैसे लेखकों को उनके राजनैतिक उपन्यास के लिए धन्यवाद दिया। जब उन्होनें जोहान्सबर्ग की अपनी यात्रा के दौरान म्दा का नाटक द डांइग स्क्रीम्स ऑफ द मून को देखा, वे आँसू बहाने के करीब थे और उन्होनें कहा कि यह अब तक उनका देखा सबसे अच्छा नाटक था।

यद्यपि मैं एरिक से बर्कले में मिली, हमारी पहली मुलाकात के बाद पिछले बीस वर्षों में, हमारी अधिकांश मित्रता दूर के स्थानों की यात्राः केरल, बार्सिलोना, गॉटेबर्ग, ब्यूनस आयर्स, पडुआ और उन्होनें दक्षिण अफ्रीका की तीन यात्राएँ की, के दौरान हुई थी। हमारी पहली दूरस्थ मुलाकात 2000 में केरल, भारत (मैं केरल में अपना क्षेत्रीय कार्य प्रारम्भ ही कर रही थी) में हुई। केरल में ही मैनें यह जाना कि एरिक किस प्रकार, जहाँ भी जाते थे, सभी आयु कि लोगों के साथ जुड़ जाते थे : एक अवसर पर उन्हानें केरल के एक पहाड़ी गाँव के स्कूली बच्चों के समूह की सुखद हंसी के लिए "शी विल बी कमिंग डाउन द माउंटेन" गाया। शायद मेरी पसंदीदा मुलाकात तब थी जब माइकल और एरिक दोनों जोहान्सबर्ग में थे। एक रात्रि भोज के दौरान सिर्फ हम तीन के साथ, लगभग एक घंटे के उपर मार्क्सवाद पर बहस में दोनों को संलग्न देखना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। न सिर्फ चर्चा की अंतर्वस्तु रोचक थी बल्कि उनकी संलग्नता के तरीकों को देखना भी असाधारण रूप से मजेदार था। एरिक की समवृत्ति बहुत गहरी थी। असल में, एरिक का मूड़ कभी भी ज्यादा से प्रभावित नहीं था (नींद की कमी, असुविधा या थकाने वाले शेड्यूल सहित)। कम से कम मेरे अनुभव में एरिक हमेशा, प्यार करने वाले, जुनूनी और मानवीय व्यक्ति हैं जो हमारे समय के सबसे महत्वपूर्ण समाजशास्त्री और मार्क्सवादी विद्वान में से एक थे। हम्बे कहले एरिक। ■

> लिंग और असमानता का संबंध
एक परिचय

बिर्गिट रिग्राफ, पेडरबोर्न विश्वविद्यालय, जर्मनी, और महिला, लिंग और समाज पर आई.एस.ए. शोध समिति (आर.सी. 23) की सदस्य, **लीना अबाराफेह,** लेबानान अमरीकी विश्वविद्यालय, लेबानान, और **कादरी आविक,** टेलिन विश्वविद्यालय, एस्टोनिया और हेलसिंकी विश्वविद्यालय, फिनलैंड द्वारा

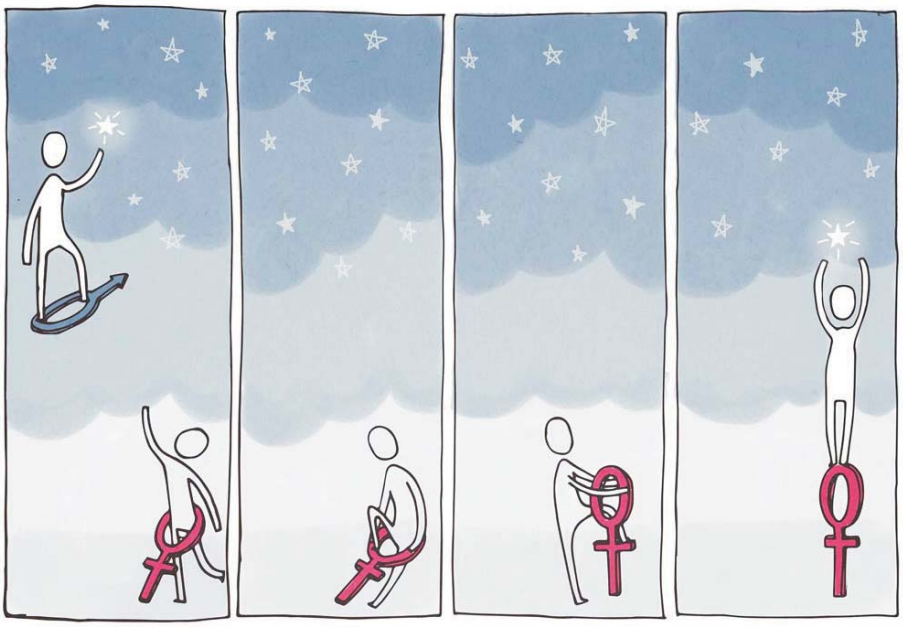

समानता तक पहुँचना कोई व्यक्तिगत या निजी मामला नहीं है। इसे संरचनात्मक, राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक स्तर पर संबोधित करने की आवश्यकता है।
फोटोः गुयेन हई हा/फ्लिकर। कुछ अधिकार सुरक्षित।

लिंग और सामाजिक असमानता समाजशास्त्र, लैंगिक अध्ययनों और अनगिनत अन्य विषयों में अध्ययन और विश्लेषण के प्रमुख क्षेत्र हैं। इन शोध क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण समान निष्कर्ष यह है कि दुनियाभर में गरीब और हाशिये पर रहने वाले लोगों में महिलाओं का एक बडा हिस्सा है। 2018 वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम की ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया के ग्लोबल इकॉनोमिक जेंडर गैप को खत्म करने के लिये 202 वर्ष लगेंगे।

आर्थिक असमानतायें अनेक रूप ले लेती है; उदाहरण के लिये, *द ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2018* के अनुसार, महिलायें सर्वेक्षण किये गये 41 प्रतिशत देशों में भूमि की मालिक हैं। पेशेवर क्षेत्र में, सिर्फ 34 प्रतिशत प्रबंधकीय पद महिलाओं के पास हैं। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका एक दूसरी लैंगिक चुनौती है। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का अधिकांश हिस्सा महिलाओं का है, और वे पुरूषों की तुलना में अवैतनिक कार्यों पर दुगुना समय बिताती हैं। चूकिं अनौपचारिक अर्थव्यवस्था अनियमित है, महिलायें विशिष्ट रूप से शोषण और दुरूपयोग के चपेट में आ जाती हैं। इनमें से कई आंकडों में सार्थक नीतिगत परिवर्तन के माध्यम से काफी सुधार किया जा सकता है। यह कहकर, महिलायें अपनी खुद की सबसे अच्छी वकील होती हैं; फिर भी राजनैतिक रूप से वे काफी हद तक कम प्रतिनिधित्व में है। रिपोर्ट में सर्वेक्षण में शामिल 149 देशों में, वर्तमान में सिर्फ 17 देशों में महिलायें राज्य प्रमुख हैं। इसके अलावा, दुनियाभर में सिर्फ 18 प्रतिशत मंत्री और 24 प्रतिशत सांसद महिलायें हैं।

कुछ देशों में व्यापक लैंगिक समानता की दिशा में बडी प्रगति के बावजूद, अभी भी अंर्तअनुभागीय पहचानों जैसे जाति, वर्ग और लैगिकता, आदि पर आधारित महिलाओं के लिये अवसरों में महत्वपूर्ण अंतर बना हुआ है। जहाँ कुछ अधिक विशेषाधिकार वाली महिलाओं को प्रगति का लाभ मिला है, अन्य का अनिश्चित परिस्थितियों में रहना जारी है। व्यक्तिगत राज्यों के अंदर, विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की महिलाओं के बीच अंतर बढ रहा है। इस अंतर का महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा और अवसरों पर बहुत बडा प्रभाव पडता है। उदाहरण के लिये, यूनिसेफ के आंकडों के अनुसार, संयुक्त राज्य जो कि सर्वेक्षण में शामिल 182

>>

देशों में से 54वें स्थान पर है में सापेक्ष रूप से मातृत्व मृत्यु दर कम है। उसी समय, द सेंटर्स ऑफ डिसीज कंट्रोल एंड प्रीवेंशन के अनुसार, अश्वेत महिलाओं की मातृ मृत्यु दर उनकी संयुक्त राज्य की श्वेत समकक्षों की तुलना में तिगुनी से अधिक है।

जबकि कई राज्यों में प्रगति जारी है, प्रगति की दरें विविध हैं। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका को सबसे अधिक क्षेत्रीय लैंगिक अंतर होने का दर्जा देती है, परंतु उनकी महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिये प्रगति की दर उत्तरी अमेरिकी क्षेत्र से वास्तव में बेहतर है। यह अनुमानित है कि दक्षिण एशिया अपना लैंगिक अंतर ७० सालों में खत्म कर सकता है . उत्तरी अमेरिका, मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका से लगभग एक सदी पहले। जब इस क्षेत्र की और जांच की गयी, हालांकि, कोई पूछ सकता है कि क्या ये आंकडें म्यांमार में विस्थापित रोहिंग्या महिलाओं के लिये थोडे से भी सार्थक है जो मौजूदा नस्लीय सफाई के कारण अनिश्चित परिस्थितियों में रह रही हैं। इन जैसे आंकडे हमें यह सवाल करने के लिये मजबूर करते हैं कि हम लैंगिक असमानता के संदर्भ में प्रगति को कैसे परिभाषित और उसका मापन करते हैं।

वैश्विक संवाद के इस अंक के लेख लिंग और सामाजिक असमानता के मध्स सम्बन्ध है और वे कैसे आकारित होते है, के महत्वपूर्ण सामाजिक–स्थानिक अंतर पर प्रकाश डालते हैं। इस अंक का उददेश्य इन विभिन्न गत्यात्मकताओं के लिये एक प्रारंभिक बिंदु प्रस्तुत करना है और आदर्श रूप से महिलाओं के लिये सामाजिक और नीतिगत परिवर्तन को निहित करते हुये आगे शोध और चर्चाओं के लिये स्थान बनाना है।

लिजा हुसु इस अवलोकन के साथ इन विचारों को रखती हैं कि दुनियाभर में उच्च शिक्षा में महिलाओं के द्वारा की गयी उन्नति के बावजूद, यह प्रवृति कि जितना ऊंचा पद होता है, उतनी कम महिलायें वहां होती हैं, बनी हुआ है। अपने शोधपत्र "शोध वित्तपोषण में लैंगिक चुनौतियाँ", में वे यूरोपियन और नॉर्डिक देशों के परिप्रेक्ष्य से कम प्रतिनिधित्व के निहितार्थों की चर्चा करती हैं।

ब्लांका न्याकलोवा "चेक गणराज्य में लैंगिक समानता को चुनौती" में रेंखाकिंत करती हैं कि कैसे नवउदारवादी विचारधारा और रूढिवादी दृष्टिकोण, चेक गणराज्य पर ध्यान केंद्रित करते हुये, केंद्रीय यूरोप में जेंडर और सामाजिक असमानता को आकार देते हैं। वे कुछ महिलाओं द्वारा अन्य की कीमत पर उपार्जित विशेषाधिकारों को उजागर करने के लिये विकृत सशक्तिकरण की अवधारणा का उपयोग करती हैं।

"दृढ़ाग्रह एवं परिवर्तन : अमरीका में लैंगिक असमानता" में **मार्गरेट एब्राहम** चर्चा करती हैं कि कैसे हम संयुक्त राज्य में समानता की लडाई की सफलताओं के साथ असफलताओं का घटना देखते हैं। वह तर्क देती हैं कि समानता और न्याय के प्रति ये उपलब्धियां स्व–स्पष्ट नहीं हैं, और यह कि हमें अपने सामाजिक कार्यों और समाजशास्त्रीय विश्लेषणों में आगे बढना होगा।

लीना अबाराफेह अपने लेख "अरब क्षेत्र में लिंग एवं असमानता" में अरब संदर्भ में लैंगिक असमानताओं की जांच करती हैं। यह क्षेत्र लंबे समय से आर्थिक और राजनैतिक असुरक्षा के साथ, सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाओं और गहरी पितृसत्तात्मकता की एक व्यवस्था से ग्रसित रहा है। यह विषैला संयोजन लैंगिक समानता की ओर प्रगति को रोकता – और कई मामलों में उल्टा – कर देता है। यह क्षेत्र अरब महिलाओं की संपूर्ण समानता के बिना शांति या समृद्धि हासिल नही करेगा।

निकोला पाइपर का लेख "एशियाई संदर्भ मे लैंगिक श्रम एवं असमानता" एशियाई परिप्रेक्ष्य में लैंगिक श्रम और असमानता का अध्ययन करता है, यह देखते हुये कि इनकी बडी और निरंतर जनसंख्या गतिशीलता विद्वानों और कार्यकताओं के लिये ध्यान का एक केंद्र बन गई हैं। विशेष रूप से, महिला प्रवासी महिलाकृत क्षेत्रों में केंद्रित हैं और अक्सर अधिकारों और सुरक्षा के अभाव में हैं। उनकी चुनौतियां और कमजोरियां क्षेत्र में लैंगिक असमानता के केंद्र में हैं।

अपने लेख "आइपीएसपीः सामाजिक प्रगति, कुछ लैंगिक चिंतन", में **जेफ हर्न** इंटरनेशनल पैनल ऑन सोशल प्रोग्रेस (आइपीएसपी) रिपोर्ट की प्रगति और परिणामों पर चिंतन करते हैं। वे लिंग की अवधारणा कैसी होनी चाहिये पर रिपोर्ट की सिफारिशों पर ध्यान केंद्रित करते हैं । ■

सभी पत्रचार
बिर्गिट रिग्राफ को <birgitt.riegraf@uni-paderborn.de >
लीना अबीराफे को <lina.abirafeh@lau.edu >
कादरी आविक को <kadri.aavik@tlu.ee > पर प्रेषित करें।

> शोध वित्तपोषण में लैंगिक चुनौतियां

लिजा हुसु, हैंकेन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, फिनलैंड, और ऑरिब्रो यूनिवर्सिटी, स्वीडन, और विज्ञान और तकनीक का समाजशास्त्र पर आइ.एस.ए. की शोध समिति (आर.सी. 23) की बोर्ड सदस्य, और महिलायें, लिंग और समाज पर आइ.एस.ए. की शोध समिति (आर.सी. 32) की सदस्य, द्वारा

शैक्षणिक जगत और अनुसंधान कैरियर में लैंगिक असमानता एक निरंतर और वैश्विक चिंता है। वैश्विक स्तर पर और यूरोप में, केवल एक–तिहाई शोधकर्ता महिलायें हैं। यह गहरा विन्यास कि जितना ऊंचा पद होगा, उतनी कम महिलायें होंगी, बना हुआ है। यह दुनियाभर में उच्च शिक्षा में महिलाओं द्वारा की गयी बडी प्रगति के बावजूद है। प्रोफेसरों की एक बहुत बडी संख्या पुरूष हैं, और एक अधिक लिंग–संतुलित प्रोफेसरियेट की ओर परिवर्तन की गति बहुत धीमी है, जैसा कि हाल ही के यूरोपियन और नोर्डिक आंकडें इगिंत करते हैं।

> क्या शोध वित्तपोषण लिंग–तटस्थ है?

शिक्षाजगत और अनुसंधान में कैरियर प्रगति में शोध वित्तपोषण तक पहुंच, महिलाओं और पुरूषों दोनों के लिये एक प्रमुख मुद्दा है। अधिकतर देशों में, इसका अर्थ है कि बाहरी शोध वित्तपोषण की खोज में सफलता अक्सर कड़ी प्रतिस्पर्धा के माध्यम से प्राप्त होती है। शोध वित्तपोषण में लैगिंक गत्यात्मकताओं पर शोध ने सभी वित्तपोषण संदर्भो में व्यवस्थित रूप से महिलाओं के लिये वित्तपोषण की कम सफलता दरों का प्रदर्शन ही नहीं किया है, बल्कि कई लैंगिक चुनौतियों वाली एक और अधिक जटिल तस्वीर चित्रित की है। इनका संबंध वैयक्तिक शोधकर्ताओं, शोध समूहों और विश्वविद्यालयों, वित्तपोषण संगठनों, शोध सामग्री, ओर अनुसंधान नीतियों से है। ये चुनौतियां वित्तपोषण आवंटन, वित्तपोषण गेटकीपर, सहकर्मी समीक्षा, वित्तपोषण संगठनों, उनके प्रबंधन, नीतियां और प्रथायें, और क्या और कौन उत्कृष्ट है की परिभाषा, और इसके साथ ही कि कौन उत्कृष्टता को परिभाषित करता है, से संबंधित हो सकती हैं। लिंग पर हाल ही के और वर्तमान में चल रहे अनुसंधानों और शोध वित्तपोषण ने व्यापक और अधिक विस्तृत तरीके से संपूर्ण शोध वित्तपोषण चक्र और वित्तपोषण वातावरण को आलोचनात्मक रूप से देखने की जरूरत को उजागर किया है।

शोध वित्तपोषण में लैगिंक गत्यात्मकताओं की एक व्यापक समझ में संपूर्ण वित्तपोषण चक्र शामिल है, जो आवेदन व्यवहार (आवेदन कौन करता है), आवेदक पात्र समूह (कौन आवेदन का पात्र है), अनुसंधान समूह रचना, वित्तपोषण उपकरण, आवेदन के लिये बुलावे का दस्तावेज, आवेदकों के लिये दिशानिर्देश, पात्रता मानदंड (आयु या पद), मूल्यांकन मानदंड, मूल्यांकन प्रकिया, मूल्यांकन में संभावित पूर्वाग्रह, सहकर्मी समीकक्षों की भर्ती, सहकर्मी समीक्षा प्रक्रिया, सफलता की दरें, वित्तपोषण की आवेदित और आवंटित राशि, अनुसंधान सामग्री, वित्तपोषक का सामान्य तौर पर और लैंगिक समानता के संबंध में नीति विवरण, समग्र रूप से वित्तपोषण व्यवस्था में पारदर्शिता, लिंग पर आधारित आंकडों की निगरानी और उपलब्धता, और प्राप्त वित्त का करियर पर दीर्घकालिक प्रभाव में संभावित लैंगिक विन्यास का विश्लेषण करता है।

तथाकथित उत्कृष्ट–चिन्हित वित्तपोषण उपकरण : उत्कृष्टता के केंद्र, उत्कृष्टता की विभिन्न पहल, प्रतिष्ठित प्रोफेसरशिप, और इत्यादि विशेष रूचि के हैं। कई हाल के अनुभवजन्य अध्ययनों और जांचों से पता चलता है कि उत्कृष्टता की इन पहलों ने अक्सर महिलाओं से अधिक पुरूषों को अधिक लाभान्वित किया है, ऐसा लैंगिक समानता वाले समग्र रूप से उच्च स्तर वाले देशों में भी, जैसे कि स्वीडन में भी हुआ।

औपचारिक और अनौपचारिक अकादमिक नेटवर्क भी वित्तपोषण को लक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई क्षेत्रों में अनुसंधान वित्तपोषण वैयक्तिक प्रयास की बजाय अधिक से अधिक एक सामूहिक प्रयास है। अकादमिक नेटवर्को के लैंगिक विन्यास पर अनुसंधान और अनुसंधान वातावरण में उसका एकीकरण इस संबंध में अत्यधिक प्रासंगिक है।

> यूरोपिय अनुभव

अनुसंधान वित्तपोषण राष्ट्रीय और क्षेत्रिय अनुसंधान नीतियों के प्रमुख मुद्दों में से एक है। यूरोपीय संघ के स्तर पर, और कुछ यूरोपीय देशों में राष्ट्रीय नीतियों में, अनुसंधान वित्तपोषण में लिंग का मुददा 1990 के दशक के अंत से 2000 के दशक में नीतिगत चिंता के रूप में उठाया गया है। यूरोपीय संघ अनुसंधान द्वारा वित्तपोषण को 1980 के दशक के मध्य से रूपरेखा कार्यक्रमों के रूप में गठित किया गया है। प्रथम यूरोपीय रूपरेखीय कार्यक्रमों में सिवाय तकनीक के लिये एक सहायक भूमिका के, सामाजिक

>>

सार्वजनिक फंडिंग संगठन कैसे लैंगिक समानता को प्राथमिकता देते हैं और शोध के वित्तपोषण में लैंगिक चुनौतियों को सम्बोधित कैसे करते है, में राजनैतिक इच्छाशक्ति या उसका अभाव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

विज्ञान के पहलुओं की विशेष रूप से कमी थी, और वे लिंग पर मौन थे। चतुर्थ रूपरेखीय कार्यक्रम के बाद से (1994–1998) सामाजिक विज्ञानों में अनुसंधान व वित्तपोषण को शामिल किया गया, और एजेंडों में लैंगिक मुद्दों को उठाया जाना शुरू हुआ। शुरूआत में "विज्ञान में महिलाएं" के संबोधन से लेकर विज्ञान में लिंग के प्रश्न तक, अनुसंधान सामग्री में लैंगिक आयाम को शामिल करते हुये, शोधकर्ताओं और शोध समूहों के साथ साथ निर्णय निर्माताओं और मूल्यांकनकर्ताओं के द्वारा लैंगिक संतुलन पर अधिक परंपरागत ध्यान केंद्रित करने के अलावा, 1990 के दशक के अंत से एक क्रमिक विस्तार ने स्थान लिया है। यूरोपियन रिसर्च एरिया (ई.आर.ए.) में, लैंगिक समानता पांच प्राथमिकताओं में से एक है। यह तीन मुददों की तरफ इंगित करता है: अनुसंधान समूह में लैंगिक संतुलन, मूल्यांकनकर्ताओं में लैंगिक संतुलन, और अनुसंधान सामग्री में लैंगिक आयाम।

यूरोपियन नीति कार्य का एक भाग 2009 में 33 देशों में लिंग और अनुसंधान वित्तपोषण की पहली व्यवस्थित समीक्षा करना था। इसने पाया कि यूरोप में बहुत भिन्नता थी कि कैसे राष्ट्रीय अनुसंधान नीतियों और राष्ट्रीय वित्तपोषण एजेंसियों ने लैंगिक मुददों को संबोधित किया था, जो तुलनात्मक निष्क्रियता से लेकर और कई देशों में राष्ट्रीय अनुसंधान वित्तपोषण की लिंग पर आधारित बमुश्किल कोई निगरानी, से नोर्डिक क्षेत्र सहित, कुछ देशों में, राष्ट्रीय वित्तपोषण प्रणाली में लैंगिक समानता को बढावा देने के लिये विभिन्न सक्रिय उपायों, निगरानी, और सक्रिय संलग्नता तक विस्तृत था।

यूरोपीय अनुसंधान की मुख्य सस्था, द *यूरोपियन रिसर्च काउंसिल* (ई.आर.सी.), 2014–2020 के लिये €13.1 बिलियन के बजट के साथ, प्रारंभिक–कैरियर, मध्य–कैरियर और उन्नत अनुसंधानकर्ताओं के लिये किसी भी विषय में और किसी भी देश में, उत्कृष्ट नीचे–से–ऊपर अनुसंधान को वित्तपोषित करने के लिये, 2007 में स्थापित की गयी। हालांकि, यूरोपीय संघ की अनुसंधान नीति में लैगिक चिंताओं के बावजूद, ई.आर.सी. की शुरूआत में उसके शासन सिद्धांतों में लैंगिक समानता का अभाव था। जब अंततः ई.आर.सी. ने अपने वित्त आवंटनों की लिंग के आधार पर निगरानी करना शुरू किया, तो परिणामों में पता लगा कि 2007–2013 में, प्रारंभिक अनुदान स्तर पर पुरूषों की सफलता दर 30 प्रतिशत और महिलाओं की 25 प्रतिशत थी, जबकि उच्च अनुदान स्तर पर यह पुरूषों के लिये 15 प्रतिशत और महिलाओं के लिये 13 प्रतिशत थी। सिर्फ एक क्षेत्र में शुरूआती अनुदान स्तर पर कोई अंतर नहीं था: भौतिकी और इंजीनियरिंग विज्ञानों में, जो एक पुरूष–प्रधान अनुसंधान क्षेत्र है। परंपरागत रूप से कई महिलाओं वाले क्षेत्रों जैसे जीव विज्ञानों और मानवीकी और सामाजिक विज्ञानों में पुरूषों के पक्ष में सफलता की दरों में साफ अंतर पाया गया।

सार्वजनिक वित्तपोषक संगठन कैसे लैंगिक समानता को प्राथमिकता देते हैं और अनुसंधान वित्तपोषण में लैंगिक चुनौतियों को संबोधित करने में राजनीतिक इच्छा और इसकी कमी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिये, नोर्डिक समाज को न केवल अंतर्राष्ट्रीय लैंगिक समानता तुलनाओं में उच्च दर्जा प्राप्त है, परंतु वैश्विक नवाचार अनुक्रमण में भी। नोर्वे और स्वीडन में विशिष्ट रूप से, अनुसंधान नीति के एजेंडा पर लैंगिक समानता में प्राथमिकता पर है। स्वीडन में, सार्वजनिक अनुसंधान वित्तपोषक संगठन, जैसे कि स्वीडिश रिसर्च काउंसिल और राष्ट्रीय नवाचार एजेंसी विन्नोवा, सभी के पास अपनी गतिविधियों में लिंग को मुख्यधारा में लाने के लिये सरकारी दिशा–निर्देश हैं। विकास के अनुवीक्षण में, स्वीडिश अनुसंधान वित्तपोषक न सिर्फ आंकडों का उपयोग करते हैं बल्कि गुणात्मक सामाजिक विज्ञान उपकरण जैसे वित्तपोषण कमेटी की बैठकों में लिंग पर्यवेक्षक का भी उपयोग करते हैं।

सार्वजनिक अनुसंधान वित्तपोषण बोर्ड में लैंगिक संतुलन को फिनलैंड, नोर्वे और स्वीडन में 2000 के दशक के शुरू से ही नीतिगत लक्ष्यों में रखा गया है, जबकि कई यूरोपियन देशों में बोर्ड पुरूष–प्रधान बने हुये हैं। वित्तपोषण बोर्ड में लैंगिक संतुलन, समान प्रतिनिधित्व और न्याय का सिर्फ एक मुद्दा नहीं है; इन गेटकीपिंग पदों में समान प्रतिनिधित्व भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इस पर अंदर का ज्ञान प्रदान करता है कि वित्तपोषक व्यवस्था कैसे काम करती है और इसमें शामिल लोगों की वैज्ञानिक नेटवर्किंग को बढावा देता है। ■

सभी पत्राचार लिसा हुसु को <liisa.husu@oru.se> पर प्रेषित करें।

> चेक गणराज्य में लैंगिक समानता को चुनौती

ब्लांका न्यकलोवा, चेक विज्ञान अकादमी की समाजशास्त्रीय संस्था, चेक गणराज्य द्वारा

MASARYKOVA UNIVERZITA
FAKULTA SOCIÁLNÍCH STUDIÍ
Genderová studia FSS MU

ब्रनो में भंग लैंगिक अध्ययन विभाग का लोगो।

यह वर्ष यूरोप की अर्ध–परिधि में आयरन कर्टन के उठने के बाद के 30 वर्ष या 30 वर्ष का असमान नवउदारवाद जिसे लोकतंत्र के एकमात्र संभव मार्ग के रूप में माना गया, का जश्न मनाता है। कम्यूनिस्ट पार्टी की सदस्यता पर आधारित शक्ति संरचनाओं को मिटाकर लोकतंत्र के उदय को मेरिटोक्रेसी की तरफ कदम के रूप में देखा गया। इस काल के मीडिया से पता चलता है कि प्रतिभा जो व्यक्तिगत आधारों पर अयोग्य के रूप में देखे जाने वालों की असमानता को सही ठहराती है, को भू–राजनैतिक केन्द्र की तरफ छलांग को सक्षम करने के लिए उतसाह से देखा गया । फिर भी, चेक गणराज्य वर्तमान में एक कुलीन प्रधानमंत्री द्वारा शासित है जो 1989 के पूर्व एक गुप्तचर थे और जिन्होनें अधिकांश चेक अरबपतियों की तरह 1989 पूर्व की अपनी विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति को निजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आर्थिक शक्ति में बदलने में सफलता प्राप्त की है। उसी समय, करीब एक–दसवी आबादी सुविचारित हानिकारक निग्रहण कानून के कारण स्वयं को सर्पिल कर्ज में दबे पाती हैं। इसके कारण 70,000 बेघर लोगों और 120,000 से अधिक लोगों को बघर होने की आशंका का सामना करना पडता है। यहाँ मैं चेक गणराज्य पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने वाली, केन्द्रीय यूरोपीय विसेग्राद समूह देशों में सामाजिक/लैगिक असमानता के लिए नवउदारवादकरण को रेखांकित करने वाली राजनैतिक तर्कसंगतता के कुछ परिणामों की रूपरेखा प्रस्तुत करती हूँ। लैंगिक अध्ययन विषय के भविष्य को काम में लेते हुए, मैं इस तार्किकता के प्रभाव को समानता और न्याय के प्रश्नों पर लगाकर देखना चाहती हूँ।

नवउदारवाद एक वैचारिक अल्प मार्ग बन गया है जो आज की वैश्वीकृत दुनिया में लैगिक असमानता के कारणों की व्याख्या करता है। वैसे तो नवउदारवाद को जीवन के सभी पक्षों के अंतिम निर्धारक के रूप में मुक्त बाजार की तरफ लौटने के रूप में समझा जाता है। विवेचनात्मक सिद्धान्तकारों ने परस्पर सम्बन्धित क्षेत्रों में इसकी कार्यप्रणाली की जॉच के द्वारा इस अतिसरलीकरण का मुकाबला करने का प्रयास किया है। 1988 में, फ्रेंच मानवशास्त्री पियरे बोदिर्यू ने सामूहिकता के नाश और कार्यबल के विषाक्त सूक्ष्मीकरण के साथ नवउदारवाद को सम्बद्ध किया जिससे व्यक्तियों की वैश्विक पूंजी की ताकतों का विरोध करने की क्षमता का क्षरण हुआ। अब तक लगभग दो दशकों से ब्रिटिश सांस्कृतिक सिद्धान्तकार एंजेला मैक रोबी ने इस बात पर ध्यान केन्द्रित किया है कि किसी के जीवन को प्रोजेक्ट के रूप में देखने के आर्थिक सशक्तीकरण के सांस्कृतिक प्रतिनिधान जैसे कि साहित्यिक और फिल्म चरित्र, ब्रिजेट जोन्स, कैसे उसके साथ तादाम्य स्थापित करने वाली युवा महिलाओं को प्रभावित करते हैं। अमरीकी राजनैतिक विचारक वेंडी ब्राउन बाजार के तर्क के सामाजिक जीवन के न सिर्फ आर्थिक पक्ष पर के प्रभावों पर ध्यान केन्द्रित किया है बल्कि अधिक महत्वपूर्ण रूप से, लोकतांत्रिक संस्थानों की राजनैतिक तर्कसंगता पर भी केन्द्रित किया है।

उपरोक्त लेखक ठोस उदाहरणों का उपयोग करते है, फिर भी उन्हें अक्सर नवउदारवाद के सार्वभौम रूप से मान्य सिद्धान्त को पेश करने वालों के रूप में देखा जाता है। यह प्रघटना के प्रासंगिक अध्ययन का आह्वान करता है। केन्द्रिय यूरोपीय विसेग्राद देश एक ऐसी प्रयोगशाला प्रदान करते हैं जिसके अंतर्गत लोकतांत्रिकरण को सुगम बनाने हेतु अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसे संगठनों के निर्देशों के अंतरीय कार्यान्वयन के परिणामों का निरीक्षण किया जा सकता है। विशेष रूप से 2000 के बाद भू–राजनैतिक दल के स्वरूप में नवउदारवाद के आलोचनात्मक अध्ययन संख्या में बढ़ गये है। लैंगिक असमानता और इसके रूपांतरण के विश्लेषण दिखाते हैं कि आधुनिक मुक्ति प्रोजेक्ट का परिणाम जिसे जुजाना उहडे ने "विकृत मुक्ति" कहा, ऐसी स्थिति है जहाँ महिलाओं के कुछ समूहों का सशक्तीकरण पूर्व में बाजार के बाहर के जैसे देखभाल के वस्तुकरण के द्वारा अन्य महिलाओं की कीमत पर किया जाता है। विकृत मुक्ति न केवल अपूर्ण है बल्कि यह नये अन्याय को आगे बढ़ाती है और इससे पूंजीवाद के द्वारा इसको बनाये रखने में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को पाये बिना नहीं लड़ा जा सकता है।

>>

शोध और शिक्षा जो नवउदारवादी स्वानुभविक के लायक नहीं है पर हंगरी, चेक गणराज्य और यूरोप के कई अन्य देशों में हमला हो रहा है। फोटोः क्रिस्टाफर डॉम्ब्रे। फ्लिकर। क्रियेटिव कामन्स।

चेक गणराज्य में 20 प्रतिशत महिलाएँ ससंद की सदस्य हैं; सामान्य रूप में लैंगिक आय में अंतर 22 प्रतिशत पर कायम है और एक ही उद्यम में एक ही पद के लिए 10 प्रतिशत अभिभावकों में से 98.5 प्रतिशत महिलाएँ हैं जो यूरोप का सबसे लंबा अभिवावक अवकाश लेती हैं और 90 प्रतिशत मामलों में एकल परिवार की मुखिया महिलाएँ हैं। 1989 से महिलाओं ने आर्थिक अस्थिरता के बढते स्तर का सामना किया है और उनकी निर्धनता के खतरे से पीडित होने की संभावना असंगत रूप से अधिक है; देश के विशिष्ट क्षेत्रों में जातीयता/प्रवासी प्रस्थिति के कारण आर्थिक एवं सामाजिक असमानता के तीक्ष्ण होने से बुजुर्ग महिलाएँ निर्धनता के उच्च जोखिम का सामना करती हैं। अधिक महत्वपूर्ण रूप से, आम तौर पर चेक गणराज्य और विसेग्राद समूह देशों में लैंगिक संस्कृति रूढिवाद और लिंगवाद द्वारा चिन्हित है जो विकृत मुक्ति को चुनौती नहीं देने की अनुमति देता है; महिलाओं की मुक्ति और उसको बढ़ाने के प्रयासों को इस क्षेत्र की कुछ आर्थिक संकटों के लिए भी दोषी ठहराया जाता है।

लैंगिक अध्ययन में विशेषज्ञता रखने वाले विद्वानों ने प्रदर्शित किया है कि कैसे नवउदारवाद और लैंगिक सम्बन्धों में रूढ़िवाद ने एक दूसरे को कैसे बनाये रखा है। रदका दुदोवा एवं हाना हस्कोवा दिखाते हैं कि 1989 के बाद अभिभावकों के अवकाश की नीतियाँ 1989 के पूर्व की रिफैमिलिलाइजेन नीतियों के हिस्से का मात्र विस्तार थीं। लिबोरा ओट्स–इद्रूकोवा एवं हाना हवेलकोवा कम्यूनिस्ट युग की कुछ मुक्तिकारी नीतियों में महिलाओं एवं नारीवादी आंदोलन के उपेक्षित योगदान पर फोकस करती हैं, जबकि केटरीना लिज्कोव दिखाती हैं कि 1960 के उतरार्ध में चिकित्सीय विमर्श में कैसे कामुकता के बारे में दोहरे मापदण्ड पुनः प्रबल हुए और तब से कायम हैं। इनमें से कोई भी योगदान क्षेत्र में लैगिंक अध्ययन और नारीवादी सिद्धान्तों के प्रसार के बिना संभव नहीं था।

> लैंगिक अध्ययनों का भविष्य

क्षेत्र में लैंगिक अध्ययनों का भाग्य हमें नवउदारवाद द्वारा रेखांकित लोकतांत्रिक प्रोजक्ट में लैंगिक असमानता का बना रहना और उत्परिवर्तन को समझने में मदद कर सकता है। विषय की स्थापना कम स्थानीय फंडिग के सदर्भ में अमरीकी और बाद में यूरोपीय दानदाताओं द्वारा स्थानीय नारीवादी सक्रियता को फंड देने के साथ जुड़ा है। 2004 के आसपास दो प्रमुख चेक विश्वविद्यालयों में लैगिक अध्ययन प्रारम्भ किया गया। ऐसा आंशिक रूप से नवउदारवादी उच्च शिक्षा सुधारों के द्वारा, जिसके लिए विद्यार्थियों की बड़ी संख्या की आवश्यकता थी, प्रदान किये गये अवसरों की उपलब्धता के कारण हुआ। हालांकि, इसी राजनैतिक तर्कसंगतता ने न सिर्फ हंगरी में बल्कि चेक गणराज्य में भी, हाल में लैगिक अध्ययन पाठ्यक्रम बंद करने में सहयोग दिया है जिसने मध्य यूरोप में लिंग–उन्मुख अनुसंधान करने की क्षमता को नकरात्मक रूप से प्रभावित किया है। जैसा कि वेंडी ब्राउन ने उल्लेख किया है, नवउदार तार्किकता अंततः आदर्शवादी है – बाजार के तर्क के नियम को कल्पित नहीं किया जाता है बल्कि इसे विभिन्न प्रकार से स्थापित तार्किकता जैसे नारीवादी प्रोजेक्ट को रेखांकित करने वाली मुक्ति तार्किकता, की कीमत पर सक्रिय रूप से संस्थागत किया जाता है। असाधारण रूप से लैगिक रूढ़िवादी क्षेत्र में कम्यूनिस्ट–युग की सामाजिक इंजीनियरिंग के रूप में असमान सामाजिक सम्बन्धों को लक्षित करने वाली खुली राजनैतिक कार्यवाही की आसान अस्वीकृति, नवउदार राजनैतिक तार्किकता ने पहले कुछ नारीवादी प्रयासों के साथ बेहतर रूप से गठबंधन किया जिसमें लैंगिक अध्ययन को संस्थागत बनाने वाले प्रयास भी सम्मिलित थे। हंगरी में लैंगिक अध्ययनों पर प्रतिबंध ठीक उसी प्रकार की राजनैतिक तार्किकता को काम मे लेता है लेकिन महत्वपूर्ण रूप से, वह इसे आर्थिक (श्रम बाजार में लिंग अध्ययन स्नातकों की मांग में कमी के झुठे आधार पर) के रूप में फ्रेम करता है और इस प्रकार अराजनैतिक। यह संभावित सामाजिक आलोचना का सामना करने और लिंग–विरोधी आंदोलन के साथ लोकप्रियता अर्जित करने के राजनैतिक उद्देश्यों को पूरा करता है (अग्निज्का ग्रेफ और एल्बिएटा कोरोलकसुकिन, 2017 द्वारा इन पृष्ठों पर वर्णित)। चेक गणराज्य में 2018 में ब्रनों लिंग अध्ययन कार्यक्रम को बंद करना इस दावे से उचित था कि यह पाठ्यक्रम "लाभदायक" नहीं था। क्योंकि यह छात्रों की संख्या पर निर्भर सरकारी शिक्षा प्रणाली में छात्रों को आकर्षित करने में विफल रहा।

दोनों मामलों के बीच समानांतर अनोखे है चाहे उनकी प्रेरणाएं, कम से कम स्पष्ट रूप से, भिन्न है। जहाँ हंगरी के मामले में राजनैतिक तर्क तब स्पष्ट हुआ जब इस विषय को कडाई से वैचारिक और वैज्ञानिक नहीं के रूप में चित्रित किया गया। ब्रनों के मामले में, नवउदार राजनैतिक तार्किकता को विश्वविघालयी नेतृत्व ने संस्थागत किया जब यह अपने फैसले की नैतिकता को संबोधित करने में विफल रहा। लैंगिक असमानता का सही मायने में सामना करने में – इसके आर्थिक पक्ष में, अपितु लैगिक हिंसा के प्रति सहिष्णुता और सार्वजनिक व्यक्तियों और राजनेताओं द्वारा यौन उत्पीडन के समर्थन के सम्बन्ध में नवउदार राजनैतिक तार्किकता में इसकी अंतर्निहितता को स्पष्ट करना चाहिए। यदि हमें नवउदारवाद के मानक सिद्धान्तों का सफलता पूर्वक मुकाबला करना है, हमें इन निर्भरताओं को स्वीकार करना होगा। क्योंकि वे अन्यथा सामाजिक और विशिष्ट लैंगिक असमानता की नारीवादी आलोचना को रेखांकित करने वाले आदर्शवादी तर्क को कुंद करने की चेतावनी देती हैं 1989 से 30 वर्षों ने यह स्पष्ट किया कि नवउदार राजनैतिक तार्किकता स्पष्ट रूप से विफल रहेगी। ऐसा तब होगा जब इसे असमानता दूर करने का कार्य सौंपा जायेगा चूंकि यह वास्तव में अपनी वास्तविक जड़ो की रक्षा में निवेश करता है। ■

सभी पत्राचार ब्लांका न्यकलोवा को <blanka.nyklova@soc.cas.cz> पर प्रेषित करें।

> दृढाग्रह एवं परिवर्तन

अमरीका में लैंगिग असमानता

मार्गरेट अब्राहम, हॉफस्ट्रा विश्वविद्यालय, यू.एस.ए, अन्तराष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ की पूर्व अध्यक्ष (2014–18), प्रजातिवाद, राष्ट्रवाद, स्वदेशीयता, एवं जातीयता (आर.सी. 05), प्रवास का समाजशास्त्र (आर.सी. 31) एवं मानवाधिकार एवं वैश्विक न्याय (टी.जी. 03) पर आई.एस.ए. की शोध समिति की सदस्य द्वारा ।

महिला मार्च और अन्य महत्वपूर्ण प्रतिरोध आंदोलन 2017 और 2018 में भड़क गये और उलझी एवं शोषक व्यवस्था के खिलाफ प्रतिरोध में अग्रणी रहे। पिक्साबे से मियाविक्स 9।

नवम्बर 2018 के मध्यावधि चुनावों में रिकार्ड संख्या की महिलाएँ निर्वाचित हुई जो अब संयुक्त राज्य की 116वीं कांग्रेस में अपनी सेवायें दे रही हैं। यह चुनाव ऐतिहासिक रूप से कई प्रथम का साक्षी रहा है, पहली बार अमरीकी मूल की दो महिलाएँ, दो मुस्लिम महिलाएँ, पहली खुल्लम–खुल्ला उभयलिंगी महिला एवं कांग्रेस में अब तक की सबसे कम उम्र की निर्वाचित महिला। एक महिला सदन के अध्यक्ष के रूप में पुर्ननिर्वाचित हुई, इस पद पर कार्य करने वाली एक मात्र महिला। 5 फरवरी 2019 को स्टेसी अब्राक्स जो गर्वनर की विवादास्पद दौड़ में हार गई थी, ने अमरीकी राष्ट्रपति के संघीय संबोधन पर डेमोक्रेटिक प्रत्युत्तर देने वाली प्रथम अफ्रीकी–अमरीकी महिला बन कर इतिहास रच दिया। अब्राक्स ने नस्लवाद, मतदाता दमन एवं आव्रजन के मुद्दों को संबोधित करने की आवश्यकता पर बात करी। उन्होनें सरकार की कामबंदी के लिए राष्ट्रपति ट्रम्प की कड़ी आलोचना की जिससे लोगों के जीवन में गंभीर एवं अवांछित संकट और तबाही हुई।

इन छोटे कदमों में निहित संघर्ष और जीत लैंगिक समानता एवं न्याय की बड़ी लडाई पर प्रकाश डालते हैं। ये छोटी जीते प्राधान्य संरचनाओं को तोडने और समाज में व्याप्त उत्पीड़न और असमानता की कई व्यापक और गहरी तरह से जड़ प्रणालियों की संस्कृति को उजागर करने की सामूहिक संघर्ष के लंबे इतिहास से जुड़ी हैं। छोटे कदम उम्मीद की निशानी हैं, लेकिन वे पर्याप्त नहीं हैं। हमें सामाजिक रूपांन्तरण और संरचनात्मक परिवर्तन लाने के प्रयास लगातार करते रहना चाहिए।

> अमेरिका के संदर्भ में

कांग्रेस में अधिक महिलाओं के होने के बावजूद, अमरीका में व्यापक लैंगिक असामनता है।

- मीडिया के ध्यान के बावजूद, वेतन में अन्तर जारी है जिसमें श्वेत महिलाएँ पुरूषों से 20 प्रतिशत कम कमाती है और अन्य

>>

वर्णों की महिलाएँ इससे कम कमाती हैं।

- महिला–प्रधान व्यवसाय जैसे बाल देखभाल और रेस्तरां सेवा, वेतन सीढी के निचले स्तर पर बने रहते हैं।
- अमरीकी अर्थव्यवस्था मे शीर्ष कमाई करने वालों की बड़ी संख्या में अधिकांश पुरूष हैं।
- इंस्टीट्यूट फॉर पॉलिसी स्टड़ीज एनेलिसिस ऑफ वर्ल्ड बैंक इंडिकेटर्स के अनुसार महिलाएँ पुरूषों की तुलना में अवैतनिक श्रम का दुगुना कार्य करती हैं जिसमें बाल देखभाल, वृद्ध देखभाल और गृह–व्यवस्था शामिल हैं।
- 2017 में महिलाओं की $ 42,000 बचत की तुलना में पुरूषों की औसत बचत $123,000 थी।
- द अमेरिकन एसोसियसन ऑफ यूनिवर्सिटी वीमेन रिर्पोट करती हैं कि अन्य आबादी की तुलना में अश्वेत महिलाएँ अधिक ऋण के साथ स्नातक बनती है।
- अमरीकी जनगणना ब्यूरो ने घोषणा की कि अन्य वर्णों की महिलाएँ राष्ट्र में सबसे अधिक गरीबी दर को अनुभव करती हैं।
- ट्रांसजेण्डर बेरोजगारी अमरीकी औसत से तीन गुना अधिक है।
- अफ्रीकी अमरीकी महिलाओं की कारावास दर श्वेत महिलाओं की तुलना में दुगुनी है। और अफ्रीकी अमरीकी को गोरों की दर से पाँच गुना अधिक कैद किया जाता है।
- अमरीका में तीन महिलाओं में से एक ने अपने जीवनकाल में यौन हिंसा को अनुभव किया है।

> आगे बढ़ते हुए

वाशिंगटन पर महिला मार्च के तत्वाधान में 21 जनवरी 2017 को ट्रम्प के चुनाव का विरोध करने के लिए लाखों लोग अमरीका और दुनिया भर में सड़कों पर उतर आये। यह उस कार्य की निरन्तरता थी जो महिला आंदोलन और कई भिन्न आंदोलन और संगठन कई वर्षों से कर रहे थे, जैसे – ब्लैक लाइव्स मैटर, से हर नेम, मी टू। इन वर्षों में, इन और अन्य समूहों ने "परस्परछेदन" (किम्बरले क्रेनशॉ द्वारा गढ़ा गया सम्बोधन) की धारणा और उत्पीडन के अन्तनिर्भर और अतिव्यापी मैट्रिक्स की व्यापक छत्रछाया को गतिशील बनाने और मुख्यधारा में लाने में मदद की है। महिला मार्च के स्केल ने सरकार और समाज में पितृसत्तात्मक एवं महिला–द्वेषी संरचनाओं की दृढ़ता और व्यापकता का सामना करने के लिए वैश्विक समुदाय की सामूहिक शक्ति और आवश्यकता का प्रदर्शन किया।

महिला मार्च और अन्य महत्वपूर्ण प्रतिरोध आंदोलन परिवर्तन के लिए संगठन और संचार के लिए व्यवहार्य साधन के रूप में 2017 और 2018 में भड़के जिससे वे आरोपित और शोषण करने वाली प्रणालियों के खिलाफ प्रतिरोध में अग्रणी हो गये। युवा पीढ़ी महत्वपूर्ण वैश्विक चिंताओं को संघटित और सम्बोधित करने के लिए प्रोद्यौगिकी और बहुल साधनों को काम में ले रही है। उसके अंतर्गत वे लैंगिक समानता और परस्परछेदन को संबोधित मुद्दों का अभिन्न अंग बना रही हैं। इन विभिन्न आंदोलनों ने समुदायों को प्रजनन अधिकारों, लिंग, परस्परछेदन हिंसा, प्रवासी अधिकार, श्रम अधिकार, नागरिक अधिकार, नस्लीय न्याय, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, पर्यावरणीय न्याय और अन्य के मुद्दों को संबोधित करने के लिए गतिशील किया है। वो एक ऐसे आवेग बल को निर्मित करते हैं जो आशा के साथ चुनौती भी प्रदान करता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि चिरस्थायी/स्थायी परिवर्तन दृढ़तापूर्वक होता है छोटे कदमों और भूकम्पीय बदलाव के माध्यम से समाज के अधिकांश हिस्से को एक साथ आना होगा। अनुसंधान और सक्रियता ने दर्शाया है कि राज्य और सामाजिक व्यवस्था कैसे व्यापक रूप से लैंगिक असमानता और उत्पीडन के साथ उलझे हैं। महिलाओं के विरूद्ध हिंसा और लिंग–आधारित हिंसा, लैंगिक असमानता, असमान शक्ति, भ्रष्टाचार और नियंत्रण का परिणाम हैं। लैंगिक हिंसा पितृसत्ता में सर्वांगी और गहन रूप से जड़वत् है लेकिन यह अपनी उत्पति और परिणाम दोनों के सन्दर्भ में अंतरानुभागीय है। पितृसत्तात्मक संरचनाओं एवं सम्बन्धों को चुनौती दी जानी चाहिए।

एक तरीका जिससे परिवर्तन हो सकता है वह है सभी प्रकार की असमानता और उत्पीडनः नस्लीय, आर्थिक सक्षम इत्यादि के विखण्डन और सम्बोधित करने के लिए परस्परछेदन उपागम का प्रयोग। ये पितृसत्तात्मक संरचनाओं, व्यवहार और इतिहास का एक हिस्सा हैं। हमें उन खामोश परिपेक्ष्यों और अदूरदर्शी साधन, जो हमें विभाजित करते हैं, जो आघात योग्य कमजोर आबादी को विशेषाधिकार प्राप्त कुछ लोगों के हित में एक दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने के लिए मजबूर करते हैं, को पहचानना और उनका विरोध करना होगा। हमें समानता और न्याय को नष्ट करने वाली ताकतें जो न सिर्फ मनुष्यों बल्कि समग्र रूप से दुनिया को नुकसान पहुँचा रही हैं, का मुकाबला करने के लिए नये तरीकों की पुनः कल्पना करने की आवश्यकता है।

वैकल्पिक प्रतिमानों की खोज में, सभी आवाजों के प्रति संवेदनशील समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य महत्वपूर्ण हैं। समाजशास्त्र ने पहले ही लैंगिक असमानता पर मूल्यवान अंतदृष्टि प्रदान की है, फिर भी बहुत कुछ ऐसा है जिस पर हमारे ध्यान देने की आवश्यकता है। समाजशास्त्र के लिए निम्नलिखित प्रश्नों पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता हैः समाजशास्त्रीय कल्पना को समानता की तरफ (अपने स्वयं के विषय और संस्थाओं के अन्तर्गत) उकसाने के लिए किस की आवश्यकता है? वे कौन से सिद्धान्त और प्रविधियाँ हैं जो प्रणालीगत असमानताओं को वास्तव में नष्ट करने में मदद कर सकती हैं? असमानता को पुनः उत्पन्न करने वाले फंडिग के स्वरूपों से हम कैसे सहयोजित न हों और इसके बजाय, हमारा शोध समानता की तरफ जाने वाले मार्ग दिखाये? विभाजनकारी राजनीति से भड़काये गये विभाजन के पार लोंगों को एक दूसरे की सुनने के वादे और संभावना को समाजशास्त्र कैसे सहयोगात्मक, शोध और कार्य के माध्यम से, सच्ची समानता और सामाजिक न्याय के लिए ठोस समाधान प्रदान कर सकता है? स्पष्ट रूप से, हमें छोटे कदमों और भूकंपीय बदलावों की आवश्यकता होगी, ताकि समानता का सपना साकार हो सकें। ■

सभी पत्रचार मार्गरेट अब्राहम को
<margaret.abraham@hofstra.edu> पर प्रेषित करें।

> अरब क्षेत्र में लिंग एवं असमानता

लीना अबीराफेह, लेबनीस अमेरिकन विश्वविद्यालय, लेबनान द्वारा

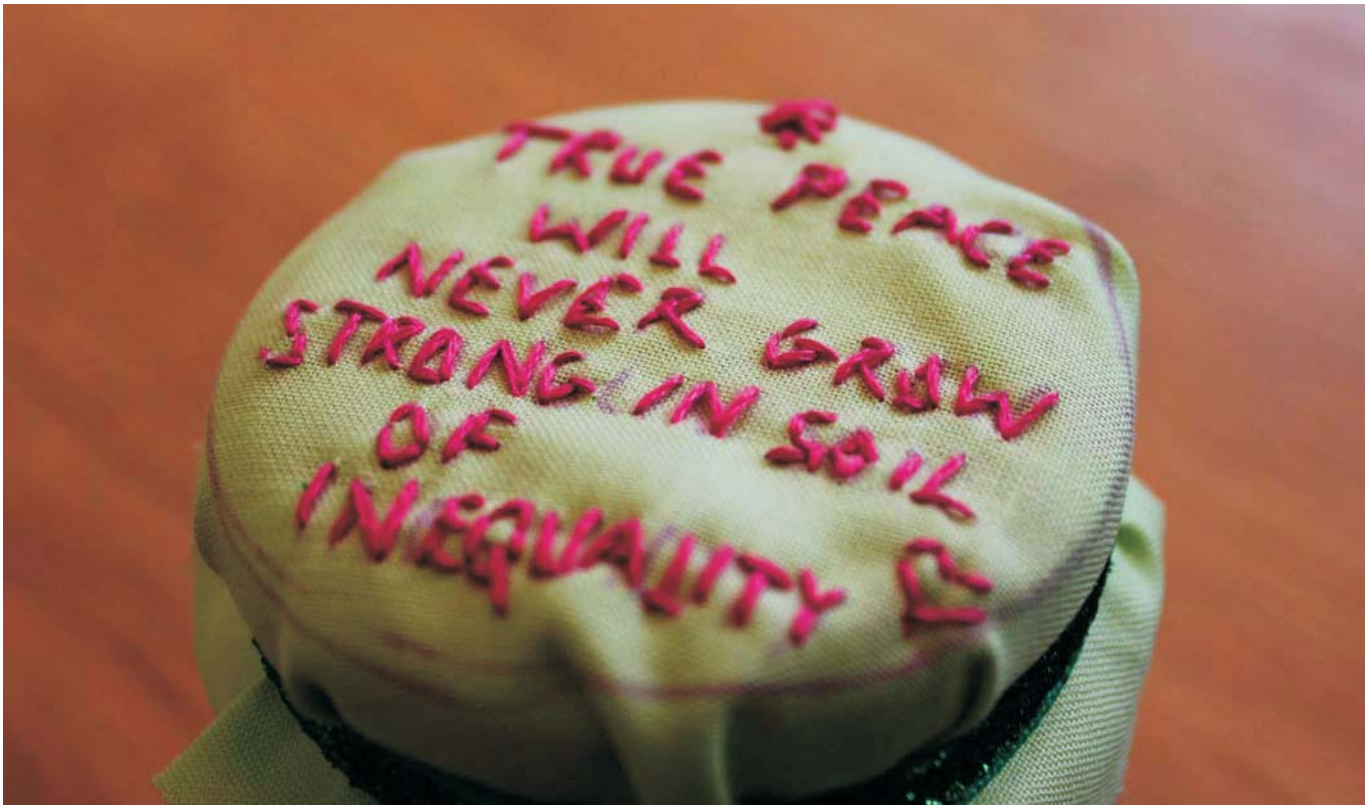

स्त्रोत : जैसमीन फर्राम

यद्यपि लैंगिक असमानता एक दुर्भाग्यपूर्ण वैश्विक वास्तविकता है, अरब क्षेत्र विशेषकर इस संबध में न केवल सबसे बड़े अंतर का सामना कर रहा है, बाल्कि इस असमानता के निवारण में इसके समक्ष महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी हैं। इस क्षेत्र ने लम्बे समय से उलझी हुई पितृसत्तात्मक व्यवस्था तथा मिश्रित सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाओं के कारण राजनैतिक एवं आर्थिक असुरक्षा का सामना किया है। यह विषाक्त संयोजन न केवल लैंगिक समानता की ओर प्रगति को बाधित करता है, अपितु कई मामलों में इस प्रक्रिया को उल्टा भी कर देता है।

यह स्थिति सीरिया, फिलिस्तीन, यमन और इराक जैसे क्षेत्रों में कई लंबे मानवीय संकटों के चलते और गहन हो गई है। सम्पूर्ण क्षेत्र में, अस्थिरता, आदर्श रूप धारण कर रही है। इन संघषों ने सामाजिक सुरक्षा की प्रणालियों को नष्ट कर दिया है, सुरक्षित सेवाओं और सहायता तक पहुँच को कम कर दिया है, समुदायों को विस्थापित किया है तथा कमजोरियों को बढाया है, जिससे महिलाओं के लिये नई असुरक्षाऐं पनपी हैं। संघर्ष के समय में, लैंगिक समानता के लक्ष्य एजेंडे से जल्दी से गायब हो जाते हैं।

विश्व आर्थिक मंच की 2018 की ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट अरब क्षेत्र में लैंगिक असमानता की सीमा में महत्वपूर्ण अंतदृष्टि प्रदान करती है। रिपोर्ट चार आयामों का मापन करती है : आर्थिक भागीदारी और अवसर, शैक्षणिक प्राप्ति, स्वास्थ्य एवं जीवन–रक्षा तथा राजनैतिक सशक्तिकरण। वर्तमान में वैश्विक जेंडर गैप स्कोर 68 प्रतिशत पर स्थित है जिसका अर्थ है कि, वैश्विक स्तर पर इसे पाटने के लिए 32 प्रतिशत का अंतर खत्म करना आवश्यक है। मध्यपूर्व और उत्तरी अफ्रीफा लिंग समानता से 40 प्रतिशत की सबसे बड़ी दूरी का सामना करते हैं।

संयुक्त अरब अमीरात और कुवैत जैसे खाड़ी देशों ने आर्थिक भागीदारी और स्वास्थ्य के मामलों में अंतराल को कम कर दिया है, लेकिन मजदूरी समानता में अंतराल बरकरार है। कतर ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि की है – सन् 2017 में संसद में शून्य महिलाओं की भागीदारी थी जो 2018 में लगभग 10 प्रतिशत तक बढ़ गई है।

महिलाओं की समानता के संदर्भ में अपने खराब रिकॉर्ड के बावजूद, सऊदी अरब ने श्रम–असमानता को कम किया है तथा श्रम–शक्ति में महिलाओं की भागीदारी को बढाया है। हालांकि, पुरूष–अभिभावकता जैसी दमनकारी प्रणालियाँ आज भी बरकरार हैं, जो महिलाओं की स्वतंत्रता और गतिशीलता को रोकती हैं।

>>

संसद में महिलाओं के अनुपात पर लेबनान की न्यूनतम प्रगति के बावजूद जॉर्डन और लेबनान काफी हद तक अपरिवर्तित हैं। आर्थिक भागीदारी में कमी आने के कारण ओमान में पिछले वर्षों की तुलना में लैंगिक अंतर बड़ा है।

दुनिया के चार सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले देश में से तीन क्षेत्र मिस्त्र, सउदी अरब व यमन हैं जिनमें महिलाऐं केवल 7 प्रतिशत प्रबंधकीय पदों पर हैं। इन क्षेत्रों में शामिल 18 देशों में से 12 का प्रतिगमन हुआ है। वर्तमान गति की दर से इस क्षेत्र का अपने लैंगिक अंतर को पाटने के लिये अगले 153 वर्षों की आवश्यकता होगी।

> लैंगिक असमानता: लेबनान का मामला

लेबनान अपनी प्रगतिशील उपस्थिति के बावजूद एक सार्थक मामला प्रस्तुत करता है। 2018 की ग्लोबल जेंडर गैप रिर्पोट ने लेबनान को महिलाओं के लिए सबसे खराब देशों में से एक माना है। वैश्विक स्तर पर लैंगिक समानता के लिए दस सबसे खराब देशों में सऊदी अरब, ईरान, माली, डेमोक्रेटिक रिपिब्लक ऑफ कांगो, चाद, सीरिया, इराक, पाकिस्तान, यमन और लेबनान शामिल हैं। 2016 में लेबनान 144 देशों में से 135 वें स्थान पर था। 2017 में वह 144 देशों में से 137 स्थान पर गिरा, और 2018 में लेबनान, मिस्त्र, ट्यूनीशिया, मोरक्को, जॉर्डन और बहरीन सहित अधिकांश पड़ौसी अरब देशों के पीछे 149 देशों में से 140 वें स्थान पर है।

लेबनान के नागरिक संघर्ष, राजनीतिक गतिरोध तथा आर्थिक अनिश्चितता के विस्तारित प्रकरणों ने लैंगिक समानता के एजेंडे को दरकिनार कर दिया है। जबकि सतही स्तर पर देश तरक्की करता प्रतीत होता है, जिसमें महिलओं के लिए उदार एवं प्रगतिशील वातावरण है, वास्तविकता में समानता कोसों दूर है।

लेबनान ने महिलाओं के खिलाफ भेदभाव के सभी रूपों के उन्मूलन पर सम्मेलन (CEDAW) और 1995 में बीजिंग में महिलाओं पर चौथे विश्व सम्मेलन सहित प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का अनुसमर्थन किया है। देश ने राष्ट्रीय महिला यंत्रावली के रूप में 1998 में लेबनान महिला आयोग और 2016 में महिला मामलों के मंत्रालय की स्थापना की। इसके साथ ही लेबनान ने महिला सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय रणनीतियों को बनाना (हालांकि उनके लिए निधि की व्यवस्था या लागू नहीं करी है) जारी रखा है। इन विकासों के बावजूद देश लैंगिक असामनता में पीछे है।

राजनीतिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी अस्वीकार्य रूप में कम है। जून 2017 में संसद ने लेबनान में महिलओं के 30 प्रतिशत संसदीय कोटे के प्रस्ताव को खारिज कर दिया। यह महिला–अधिकार कार्यकर्त्ताओं के लिए महत्वूर्ण झटका था। वर्तमान में 128 सीटों वाली संसद में केवल छः महिलायें है। लेबनान में महिलाओं ने राजनीति में स्वयं का प्रतिनिधित्व करने के बजाये "काले रंग में", पूर्व राजनेताओं की विधवाओं के रूप में आना जारी रखा है। इस प्रकार, वे नारीवादी हितों के बजाय सांप्रदयिक हितों की भरपाई करना जारी रखें हैं, जिसके कारण विभाजनकारी शक्तियों को और बढावा मिला है, जिससे लेबनान की गति अवरूद्ध हुई है।

उच्च साक्षरता दर और महिलाओं में शैक्षणिक प्राप्ति के स्तर के बावजूद आर्थिक भागीदारी एवं अवसरों में लैंगिक अंतर स्पष्ट है। 2017 में महिलाएं लेबनान की कुल श्रम शक्ति का 25 प्रतिशत हिस्सा थीं, जो कि कार्यबल में लैंगिक असमानता के उच्च स्तर को दर्शाता है। बेरोजगार वयस्क महिलाओं की दर पुरूषों की तुलना में दुगुनी है। न तो रोजगार नीतियाँ और न ही कानून समान अवसरों, वेतन अथवा कार्य–जीवन संतुलन की रक्षा कर पाये हैं। लेबनान की महिलाओं को कम से कम सामाजिक लाभ एवं मजदूरी, अथवा सुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों के रूप में अपर्याप्त परिश्रम एवं संरक्षण प्राप्त है, जिसके कारण वे महिलाओं के क्षेत्रों और अनौपचारिक अर्थव्यस्था के लिये ही उपयोगी आर्थिक, शक्ति के रूप में सिमट कर रह गई हैं। इसके अतिरिक्त, महिलाओं को वरिष्ठ भूमिकाओं में, विशेष रूप से पुरूष–प्रधान क्षेत्रों में कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है।

लेबनान में सुधार प्रयासों को देश के विभिन्न धार्मिक समुदायों के पंद्रह अलग–अलग कानूनों द्वारा अवरूद्ध किया गया है। ये निजी स्थिति संहिताऐं महिलाओं के विवाह, तलाक, विरासत, बच्चों आदि क संदर्भ में भाग्य का निर्धारण करती हैं। यह देश की उलझी हुई पित्तसत्ता की प्रबल अभिव्यक्ति है। ये संहितायें पति–पत्नी के बीच असमानता का समर्थन करती हैं तथा उनके जीवन के सभी पहलुओं में महिलाओं के साथ खुलेआम भेदभाव करती हैं। परिणामस्वरूप देश के विभिन्न धार्मिक न्यायलयों द्वारा महिलाओं के शरीर और जीवन को विनियमित किया जाता है।

लेबनान की कानून प्रणाली में लिंग आधारित हिंसा के कुछ रूपों के खिलाफ सुरक्षा शामिल हैं, परन्तु इसके सुसंगत और समान प्रवर्तन में गंभीर कमी है तथा घटनाऐं सापेक्ष दण्डमुक्ति के कारण चलती रहती हैं। अंतरग साथी हिंसा देश में लिंग आधारित हिंसा का सबसे व्यापक रूप है। 2014 में घरेलू हिंसा के संरक्षण के कानून को लेबनान की संसद द्वारा अपनाया गया था, लेकिन यह नया कानून वैवाहिक बलात्कार को अपराध के रूप में मान्यता देने में विफल रहा।

2017 में, संसद द्वारा दण्ड संहिता के अनुच्छेद 522 को समाप्त कर दिया गया, जिसके अन्तर्गत बलात्कारी द्वारा पीड़िता से शादी करने पर अभियोजन पक्ष को उसके खिलाफ आरोप छोड़ने की अनुमति थी। साथ ही 2017 में सार्वजनिक स्थानों और कार्य–स्थलों पर यौन उत्पीड़न के अपराधीकरण के लिए एक कानूनी मसौदा तैयार किया गया था। आज तक, यह मसौदा ही बना हुआ है।

वर्षों की वकालत के बावजूद लेबनान में ऐसा कोई भी कानून अस्तित्व में नहीं है जो बाल–विवाह को प्रतिबंधित करता हो। इस संबंध में निर्णय लेने का अधिकार धार्मिक अदालतों के हाथों में सौंपा हुआ है। यह मुद्दा शरणार्थियों के मामले में और बिगड़ता है : सीरियाई शरणार्थियों के बीच बाल–विवाह की दर मौजूदा संकट की प्रतिक्रिया के रूप में बढ़ रही हैं, और शादी के लिए मजूबर लड़कियों के पास लेबनान सरकार से कानूनी सुरक्षा का कोई प्रावधान नहीं है। यह चेतावनी के रूप में कार्य करता है कि संघर्ष से बच कर निकलना आवश्यक रूप से महिलाओं और लड़कियों के लिए सुरक्षा नहीं लाता।

लेबनान का मामला संपूर्ण रूप में अरब क्षेत्र को दर्शाता है : समानता प्राप्त करने के लिए अभी और बहुत से काम किए जाने की हैं। इस परिवर्तन को तेज करने के लिए क्षेत्र को प्रतिबद्ध होना चाहिए; 153 साल का इंतजार कोई विकल्प नहीं है। ■

सभी पत्राचार लीना अबीराफेह को<lina.abirafeh@lau.edu > पर प्रेषित करें।

> लैंगिक श्रम और असमानता

एशियाई संदर्भ में

निकोला पाइपर, क्वीन मैरी विश्वविद्यालय, लंदन, यूके और सदस्य, आई.एस.ए. की निर्धनता, सामाजिक कल्याण एवं सामाजिक नीति (आर.सी. 19) की शोध समिति द्वारा।

एशिया महत्वपूर्ण "दक्षिण–दक्षिण" या अंतर–क्षेत्रीय प्रवास घर है। अंतराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुमानों के अनुसार, 2013 में 150.3 मिलियन प्रवासी श्रमिक थे जिसमें से 83.7 मिलियन पुरूष थे और 66.6 मिलियन महिलाएँ थी। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार एशियाई प्रवासी स्टॉक में महिलाओं का अनुपात वैश्विक स्तर पर 48.4 प्रतिशत की तुलना में करीब 42.7 है। अधिकांश रूप से यह एशिया में पुरूष प्रवासियों की संख्या एवं अनुपात में तीव्र वृद्धि के कारण है जिसने महिला प्रवासियों में वृद्धि को पीछे छोड़ दिया है।

1990 एवं 2000 के मध्य, शीर्ष दस द्विपक्षीय कोरीडोर में से केवल तीन एशिया में थे लेकिन 2010 और 2017 के मध्य यह संख्या बढकर छह हो गई। खाड़ी उप–क्षेत्र (संयुक्त राष्ट्र द्वारा "पश्चिमी–एशिया" के रूप में वर्गीकृत) के गंतव्य देशों एंव दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में स्थित स्त्रोत देशों के मध्य कोरीडोर खाड़ी देशों में गैर–नागरिक निवासियों के अत्यधिक उच्च प्रतिशत के कारण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है: कतर और संयुक्त अरब अमीरात की कुल आबादी में प्रवासियों का उच्चतम अनुपात, 90 प्रतिशत और 88 प्रतिशत क्रमशः है जिनमें से कई महाद्वीप के भीतर से और अधिकाधिक अफ्रीका से आते हैं। एशियाई प्रवासियों के लिए अन्य प्रमुख एशियाई गंतव्य स्थल दक्षिणपूर्ण एशिया (सिंगापुर, मलेशिया) एवं पूर्व–एशिया (कोरिया, ताइवान, जापान) के उच्च आर्थिक प्रदर्शन करने वाले देश हैं। प्रवासियों के मुख्य स्त्रोत देश फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका, बंग्लादेश और वियतनाम हैं।

1970 के दशक के बाद से बड़े पैमाने पर, लगातार जनसंख्या के संचरण को अनुभव करने के बाद, एशिया के प्रवास पैटर्न एवं लक्षण विद्वानों और कार्यकर्ताओं के मध्य बढती हुई रूचि का विषय बन गये हैं। अंतर एशियाई प्रवास की एक अनूठी विशेषता उसका प्रभावी नियामक ढॉचा है जो नियोक्ता से बंधे कड़े परमिट जो प्रवासियों को दो से चार वर्ष के लिए, यदि अस्थाई नवीनीकरण हो तो, विदेश में कार्य करने का अवसर प्रदान करता है, के रूप में आता है। अधिकांश कम कुशल, कम–वेतन वाले कामगार परिवार के एकीकरण और स्थाई रहवास के अवसर को खुद प्राप्त नहीं कर सकते हैं। अस्थाई संविदा प्रवास "एकल कामगार" की प्रघटना का प्रतीक है जिसमें पुरूष प्रवासी आम तौर पर उत्पादन क्षेत्रों (जैसे निर्माण) में कामगारों की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं और महिला प्रवासी मुख्य रूप से प्रजनन – यानि की देखभाल सम्बन्धित क्षेत्र, विशेष रूप से घरेलू कार्य, यद्यपि वे विनिर्माण और अन्य प्रकार की नौकरियों में भी देखी जा सकती है, पायी जाती हैं।

इस क्षेत्र में घरेलू और देखभाल क्षेत्र पर स्पष्ट रूप में महिला प्रवासी हावी हैं। पश्चिम एशिया में जहॉ घरेलू कार्य में माली, ड्राइवर, सुरक्षा प्रहरी एवं रसोइये भी सम्मिलित हैं, पुरूष प्रवासियों को भी इस क्षेत्र में रोजगार मिलता है: अरब क्षेत्र के सभी घरेलू कामगारों का 10 प्रतिशत पुरूष हैं। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार, पंद्रह वर्ष की आयु के कम से कम 53.6 मिलियन महिला और पुरूष का मुख्य कार्य घरेलू कार्य है। कुछ स्त्रोत इस संख्या को 100 मिलियन होने का सुझाव देते हैं। घरेलू कामगार रोजगार, औद्योगिक देशों के कुल रोजगार का, कम से कम 2.5 प्रतिशत और विकासशील देशो के कुल रोजगार का 4 प्रतिशत से 10 प्रतिशत के मध्य हैं। लैंगिक संदर्भ में, महिलाएं घरेलू कार्यबल (83 प्रतिशत पर) में भारी बहुमत से हैं जो दुनिया भर में महिलाओं के रोजगार का 7.5 प्रतिशत है। ज्यादातर महिला घरेलू कामगार अपने परिवार को पीछे छोड, अपर्याप्त रूप से विनियमित या फिर अनियमित, असुरक्षित और आमतौर पर कम–वेतन वाली नौकरियों के लिए हजारों मील की यात्रा करती हैं।

वैश्विक प्रवासी अनुसंधान एवं नीति में व्यापक रूप से काम में लिये जाने वाली "देखभाल श्रंखला" जैसी अवधारणाएँ एशियाई देशों के प्रवासियों के अनुभवों पर आधारित हैं। प्रवासी महिलाएँ अधिक विकसित अर्थव्यवस्थाओं में देखभाल कामगारों की आवश्यकता को पूरा करती हैं जिसके परिणामस्वरूप प्रवासी महिलाओं के गृह देशों में देखभाल की कमी होती है। प्रवासी घरेलू श्रम के रूप में वैश्विक देखभाल श्रंखलाओं द्वारा देखभाल के वस्तुकरण के दूरगामी सामाजिक–आर्थिक प्रभाव है, जो वृहत अर्थशास्त्र के पूर्वानुमान के परे जाते हैं। इनको काफी हद तक नजरअंदाज किया गया है और पीछे रहने वाले परिवारों के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों को नीति निर्माताओं द्वारा सम्बोधित नहीं किया गया है।

यह तथ्य कि अधिकाश अंतर–एशियाई प्रवासी कार्यबल कम वेतन वाले क्षेत्रों में काम करते हैं, का प्रवास और विकास के मध्य संबंधों पर बहस को पुनर्जीवित करने के लिए निहितार्थ है। हाल के वर्षों में प्रवास–विकास की तरफ सकरात्मक झुकाव, कौशल लाभ या "बुद्धि संचरण" के अनुमान पर आधारित है जिससे मूल देश को

>>

सरकारी नीति फ्रेमवर्क मुख्य रूप से प्रवास को नियन्त्रण करने और विदेशी कामगारों से आर्थिक लाभ प्राप्त करने से सम्बन्धित हैं। ये प्रवासियों के मानवाधिकारों के प्रति केवल दिखावटी प्रेम दिखाते है।

लाभ होता है। यह उस कार्य को नजरअदांज करता है जिसमें अधिकांश अस्थायी कामगार प्रवासी, विशेषकर प्रवासी महिलाएँ संलग्न होती है। पूरे दक्षिण और दक्षिणपूर्व–एशिया में "कम–कुशल" कामगार बडी संख्या में अत्यधिक निरूद्ध परिस्थितियों में विदेशी रोजगार में प्रवेश करते हैं। अक्सर यह खाडी देशों में व्यापक रूप से उपयोग में ली जाने वाली नियोक्ता–प्रायोजित वीजा स्कीम – कफला प्रणाली या निजी भर्ती दलाल या एजेंट, जो प्रवास प्रक्रिया के दोनों छोर पर हेरफेर करते हैं, के जाल के अन्तर्गत अल्पकालिक अनुबंधों के तहत होता है। विवेचनात्मक शोध दर्शाता है कि देखभाल कार्य वस्तुकरण किसी प्रकार की "मानवीय पूंजी" के अधिग्रहण को अग्रेषित नहीं करता है और इसका मजदूरी और जीवन स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। किसी प्रकार का ''कौशल'' प्राप्त ही नहीं अपितु विकसित भी नहीं किया जाता है। प्रजनन कार्य की अदृश्यता इन परिणामी देखभाल घाटे के विकासात्मक नतीजों को उलझाती है। इसके प्रेषित करने वाले देशों के लिए निहितार्थ हैः प्रवासी घरेलू कामगारों के निर्गमन को उनके द्वारा उत्पन्न बडे पैमाने पर विप्रेषण अंतर्वाह को उत्साह से देखा गया। लेकिन इसके द्वारा निर्मित व्यापक देखभाल घाटे के सामाजिक–आर्थिक या विकास संबंधी निहितार्थों पर कोई पर्याप्त विचार नहीं किया गया है। प्रमुख सरकारी विमर्श और नीतिगत ढॉचा जो केवल विप्रेषण पर फोकस करता है प्रवासियों के योगदान को बढाने का कार्य करता है और परिवारों में प्रवासन की सामाजिक लागतों की उपेक्षा करता है।

यह विकास पैराडाइम प्रवासी महिलाओं के निजी अनुभवों और प्रवासन में सम्मिलित लागत को अनदेखा करता है जिसके फलस्वरूप वह उनके अधिकारों, सुरक्षा एवं अनूठी विषयपरकता पर ध्यान देने में विफल रहता है। सरकारी नीति फ्रेमवर्क मुख्य रूप से प्रवासन को नियन्त्रित करने (अर्थात, व्यक्तियों के प्रस्थान और प्रवेश और श्रम बाजार या नौकरियों तक उनकी पहुॅच) और विदेशी कामगारों से आर्थिक लाभ ऐंठने एवं प्रवासियों के मानवाधिकारों के लिए केवल दिखावटी प्रेम जाहिर करने से सम्बन्धित है।

संक्षेप में, एशियाई राज्य आम तौर पर लैंगिक–संवेदनशील प्रवासन नीतियों को बनाने से बचते है जो महिलाओं की सीमा–पार श्रम गतिशीलता की सुविधा प्रदान करती हैं। बल्कि, कुछ देश सुरक्षा की आड़ में महिलाओं के श्रम प्रवास पर कानूनी प्रतिबंध लगाते हैं। फिर भी अधिकांश मेजबान देशो में श्रम कानून महिला प्रवासियों, जो संरचनात्मक कारकों एवं लिंग, वर्ग, आयु, जातीयता एवं राष्ट्रीयता पर आधारित मेदभाव के परस्परछेदन से प्रभावित हैं, के अधिकारों की असंतोषजनक ढंग से रक्षा करते हैं। ये कारक उनके द्वारा सामना की गई चुनौतियों को और बढ़ा देते हैं।

इसके परिणामस्वरूप, महिला प्रवासी जो अर्थव्यवस्था के नारीकृत क्षेत्रों में संकेन्द्रित हैं जहॉ मजदूरी कम होती है (जैसे घरेलू कार्य या वस्त्र निर्माण) अन्य क्षेत्रों के कामगारों के समान श्रम अधिकार एवं सामाजिक सुरक्षा नहीं पाती हैं। संरचनात्मक असमानताएँ, मूल देशों के श्रम बाजारों में लैंगिक भेदभाव और प्रतिबंधक आव्रजन नियंत्रण संगठित हो जाते है ताकि आम तौर पर महिलाओं के पास प्रवास करने के मार्ग कम हो, और उनकी भर्ती करने वालों (व्यक्ति और संगठन जिन्हें वे अपनी प्रवासन प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए भुगतान करती हैं) की तरफ मुड़ने की संभावना अधिक होगी। पुरूषों की तुलना में महिलाओं की कम कुशल अस्थाई कामगार योजनाओं या बिना श्रमसंघ प्रतिनिधित्व के अक्सर अनियमित क्षेत्रों में श्रम करने हेतु बिना दस्तावेजी चैनलों के माध्यम से प्रवास करने की संभावना अधिक होती है। सामाजिक–आर्थिक असुरक्षा का उच्च स्तर, भूगौलिक पृथक्करण एवं अस्थायी महिला प्रवासी कामगारों के राजनैतिक विमुक्ति एशिया में लैंगिक असमानता के केन्द्र में हैं। ■

सभी पत्राचार निकोला पाइपर को <n.piper@qmul.ac.uk> पर प्रेषित करें।

> आईपीएसपी : सामाजिक प्रगति

कुछ लैंगिक चिंतन

जेफ हर्न, हांके स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स, फिनलैंड, आंरेब्रो विश्वविद्यालय, स्वीडन, और
हडरसफील्ड विश्वविद्यालय, यूके, एवं सदस्य, महिला, लिंग एवं समाज पर आईएसए की शोध समिति (आरसी 32)

सामाजिक प्रगति रिपोर्ट के अंतर्राष्ट्रीय पेनल में लगभग 300 शोधकर्ता शामिल है।
क्रेडिटः सोफी वाल्थरस (2015)

इंटरनेशनल पेनल ऑन सोशल प्रोग्रेस (IPSP, http://www.ipsp.org/) की परिकल्पना 2012 के आसपास और 2013 की शुरूआत में, एक बडे स्वतंत्र गैर–सरकारी सामाजिक विज्ञान ऑपरेशन के रूप में थी गई थी जो कुछ हद तक जलवायु परिवर्तन पर अंतर–सरकारी पैनल (आईपीसीसी) के समानांतर था। मई 2013 को "थिंक ग्लोबल" सम्मेलन में इस विचाार पर चर्चा की गई (https://penserglobal.hypotheses.org/35) और फिर अधिकारिक तौर पर संचालन समिति और वैज्ञानिक परिषद की पहली बैठकों के साथ 2014 की गर्मियों में इसकी शुरूआत की गई। कई प्रमुख सामाजिक वैज्ञानिकों जैसे अमर्त्य सेन, हेल्गा नोवोटनी, रवि कन्बुर और एलिसा रीस आदि के सहयोग के साथ मार्क (प्रिंसटन विश्वविद्यालय) एवं ऑलिविसर बुइन (आरएफआईइए) इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के प्रमुख नेता रहे हैं।

कुल मिलाकर इसका उद्देश्य सामाजिक प्रगति के आयामों के व्यापक कवरेज का उत्पादन; अभी तक उपलब्ध सामाजिक विज्ञान के ज्ञान को अधिक सुलभ और प्रासंगिक बनाना; संभावित भविष्य से जुड़े विचारों को न केवल सरकारों अपितु सामाजिक नेताओं व नागरिको तक पहुँचाना; सार्वजनिक बहस को प्रभावित करना; और विद्वानों के बीच सामाजिक न्याय में रूचि बढ़ाना और दीर्घकालिक संभावित सोच को बढ़ाना है।

अप्रेल 2015 में मुझे पहली वृहत लेखक कांग्रेस जिसका आयोजन अगस्त 2015 इस्तानबुल में किया गया था, जिसमें विश्व भर के 200 के करीब प्रमुख सामाजिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया था, का निमंत्रण मिला। प्राप्त निमंत्रण सामूहिक उप–समूहों अथवा चेप्टर में से एक, जिसका शीर्षक "प्लूराइजिग फैमिली, जेंडर, सेक्सुआलिटी" था, से जुड़ने के लिए था। इस आमंत्रण और घटना के मध्य 'प्लूराइजिंग फैमिली, जेंडर, सेक्सुअलिटी' का नाम बदलकर प्लूरलाइजेन ऑफ फैमिलिज' कर दिया और जेण्डर को मुख्य धारा में लाया गया। इसका सीधा अर्थ था कि कौन किस उप–समूह में होगा में कुछ परिवर्तन किए जाए और आखिरकार, मुझे उपांतिम उप–समूहः "सामाजिक प्रगति की बहुल दिशाएँः आगे के रास्ते" में रखा गया। साथ ही लिंग पर एक क्रॉस–कटिंग समूह बनाने के लिए मुझे लिया गया (इस पर अधिक शीघ्र ही)। जनवरी 2017 में लिस्बन में दूसरी बड़ी कांग्रेस का आयोजन किया गया था।

>>

प्रकाशित आईपीएसपी आख्यानों में सहयोगी लेखको को मिलाकर करीब 282 से अधिक लेखक हैं। विभिन्न समितियों और वैज्ञानिक बोर्ड के सदस्यों के साथ यह संख्या करीब 350 तक पहुंचती है। शुरूआत में, राजनीतिक वैज्ञानिक कुल लेखकों के करीब एक चौथाई थे; समाजशास्त्री और अर्थशास्त्री प्रत्येक मात्र कुछ पांचवां हिस्सा थे; बचे हुए लेखक शेष अन्य सामाजिक विज्ञानों में से थे, जिनमें से कुछ मानविकी से थे। इसमें से अधिकांश यूरोप एवं उत्तरी अमरीका से थे जिसमें पर्याप्त अल्पसंख्यक दुनिया भर से थे; इस संख्या में लगभग 60 प्रतिशत पुरूष थे। आईपीएसपी के मुख्य सिद्धांतों में उर्ध्वगामी, सहकर्मी आधारित मैत्री पूर्व तरीके से कार्य करना; सरकारी और लाबिस्ट से स्वतंत्र सी 50 सहयोगी फंडर्स, विश्वविद्यालयों तथा अन्य संस्थानों से फंडिंग; बहुअध्ययन दृष्टिकोणों और हितधारकों की प्रतिक्रियाओं को उच्च मूल्य प्रदान करना, सम्मिलित थे। लेखकों को असहमति को सम्मान व नम्रता के साथ संभालने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जिसके अंतर्गत वे अपनी विशेषज्ञता की सीमा को स्वीकार करें तथा असहमति पर सहमति जताऐं। आईपीएसपी का उद्देश्य सशर्त रूप से इस बात पर पूर्वनिर्धारित होना है कि "यदि आपका उद्देश्य यह है तो सबसे अच्छा तरीका वह है। "समान गरिमा, बुनियादी अधिकार, लोकतंत्र, कानून का शासन, बहुलवाद, कल्याण, स्वतंत्रता, गैर–अलगाव, एकजुटता, सम्मान और पहचान, सांस्कृतिक वस्तुएं, पर्यावरणीय मूल्य, न्यायिक वितरण, पारदर्शिता व जवाबदेही आदि सामाजिक प्रगति के पहचाने जाने वाले प्रमुख तत्वों में से कुछ हैं।

इस कार्य का परिणाम तीन बड़े संग्रहित ग्रंथों का प्रकाशन है: रिथिकिंग सोसायटी फॉर द 21स्ट सेन्चुरी: रिपोर्ट ऑफ द इंटरनेशलन पैनल ऑन सोशल प्रोग्रेस (21 वीं शताब्दी के लिए समाज पर पुनर्विचार: सामाजिक प्रगति पर अन्तर्राष्ट्रीय पैनल की रिपार्ट) तथा साथ ही बहु–लेखक एकल खंड–ए मेनीफेस्टो फॉर सोशल प्रोग्रेस: आइडियाज फॉर बैटर सोसायटी (सामाजिक प्रगति के लिए एक घोषणापत्र: एक बेहतर समाज के लिए विचार)। सभी का प्रकाशन कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा किया गया है। आईपीएसपी लेखक कई मंचों पर भी सक्रिय है, जैसे टी20 (जी20 का अंतर्राष्ट्रीय थिंक टैंक नेटवर्क जो 2017 में जर्मनी में व 2018 में अर्जेंटीना में मिला था), द कॉन्वरसेशन, पत्रिका के विशेषांक एवं एक प्रलेखी फिल्म (https://www.instagram.com/a_new_society/) आदि हैं।

चिंताओं के वर्णक्रम से जुड़े कुछ विचार जो तीन खंण्डो के व्यापक अध्यायों से देखे जाते है: खंड 1. सामाजिक–आर्थिक रूपांतरण: सामाजिक रूझान एवं नई भौगोलिकताऐं; सामाजिक प्रगति: एक कम्पास; आर्थिक असमानता; आर्थिक वृद्धि, मानव विकास, कल्याण; शहर; बाजार, वित्त, निगम; कार्य का भविष्य ; सामाजिक न्याय, कल्याण–क्षेम, आर्थिक संगठन; खंड 2. राजनीतिक विनियमन, शासन और सामाजिक परिवर्तन: लोकतंत्र के विरोधाभास और कानून के नियम; हिंसा, युद्ध, शांति, सुरक्षा; अंतर्राष्ट्रीय संगठन, शासन की प्रौद्योगिकियाँ; शासकीय पूंजी, श्रम एवं प्रकृति; मीडिया और संचार; खंड 3. मूल्यों, मानदंडों एवं संस्कृति में परिवर्तन: सांस्कृतिक परिवर्तन; धर्म; परिवारों का बहुलीकरण; वैश्विक स्वास्थ्य; शिक्षा; संबद्धता; सामाजिक प्रग्रति की बहुल दिशाएं; नीति और संस्थागत परिवर्तन के लिए सामाजिक विज्ञानों का योगदान। प्रत्येक विषय के लिए वर्तमान स्थिति, ऐतिहासिक और संभावित रूझान सामाजिक न्याय से प्रेरित परिवर्तन की दिशा और संचालक व बाधाओं संबंधी परिवर्तनों की जांच की जाती है। इसमें परस्पर काट विषय निम्न है: वैश्वीकरण; सामाजिक आंदोलन; और जैसा पहले बताया गया है लिंग। परस्पर काट लिंग समूह ने अध्ययाय के प्रारूपों पर टिप्पणी की और लिंग को संबोधित करने वाले लेखकों के अध्यायों पर सलाह देते हुए एक परीक्षण सूची प्रदान की है जिसमें निम्न बिन्दु शामिल है:

- लिंग को न केवल संज्ञा, चर अथवा विशिष्ट लैंगिक श्रेणियों के रूप में बल्कि लैंगिक संबंध, लैंगिक शक्ति संबंध एवं लैंगिक प्रक्रियाओं के रूप में भी देखा जाए;
- पुरूष एवं मदार्नगी तथा महिलाएं एवं स्त्रैणता दोनों के लैंगिक निर्माण तथा असमान लैंगिक शक्ति;
- लिंग के अर्थ की "महिला एवं पुरूष" के रूप में व्याख्या करना, लिंग विविधता अन्य लिंग व LGBTIQ+ की स्थितियों को कमजोर कर सकता है;
- विभिन्न समाजों में जिस प्रकार अलग–अलग तरीकों से लैगिक संबधों के संगठनों का सामान्यीकरण किया जाता है, वह विभिन्न लैंगिक व्यवस्थाओं में गलत हो सकती है;
- बच्चे चाहे "लडकी" अथवा "लड़का" हो, उन्हें कमजोर न किया जाए;
- लैंगिक समानता "लैंगिक समानता" एवं "लैंगिक साम्य" में अंतर करते समय ध्यान एवं निरंतरता बनायी रखी जाए;
- लैंगिक प्रक्रियाओं और लैंगिक व्यवस्थाओं को जहॉ तक संभव हो "लिंग तटस्थता" अथवा "गैर–लैंगिक" कार्यक्षेत्र के रूप में प्रस्तुत किया जाए। जैसे–अंतराष्ट्रीय संबंध या परिवहन;
- कामुकता में गैर–मानक यौनताओं का समावेश हो एवं केवल विषमलैंगिकता को पुनः पेश न करे;
- लिंग एवं कामुकता का भविष्य जैसे नवीन प्रौद्योगिकी के निहितार्थ;
- पहचान से लेकर वैश्विक सामाजिक संबंधो के सभी स्तरों पर लिंग निर्मित अन्तरानुभागीता का अध्ययन;

कुल मिलाकर आईपीएससी रिपोर्ट ने संरचनात्मक सामाजिक परिवर्तन की संभावनाओं के बारे में अत्याधुनिक ज्ञान एकत्रित करने तथा सामाजिक संस्थानों को बेहतर बनाने हेतु सिद्वांतों, संभावनाओं व तरीकों पर ज्ञान संश्लेषण का प्रयास किया है। इसके द्वारा कई सिफारिशें की गई है; उदाहरण के लिए केवल उपांतिम अध्याय में सतत् सामाजिक प्रगति की बाधाओं पर काबू पाना; बाजार की गतिविधि के गैर–पूंजीवादी रूपों का विस्तार एवं मानव जरूरतों को पूरा करने में राज्य या समुदाय की भूमिका; जीवंत सहकारी बाजार क्षेत्रों का निर्माण; पूंजीवादी फर्मों का सहकारी और श्रमिक अधिग्रहण में परिवर्तन; विशाल पूंजीवादी निगमों का लोकतांत्रिकरण; बिना शर्त बुनियादी आय; सार्वभौमिक देशभाल संबधी सेवाऐं; संस्थानों और नीति में शक्तिशाली एवं विशेषाधिकार प्राप्तों का नामकरण और परिवर्तन, वैश्विक दक्षिण से सीखने के साथ ही नीतिगत विकास के लिए पार–देशीय, अंतर–संगठनात्मक गठजोड का निर्माण; समानता की कार्यसूचियों को "अचिह्नित" एवं पार–देशीय नीतिगत क्षेत्रों तक विस्तृत करना; लोकतंत्र का लोकतांत्रिकरण, तथा बजट भागीदारी का निर्माण आदि इसकी सिफारिशें हैं। ■

सभी पत्राचार जेफ हर्न को <hearn@hanken.fi> पर प्रेषित करें।

> निर्धनता और असमानता

अफ्रीका के लिये एक चेतावनी के रूप में दक्षिण अफ्रीका

जेरेमी सीकिंगस, केपटाउन विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका, गरीबी, सामाजिक कल्याण और सामाजिक नीति पर आइ.एस.ए की शोध समिति (आर.सी. 19) के सदस्य, और शहरी और क्षेत्रीय विकास पर आइ.एस.ए. की शोध समिति (आर.सी. 21) के पूर्व उपाध्यक्ष, द्वारा

दक्षिण अफ्रीका में नौकरी की तलाश करते हुए, जहाँ पिछले 25 वर्षों में बेरोजगार लोगों की संख्या दुगुनी हो गई है।
फोटो : जेरेमी सीकिंगस

दक्षिण अफ्रीका में निर्धनता और असमानता ने सही तरीके से काफी ध्यान आकर्षित किया है। दक्षिण अफ्रीका में पूर्ण निर्धनता – जिसकी मौद्रिक आय के मानकीकृत मापकों से गणना की गई – देश की जीडीपी को देखते हुये असाधारण रूप से ऊंची रही है और अभी भी है। यह निश्चित रूप से इसलिए है क्योंकि दक्षिण अफ्रीका में बहुत ही असमान आय वितरण है। उच्च आय निर्धनता और असमानता दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद के पूर्व और रंगभेद के तहत नस्लीय निर्वासन और भेदभाव के इतिहास की जड मे व्याप्त है। लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार के 25 साल बाद भी आय निर्धनता हठपूर्वक तरीके से उच्च बनी हुयी है और असमानता संभवतया बढ गयी हैं। यह स्पष्ट रूप से वह मामला नहीं है कि लोकतंत्र अनिवार्यतः आय निर्धनता या असमानता घटाता है।

> दक्षिण अफ्रीका में निर्धनता और असमानता की निरंतरता

निर्धनता और असमानता की निरंतरता विभिन्न कारणों को प्रतिबिंबित करती है। 2005 की हमारी पुस्तक, *क्लास, रेस एंड इनइक्वेलिटि इन साउथ अफ्रीका* (येल यूनिवर्सिटी प्रेस), में निकोली नट्रॉस और मैंने तर्क दिया है कि असमानता रंगभेद के बाद भी बची रही क्योंकि यह अब स्पष्ट नस्लीय भेदभाव से प्रेरित नहीं थी। रंगभेद के तहत, श्वेत दक्षिण अफ्रीकी लोगों ने ना सिर्फ संपत्ति और धन संपदा बल्कि मानव पूंजी (नस्लीय रूप से भेदभावपूर्ण सार्वजनिक शिक्षा के माध्यम से) और सामाजिक पूंजी भी (हमें सांस्कृतिक पूंजी भी जोड देना चाहिये था) एकत्रित की। इसका मतलब यह था कि नस्लीय भेदभाव को अधिकांश श्वेत दक्षिण अफ्रीकी लोगों के विशेषाधिकारों को कम किये बिना समाप्त नहीं किया जा सकता था। 1994 के बाद की लोकतांत्रिक रूप से – निर्वाचित सरकारों ने मुखर नस्लीय भेदभाव के अंतिम निशानियों को ध्वस्त कर दिया और अश्वेत दक्षिण अफ्रीकी लोगों के पक्ष में काफी सकारात्मक कार्यवाही आरंभ की। परंतु अधिकांश श्वेत दक्षिण अफ्रीकी लोगों का वर्ग के विशेषाधिकारों का लाभ उठाना जारी रहा। इसके विपरीत, जब कुछ अश्वेत दक्षिण अफ्रीकी नस्लीय भेदभावों के हटने से लाभान्वित और समृद्ध हुये, कई अश्वेत दक्षिण अफ्रीकी किसी भी प्रकार की पूंजी के अभाव से पीडित रहे। बिना कौशल, सामाजिक पूंजी, या भूमि के, हर दस व्यस्क दक्षिण अफ्रीकी लोगों में से चार बेरोजगार थे।

2015 की हमारी पुस्तक, *पॉलिसी, पोलिटिक्स एंड पोवर्टी इन साउथ अफ्रीका* (पेलग्रेव मैकमिलन), में नट्रॉस और मैंने इस

>>

पर ध्यान केंद्रित किया है कि लोकतंत्र में परिवर्तन के बाद गरीबों के लिये नीतियों के लिये मजबूत राजनीतिक समर्थन क्यों नहीं था। हमने स्वीकार किया कि कुछ सरकारी नीतियां गरीबों के लिये काम करती रही हैं। दक्षिण अफ्रीका में सामाजिक सहायता के कार्यक्रम अमीर करदाताओं से प्राप्त जीडीपी के असामान्य रूप से एक बडे हिस्से (3 से 4 प्रतिशत के बीच) को अधिकांश गरीब घरों में पुनर्वितरित कर रहें हैं। यह गरीबी का तो कम करता है, परंतु असमानता का नहीं। बहरहाल, गरीबी के साथ साथ असमानता भी बनी हुई है। यह प्रमुख रूप से उच्च बेरोजगारी की दरों के कारण है। लोकतांत्रिक सरकारों के 25 वर्षों में न सिर्फ बेरोजगारी की दरें बढ गयी, परंतु बेरोजगार लोंगों की संख्या भी दुगुनी हो गयी। आर्थिक विकास के लाभों में से कर–वित्तपोषित सामाजिक सहायता कार्यक्रमों के माध्यम से हुये पुनर्वितरण का छोडकर बहुत थोडे ही लाभ अत्यधिक गरीब लोगों तक धीमें–धीमें पहुंचे हैं। हमने तर्क दिया कि यह, आंशिक रूप से, श्रम–प्रधान क्षेत्रों में श्रम बाजार नीतियों के दमघोंटू प्रभाव को प्रतिबिंबित करता है।

> पूरे अफ्रीका में बढती एक प्रघटना

दक्षिण अफ्रीका के इतिहास को अक्सर इसे एक असाधारण मामला बनाने वाला माना जाता है। परंतु दक्षिण अफ्रीका में गरीबी की निरंतरता और बढती असमानता पूरे अफ्रीका में बढती हुयी एक प्रघटना का एक पूर्वानुभव है। 1990 और 2015 के बीच, अत्यधिक आय गरीबी में रह रही वैश्विक जनसंख्या का अनुपात 47 प्रतिशत से 14 प्रतिशत आकर दो–तिहाई तक गिर गया। अत्यधिक आय गरीबी में रहने वाले लोगों की अनुमानित संख्या 1990 में 2 बिलियन से कम से 2015 में 836 मिलियन रह गयी। अफ्रीका में, हालांकि, कुल गरीबी दर अधिक संयम से 57 प्रतिशत से 40 प्रतिशत के करीब तक गिर गयी, जबकि अत्यधिक आय गरीबी में रहने वाले लोंगों की पूर्ण संख्या वास्तव में बढी। जैसा कि दक्षिण अफ्रीका में, गरीबी आर्थिक विकास के बावजूद बनी हुई है। विकास के लाभों में से बहुत कम गरीब तक पहुचंते हैं। अफ्रीका में गरीबी का वृद्धि का लचीलापन 1990 और 2015 के बीच अन्य क्षेत्रों में –2 की तुलना में, सिर्फ–0.7 था, जिसका अर्थ है कि अफ्रीका में प्रत्येक 1 प्रतिशत विकास गरीबी को सिर्फ 0.7 प्रतिशत ही घटाता है, जबकि कहीं और समान विकास गरीबी को 2 प्रतिशत घटा देता है। अफ्रीका में आर्थिक विकास ने असमानता को गरीबी कम करने से अधिक बढावा दिया है।

दक्षिण अफ्रीका के विपरीत, अफ्रीका में, गरीब अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों के खेतीहर किसान रहें हैं। खेतीहर किसानों की कई क्षेत्रों (परंतु सारे नहीं) में उत्पादकता कम है और वे संपत्ति नष्ट करने वाले सूखे की चपेट में हैं। सरकारों ने अक्सर ग्रामीण जनसंख्या की उपेक्षा की है। खेतीहर किसानों पर थोपा गया "विकास" शायद ही कभी लाभकारी रहा हो। अधिकांश अफ्रीका कभी प्रचुर भूमि और श्रम के अभाव से चिन्हित था। अब यह अधिकाधिक भूमि की कमी और श्रम अधिशेष की विशेषता वाला बन गया है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में सुधार लाने और ग्रामीण गरीबी घटाने के लिये खेतीहर किसानों की उत्पादकता बढाना स्पष्ट रूप से आवश्यक है। हालांकि, इसका बढती श्रम शक्ति को अवशोषित करना मुश्किल है। परिणाम पहले से ही स्पष्ट है: युवा लोंगों के बीच बढती बेरोजगारी की दरें, जिनमें से कई शहरी क्षेत्रें में पलायन करते हैं, और जिन्हें राजनीतिक संभ्रातों के द्वारा एक राजनीतिक खतरे के रूप में देखा जाता है।

> श्रम–प्रधान निर्माण की आवश्यकता

दक्षिण अफ्रीका में और अधिकाधिक अफ्रीका के अन्य भागों में, निर्धनता को घटाने के लिये श्रम–प्रधान गैर–कृषि क्षेत्रों के विस्तार की जरूरत है। वहनीय आर्थिक विकास और गरीबी में कमी के लगभग हर ऐतिहासिक मामले में श्रम–प्रधान निर्माण का एक चरण शामिल है। हमारी नयी पुस्तक *इनक्लुसिव डुएलिस्म: लेबर इंटेसिंव डवलपमेंट, डिसेंट वर्क, एंड सरप्लस लेबर इन सॅदर्न अफ्रीका* (ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2019), निकोली नट्रॉस और मैंने डबल्यू. ऑर्थर लुईस – नोबेल पुरस्कार जीतने वाले अफ्रीकी मूल के एकमात्र अर्थशास्त्री – के क्लासिक काम का उपयोग रोजगार के विस्तार और गरीबी उन्मूलन में वस्त्र निर्माण की भूमिका की जांच करने के लिये किया है। वस्त्र गरीबों के लिये रोजगार के एक संभावित प्रमुख स्त्रोत के रूप में उद्योग अपने आप में महत्वपूर्ण है। बांग्लादेश में चार मिलियन कपडा नौकरियां कम–मजदूरी वाली हो सकती हैं, परंतु उन्होंने गरीबी कम करने में बडी भूमिका निभाई है, क्योंकि ग्रामीण महिलायें उच्च–उत्पादकता, उच्च–आय वाले रोजगार में स्थानांतरित हो जाती हैं। कपडा उद्योग कोयले की खदानों के लिये कैनरी पक्षी तरह भी कार्य करता है, जो पर्यावरण के स्वास्थ्य की ओर इंगित करता है। एक कोयले की खदान में, पिंजरे में कैद कैनरी पक्षी खदानकर्मियों के लिये गैस के द्वारा पैदा होने वाले खतरे का एक सूचक होता था। इसी तरह, यदि अधिशेष श्रम वाले देश में बढता हुआ कपडा उद्योग नहीं है, तो नीतिगत वातावरण में कुछ गलत है।

समावेशी द्वैतवाद में दक्षिण अफ्रीका से सीखे गये सबकों की एक विस्तृत चर्चा शामिल है, जहां कपडा उद्योग में रोजगार घटा है जबकि उसी समय बेरोजगारी बढ रही है। सबसे अधिक खतरनाक रूप से, दक्षिण अफ्रीका में उद्योगों में विकास के रोजगार लचीलापन संभवत नकारात्मक रहा है, जिसका अर्थ है कि बढते हुये विनिर्माण उत्पादन क्षेत्र में घटते रोजगार के साथ मिलता है। श्रम उत्पादकता बढी है, जैसा कि नियोक्ताओं ने अधिक – पूंजी और कौशल – गहन तकनीकों में निवेश किया है, लेकिन रोजगार घटा है। यह निश्चित रूप से असमानता और गरीबी के लिए नहीं तो उसकी निरंतरता के लिए एक नुस्खा है। हम इसके लिए "सभ्य कार्य कटटरवाद" को जिम्मेदार मानते हैं अर्थात, (बे)रोजगार के परिणामों की परवाह किये बिना "सभ्य कार्य" को खोजना। जब तक दक्षिण अफ्रीका और अन्य अफ्रीकी देश ऐसा वातावरण प्रदान नहीं करेंगें जिसमें कपड़ा उद्योग फल–फूल सकता है, गरीबी और असमानता बनी रहेगी।

अफ्रीका में गरीबी पर आंकडे संयुक्त राज्य के *मिलेनियम डवलपमेंट गोल्स रिपोर्ट* (न्यूयोर्क: यूनाइटेड नेशन्स, 2015), कैथलीन बीगल आदि की *पोवर्टी इन ए राइजिंग अफ्रीका*, (वाशिंगटन डीसी: वर्ल्ड बैंक, 2016) और जारोबाबल बिकाबा आदि की *एलिमिनेटिंग एक्सट्रीम पोवर्टी इन अफ्रीका: ट्रेन्डस्, पॉलिसीज् एंड द रोल्स ऑफ इन्टरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन्स*, वर्किंग पेपर 223 (एबिडजन: अफ्रीकन डवलपमेंट बैंक, 2015) से हैं। ■

सभी पत्राचार जेरेमी सिकिंग्स को
<jeremy.seekings@uct.ac.za> पर प्रेषित करें।

> दक्षिण अफ्रीका में पेंटेकोस्टलिज्म और करिश्माई ईसाई धर्म

मोकोंग एस. मपाडिमेंग, मानव विज्ञान अनुसंधान परिषद, दक्षिण अफ्रीका, सदस्य, कला का समाजशास्त्र पर आईएसए की शोध समिति (आरसी 37) द्वारा

एक पेन्टेंकोस्टल चर्च का पादरी मंडली के एक सदस्य के चेहरे पर कीटनाशक का छिडकाव करते हुए।

दक्षिण अफ्रीका में 1994 के लोकतांत्रिक चुनावों ने औपनिवोशिक रंग–भेद प्रणाली के आधिकारिक पतन और लोकतांत्रिक अश्वेत बहुमत द्वारा इसके प्रतिस्थापन ने परिवर्तन के एक ऐतिहासिक क्षण का प्रतिनिधित्व किया। परिवर्तन कई अन्य परिवर्तनों के साथ आए, और विशेष रूप से वे पुरानी संस्थानों, संरचनाओं और उनकी परिचर प्रथाओं में परिवर्तन से जुडे थे। उनमें से एक ईसाई धार्मिक आंदोलनों में अभ्युत्थान था जो पेंटेकोस्टल एवं अथवा करिश्माई ईसाई चर्चों के माध्यम से प्रकट हुआ था। हालांकि ये चर्च दक्षिण अफ्रिका के लिए नए नहीं है, लेकिन जाहिर तौर पर पहली बार ये 20वीं शताब्दी के मोड़ के दौरान उभरे। 1994 के बाद की अवधि में ये पूरे देश, शहरी केंद्रों और दूरदराज ग्रामीण इलाकों दोनों में तेजी से बढे।

इन चर्चो की तीव्र वृद्धि समस्याओं और विवादों के बिना नहीं हुई थी। हाल ही में अंतहीन विवादों से जुड़ी रिपोर्टो के साक्ष्य प्राप्त हुए है जिनमें इन चर्चों को कथित तौर पर वास्तविक ईसाई मत से विपीरत प्रथाओं में संलग्न देखा गया है। इन प्रथाओं मे लोगों को आध्यात्मिक उपचार और राक्षसी आत्माओं से लड़ाई के हिस्से के रूप में साँप, घास, पेट्रोल और कीटनाशकों को खिलाया जाता है (देखें चित्र 1 और 2)। इस पत्र–लेखन के समय नाईजीरिया में जन्मे पादरी, जीसस डोमिनियन इंटरनेशनल (जेडीआई) चर्च के टिमोथी ओमोत्सा के खिलाफ यौन–शोषण, मानव–तस्करी और डकैती से जुडें आरोपों के खिलाफ अदालत में सुनवाई चल रही है। इसी प्रकार मलावी में जन्में, एन्लाइटेंण्ट क्रिश्चियन गैदरिंग (ईसीजी) चर्च के करोड़पति पादरी शेफर्ड बुशरी और उनकी पत्नी पर, धोखाधड़ी और मनी लॉन्ड्रिंग (काले धन को वैध बनाना) के आरोप लगे हैं। इसके अलावा हाल ही में कॉगों में जन्में पादरी अल्फ लुकाऊ का वीडियों क्लिप वायरल हुआ था, जिसमें उन्होंने सिर्फ प्रार्थना करके ताबूत में पड़े एक मृत व्यक्ति को जीवन देने का दावा किया था।

इन चर्चों से जुड़े अंतहीन विवाद, जिनमें ये आरोप शामिल है कि वे निजी व्यवसायों की तरह संचालित होते है और नियामक ढॉचे की अनुपस्थिति के कारण करों का भुगतान नहीं करने से लाभान्वित होते हैं, ने दक्षिण अफ्रीकी सरकार को इन विवादों की जॉच करने तथा अवैध कारोबारी प्रणालियों की पडताल हेतु एक आयोग की नियुक्ति करने के लिए प्रेरित किया। यह कार्य सांस्कृतिक धार्मिक और भाषायी समुदायों के अधिकारों के संवर्धन और संरक्षण आयोग को सौंपा गया था। यह जॉच धोखाधड़ी से सबंधित चर्चों की कथित समस्या को संबोधित करने के लिए थी, जिन्हें लोगों की आत्मा व भावनाओं को आहत करने के रूप में देखा गया था। सदस्यों के निर्धनता में रहने के बावजूद इनमें से कुछ चर्च, चर्च के नेताओं द्वारा व्यावसायिक लाभ के लिए स्थापित किए गए थे।

पेंटेकोस्टल और/या करिश्माई चर्चो की बढती लोकप्रियता और विवादों के बीच असाधारण बात यह है कि इनमें समाजशास्त्रीय वृतान्तों की कमी है। यह लक्षण इस तथ्य के कारण है कि दक्षिण अफ्रीका में, धर्म का समाजशास्त्र अभी भी काफी हद तक अविकिसित है। नतीजतन इन चर्चों से सम्बन्धित समाजशास्त्रीय प्रश्नों

>>

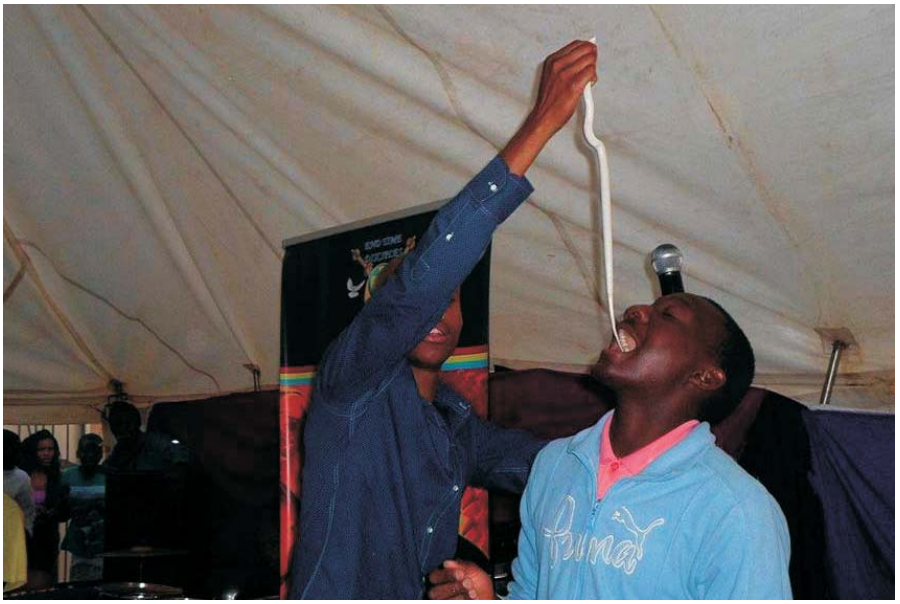

पेटॉकोस्टल चर्च का पादरी मंडली के सदस्य को जिंदा सॉप खिलाते हुए।

की एक पूरी श्रृंखला को अनुतरित और अस्पष्टीकृत छोड देता है, जिनमें से कुछ निम्न है: इन चर्चों की छत्रक बाढ़ और तीव्र वृद्धि तथा दक्षिण अफ्रिकीयों में इनकी लाकप्रियता की किस प्रकार व्याख्या की जाए? इन चर्चों के लिए मंडलियों के रूप में दक्षिण अफ्रीकी समाज के कौन से खंड सक्रिय हैं? इन चर्चो से जुड़े नेता कौन हैं? तथा वे इतने करिश्माई कैसे बनाते हैं? मंडलियों के एजेंटों में प्रतीत होने वाली निष्क्रियता को इन चर्चों के भीतर जहरीली और खतरनाक प्रथाओं के रूप में समझे जाने वाले अनुभवों की किस प्रकार व्याख्या की जाए?दक्षिण अफ्रीका में धार्मिक संगठनों के लिए विनियामक ढॉचों की क्या व्यवस्था है, एवं क्या वे इनका उल्लंघन करते हैं?

प्रारम्भिक समाजशांस्त्रीय वृतांत प्रदान करने के एक मामूली प्रयास के रूप में, मैं धर्म पर एक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य और समाज के भीतर इसकी भूमिका को सूचीबद्ध करने का प्रयास कर रहा हूँ। यह परिपेक्ष्य इस बात की पड़ताल करता है कि धर्म को कैसे समझा जाता है अर्थात समाज में उसकी क्या भूमिका और प्रभाव है। पारिभाषिक स्तर पर, इनको लेकर कुछ असहमतियाँ हैं, जिसे जेम्स ए, बेकफोर्ड, इस तथ्य की विशेषता के रूप में समझाते हैं कि – धर्म एक सामाजिक निर्माण है जो विशिष्ट सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहाससिक संदर्भो में निर्मित एवं सूचित होते हैं तथा जो इसे विविध गतिशील एवं अनिश्चित अर्थ प्रदान करते है। यह दृष्टिकोण 1994 के पश्चात के दक्षिण अफ्रीका में पेंटेकोस्टल और करिश्माई चर्चों की तीव्र वृद्धि को समझने में सहायक है। यह एक राजनीतिक क्षण था जिसने "सभी के लिए बेहतर जीवन" का वादा किया था, एक ऐसा आदर्श जिसे आज तक पूरा नहीं किया जा सका है। गरीबों के लिए मूलभूत सेवाओं के बड़े पैमाने पर प्रावधान के माध्यम किए गए कुछ सुधारों के बावजूद स्थिति वैसी ही है। दक्षिण अफ्रिका की धीमी वार्षिक आर्थिक वृद्धि, जो वर्तमान में सिर्फ 2.2 प्रतिशत दर्ज की गई है, रोजगार के महत्वपूर्ण स्तरों को उत्पन्न करने में असफल रही है (अधिकारिक बेरोजगारी 27 प्रतिशत से अधिक है)। देश का गिनी गुणांक 0.63 है जो विश्व में उच्चतम में से एक है जिसके परिणामस्वरूप गरीबी एवं असमानताएं बिगड़ती जा रही है। नैतिक पतन और अनियंत्रित भ्रष्टाचार में उल्लेखनीय राजनैतिक रूप से जुड़े कुलीनों द्वारा स्व–संवर्धन हेतु सार्वजनिक धन की लूट ने इस स्थिति को और गहन कर दिया है। इस पत्र के लेखन के समय दो आयोगों की जाँच चल रही है जिसमें राज्य द्वारा भ्रष्ट कॉर्पोरिट हितों भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी में पकडे एवं तथा कथित रूप से संलग्न व्यक्तियों की जांच जारी है।

यह संदर्भ दक्षिण अफ्रीकी लोगों के बीच करिश्माई चर्चों की घातीय वृद्धि और लोकप्रियता की व्याख्या करता है। ये चर्च अपने अनुयायियों को गरीबी, खराब स्वास्थ्य और बेरोजगारी के साथ–साथ भौतिक धन के रूप में उनके कष्टों के एक चमत्कारिक अंत के रूप में आशीर्वाद देने का वादा करते हैं। इस उद्देश्य हेतु वे मंडालियों को वित्तीय दान करने के लिए प्रोत्साहित करने हैं जो अंततः पादरियों को अति–धनाढ्य बना देते हैं। बेकफोर्ड का अवलोकन इस बात पर सटीक था कि धर्म एक गैर–समरूप, जटिल एवं विविध सामाजिक निर्माण है जो उस ध्येय पर निर्भर है जिसे प्राप्त करने के लिए उसका उपयोग किया जाता है। पेन्टेकॉस्टलिज्म के अनोखे करिश्माई तत्व, जिसमें चमत्कारी उपचार शामिल है, पादरियों जो स्वयं को चमत्कारिक प्रदर्शन करने वाले पैगम्बर के रूप में प्रस्तुत करते हैं, द्वारा आत्म–संवर्धन हेतु काम में लिये जाते है। स्टीव ब्रूस के अनुसार, धर्म के प्रभाव को इस विश्वास के बढ़ाया जाता है कि पृथ्वी पर ईश्वरीय इच्छा का कार्यान्वयन का पुरस्कार अगले जीवन में अनंत आनंद एवं कई गुना अधिक समृद्धि के रूप में मिलेगा, जो यह भौतिक संसार देने में अक्षम है। दक्षिण अफ्रीका में पेंटेकोस्टलवाद और करिश्माई की वर्तमान लहर समकालीन दुनिया में भौतिक पुरस्कारों पर जोर देती है।

ईसाई मिशनरी चर्चों और पश्चिमी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से प्राप्त उपनिवेशवाद के ऐतिहासिक प्रभावों की ओर संकेत किए बिना निष्कर्ष निकालना आसान नहीं है। विशेष रूप से ईसाई चर्चों की मिशनरी भूमिका अफ्रीकियों को उनके पूर्व–औपनिवेशिक विश्वास बदिमों या अमोडलोजी (पूर्वज) से दूर करने के रूप में देखा जो सकता है जो मोडिमो उनुकुलकुलू (ईश्वर) तक पहुँचने हेतु आध्यात्मिक माध्यमों के रूप में कार्य करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि परिवर्तित अफ्रीकियों द्वारा बदिमों या अमाडलोजी को शैतानी आत्मा के रूप में स्थापित कर दिया गया। इस प्रक्रिया ने औपनिवेशिक सैद्धांतिक अवधारणाओं एवं श्रेणियों पर आधारित शिक्षा प्रणाली के जरिए उपनिवेशीकरण की एक सफल परियोजना का संकेत दिया है। यह ब्रूस के दृष्टिकोण को प्रमाणित करता है कि धर्म ईश्वर के नाम पर अथवा समान विश्व–विज्ञान के साथ जोड़कर सामंजस्य को बढ़ावा दे सकता है अथवा पहले से मौजूद व्यवस्था में परिवर्तन अथवा उसे बाधित कर सकता है। ■

सभी पत्राचार मोकोंग एस मपाडिमेंग को <mmapadimeng@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> स्थान लंघनकारी भूमिगत महिला खनिक

असांदा बेन्या, केन टाउन विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका द्वारा

खानों में कार्य करते हुए।
फोटो : असांडा बन्या

महिलाओं को दक्षिण अफ्रीका की खानों में भूमिगत कार्यबल में शामिल हुए पंद्रह साल हो गए है। वर्तमान में खननः कार्य में करीब 50,000 महिलाऐं है; जिनमें से लगभग 10.9 प्रतिशत स्थायी खनन कर्मचारी हैं। यद्यपि खनन, कार्यबल में 11 प्रतिशत के करीब महिलाऐं है तथा उनके इस प्रक्रिया में समावेशन को सुविधाजनक बनाने एवं इस प्रक्रिया में तेजी लाने वाले कानूनों को अपनाया गया है, यह उघोग अभी भी स्वंय को कल्पानात्मक रूप से पुरूष प्रधान के रूप में प्रस्तुत करता है तथा केवल पुरूषों एवं पुरूष शरीरों को भूमिगत खनन के लिए उपर्युक्त के रूप में चित्रित करता है। खनन व्यावसायिक संस्कृति में तथा विमर्श में भूमिगत खनन के लिए पुरूष निकायों की यह उपयुक्ता लगभग प्राकृतिक और शाश्वत है।

पूर्व अपवर्जनों के निवारण हेतु बनाए गए कानूनों के बावजूद, खनन कार्य में पुरूष निकायो के प्राकृतिकरण ने अनजाने में महिलाओं के अपवर्जन को सुगमता प्रदान की है। जैसा कि मैं अन्यत्र तर्क देती हूँ कि दक्षिण अफ्रीकी खानों में महिलाऐं "बहिष्कृत होते हुए समाविष्ट" हैं। निस्संदेह, उन्हे निर्मल पुवार के शब्दों में स्थान लंघनकारी का उपयोग करते देखा जा रहा है और इस तरह "भटकाव की स्थिति एवं सत्तामूलक चिंता" की स्थिति पैदा कर रही हैं। महिलाओं पर न केवल उत्पादकता और सुरक्षा को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने का आरोप लगाया गया है, बल्कि खदानों के अंदर और बाहर दोनो क्षेत्रों में नारीत्व संबधी सामाजिक मानदंडो के अनुरूप नहीं होने के लिए भी कलंकित किया गया है, साथ ही उनकी नैतिकता पर भी सवाल उठाए गए हैं।

जहाँ सैद्धान्तिक तौर पर महिलाऐं किसी भी प्रकार के भूमिगत पेशे को अपना सकती हैं, वास्तविकता में उन्हें नियत प्रकार के कार्यों को लेने से रोक दिया जाता है। मेरे द्वारा सभी शाफ्टों में जहॉ शोध किया गया यह देखा गया कि महिलाऐं चटट्ान–छेदक प्रचालक का कार्य नहीं कर सकती थी तथा इनमें से बहुत कम लैशर्स या चरखी चालक थी। कुछ चरखी चालकों जिनके साथ मैनें कार्य किया, ने शायद ही कभी भूमिगत चरखी पर काम किया। संरक्षणवादी विमर्श का उपयोग करते हुए, खदानें, महिलाओं को भर्ती करने, प्रक्षिक्षित करने एवं कुछ भूमिगत व्यवसायों को आंवटित करने में रणनीतिक रूप से इनकार करती हैं। यह इस तथ्य के बावजूद है कि "कठोर भूमिगत पेशों" से उनकी रक्षा करना भी उन्हें आर्थिक रूप से नुकसान पहुँचाता है, क्योंकि कुछ दृष्टांतो में वे पुरूषों के समान उत्पादन बोनस का दावा नहीं कर सकती हैं।

नीचे मैं, कई घटनाओं में से एक का उल्लेख कर रही हूँ जो यह बताती है कि सांस्कृतिक और संरक्षणवादी संवादों में

>>

लिपटाकर महिलाओं के बहिष्कार को कैसे आगे बढ़ाया जाता है। जबकि आंलकारिक रूप से समावेशीयता का उपदेश देते हुए इसका नित्य अतिक्रमण किया जाता है, जिसमें कईयों को सह–अपराध में भर्ती कर बहिष्करण की भावना को दृढ़ किया जाता है।

अपने शोध के शुरूआती चरणों में जब मैं चरखी चालक होने का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थी, मुझे बताया गया कि महिलाओं को ड्रिलिंग कक्षा में आने अनुमति नहीं थी। उनके इस बहिष्कार के कारण उनके शरीर पर आधारित थे, जिसे प्रशिक्षक और खदान ड्रिलिंग मशीन के सचांलन के लिए अनुचित और "अत्यन्त नाजुक" मानते थे। प्रशिक्षकों ने तर्क दिया कि ड्रिलिंग मशीन महिलाओं के गर्भ को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। मेरे मामले में ड्रिलिंग कक्षा में शामिल होने और अंततः अनुमति देने के बाद, मुझे सख्ती से केवल निरीक्षण करने और कुछ भी नहीं छूने का निर्देश दिया गया था क्योंकि "गर्म निखनन और ड्रिलिंग" पुरूषों के लिए थे और महिलाओं की शारीरिक रचना के साथ असंगत थे। मशीनों के डिजाइन और उत्खनन में वायु–संचार को कारणों के रूप में उद्धत नहीं किया गया था।

प्रशिक्षण केंद्र में कुछ सत्र और अवलोकन के कुछ दिनों बाद सभी नव–नियुक्तों को मशीनों पर कार्य करने का मौका दिया गया और उन्हें प्रशिक्षकों और अनुभवी कार्यकत्ताओं को निकटता से नकल करने के लिए प्रोत्साहित किया गया जिसके अंतर्गत वे मशीन पर किस प्रकार अपने पैरों को फैलाकर तथा जाघों को कसकर मशीन पर बैठते हैं तथा उनकी श्वास एवं शारीरिक ताल कैसी होती है। हालांकि जब मेरी बारी आई तब सबक अलग था। शुरूआत में प्रशिक्षक ने मुझे मशीन संचालन करने से यह कह कर मना किया कि महिलाऐ मशीनों पर पैर फैलाकर नहीं बैंठ सकती हैं। तथापि मशीन को भीतर प्रविष्ट कराने एवं स्थिर बने रहने हेतु मशीन पर पैर फैला कर बैठना जरूरी था। हालांकि मेरे प्रशिक्षक ने मुझे अपने पैरों को एक साथ लाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि "मेरे दोनो पैर एक महिला की तरह एक तरफ होने चाहिए।" यह इस बात के बावजूद था कि मैं मशीन – लड़कों को नीचे धकेलते हुए देख रही थी। वे उन्हें बता रहे थे कि वे अपने पैरों को चौडा रखे और मशीन पर बने रहें तथा इसे अपनी जांघों के बीच महसूस करे और "कस के पकड़कर अंदर की और धकेलें"। उन्होंने मुझे कहा कि मैं अपने पैरों को एक साथ लाऊँ और उन्हें एक तरफ करूँ "अन्यथा आप बच्चे पैदा करने में सक्षम नहीं होगीं . . . आप अपने अडों को मार रही हैं।" श्रमिको ने भी यह टिप्पणी की कि मशीन पर महिला का पैर फैलाकर बैठना अभद्र प्रतीत होता था।

जैसा कि अपेक्षा थी, जब मैंने उनके निर्देशों का पालन कर दोनो पैरों को एक तरफ करके एक महिला की तरह ड्रिल किया तो मशीन ने मुझे खींच लिया। जब मैनें उन्हें यह बताने के लिए मशीन के बंद किया कि इस स्थिति में ड्रिलिंग कर पाना नामुमकिन है तो मेरे सिर घुमाने के पहले प्रशिक्षक ने कहा "देखिए" मैने आपको बताया था कि महिलाऐं ड्रिल नहीं कर सकती हैं, मैं इन खानों में लम्बे समय से काम कर रहा हूँ, मुझे पता है कि मै किस बारे में बात कर रहा हूँ। महिलाऐं ऐसा नही कर सकती हैं यह असंभव है ... यह मशीन भारी है (वहॉ उपस्थित सभी कर्मचारी जिन पर भी मेरी दृष्टि गई, सहमति में अपने सिर हिला रहे थे) (फील्डनोट्स रस्टेनबर्ग अप्रैल 2012)। इन पुरूषों के लिए मेरे द्वारा मशीन से खिंचे जाना इस बात की पुष्टि थी कि ड्रिलिंग हेतु महिलाओं के शरीर "अनुचित" थे न कि मशीन पर पकड़ बनाने के विपरीत दिए गए उनके "विशेष" निर्देश।

महिलाओं के शरीर से जुड़े यह पूर्वधारणात्मक पाखंडपूर्ण विचार केवल प्रशिक्षण केंद्र तक ही नहीं हैं अपितु रोजमर्रा के भूमिगत कार्यो में भी आ जाते हैं। जैसा कि मैनें अन्यत्र आलेखित किया है, ऐसे कई मामले हैं जहॉ महिलाओं को अपने भूमिगत कार्य करने से रोका जाता है, या उन सहायकों तक सीमित कर दिया जाता है जो टीम के लिए पानी लाने और सफाई का कार्य करती हैं अथवा अपने कार्य स्थानों से हटाया जाता है खासकर यदि टीम गर्म उत्खननो में कार्यरत है तो उन्हें अपनी टीम से भी अलग कर दिया जाता है। मैं इसे अनौपचारिक कार्य–पुर्नआंवटन की संज्ञा देती हूँ और इसने महिलाओं को उनकी टीमों से अलग कर दिया है और उनमें उनके कार्य के प्रति अलगाव पैदा कर दिया है। इससे उनकी पदोन्नति पर दोनों अल्पकालिक (उत्पादन बोनस के लिए अभोग्यता) व दीर्घकालिक गंभीर प्रभाव पड़े हैं।

ये मात्र अलग–अलग घटनाऐं नहीं हैं अपितु प्रणालीगत है, जो भूमिगत कार्यों में उनके कानूनी समावेश न होने के बावजूद खनन मे उनकी परिधीय स्थिति को सुदृढ़ करती है। मैं उपरोक्त उदाहरणों का प्रयोग यह दर्शाने के लिए करती हूँ कि किस प्रकार महिलाओं एवं पुरूषों के साथ कार्यस्थल पर बर्ताव तथा प्रशिक्षण के अंतर वास्तविक महत्वपूर्ण तथा अदृश्य रूप में विद्यमान हैं। साथ ही किस प्रकार महिलाओं के शरीरों से जुड़ी नाजुंकता व कमजोरी की पूर्व धारणाएँ उनके बहिष्करण को प्रेषित करती है, जिन्हें चुनौती देने और बदलने की आवश्यकता है। ■

सभी पत्राचार असांदा बेन्या को
<asanda.benya@uct.ac.za> पर प्रेषित करें।

> बेरोजगारी के अतिरिक्त आर्थिक प्रभाव

थाबांग सेफलाफला, विटवाटरसैंड विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका द्वारा

अध्यताओं, विश्लेषकों, नीति–निर्माताओं और जनता द्वारा बेराजगारी के अनुभवों पर होने वाली चर्चा अक्सर बेरोजगारी के आर्थिक प्रभावों पर केंद्रित होती है। इस प्रक्रिया में आर्थिक कारकों के अतिरिक्त जिन कारकों की उपेक्षा की जाती है वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। प्राथमिक रूप से अक्सर यह बताया जाता है कि बेराजगारी कैसे भौतिक कठिनाइयों और गरीबी की एक समस्या है। पुरुषों द्वारा अपने परिवार की भौतिक आवश्यकताओं को पूरी न करने की असक्षमता को मर्दांगी, अपमान और शर्म की आशंका के प्राथमिक स्त्रेत के रूप में देखा जाता है।

बेरोजगारी पर बहस, विशेषरूप से नीतिगत क्षेत्रों के अंदर और बाहर भी अक्सर बेरोजगारी के आर्थिक प्रभावों पर केंद्रित होती है, इसलिए यह मुख्य रूप से बेरोजगारी को एक आजीविका की समस्या माने जाने की अवधारणा और समझ को विशेष रूप से स्थापित करती है।

2013 और 2014 के मध्य मैंने दक्षिण अफ्रीका में स्थित फ्री स्टेट प्रांत के अश्वेत बेरोजगार जो पूर्व–श्रमिक थे, जिन्हें सोने की खानों से छंटनी के दौरान काम से निकाल दिया गया था, का नृवंशविज्ञान अध्ययन किया था। इसके परिणाम ऐसी अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करते हैं जो इस विचार की पुष्टि भी करते हैं और इसे चुनौती भी देते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वे बेरोजगारी के आर्थिक प्रभावों को खारिज नहीं करते हैं लेकिन वे यह दिखाते हैं कि यह यंत्रणा इनके कहीं अधिक गहरी है।

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के पूंजीवाद ने मजबूती से मजदूरी का व्यक्तिवाद और पुरुषत्व के लंगर के रूप में संश्लेषण किया। बड़ी संख्या में अफ्रीकन पुरुषों को ग्रामीण क्षेत्रों से भर्ती किया गया और उन्हें मजदूरी के कार्य में शामिल किया गया। सर्वहाराकरण का अर्थ साझा सामूहिक सर्वहारा पहचानों का शक्तिशाली उत्पादन था जिसमें मजदूरी कार्य को एक अच्छा जीवन, विशेष रूप से पुरुष कामगारों के लिए, के रूप में चिन्हित किया।

एक सभ्य और गरिमापूर्ण जीवन के निरूपण पर मजदूरी कार्य के आधिकारिक महत्व के मानने से, दक्षिणी अफ्रीका और मजदूरी के कार्य को वैश्विक संकट पैदा हो गया है। बेरोजगारी की वृद्धि ने ऐसे लोगों की संख्या में वृद्धि कर दी जो नौकरी खोज रहे हैं लेकिन उन्हें काम नहीं मिला। इसके अतिरिक्त नवउदारवादी पूंजीवादी दौर की नौकरियों में अक्सर पारम्परिक नौकरियों की विशेषताओं का अभाव पाया जाता है। अक्सर उनके पास आवाज, सुरक्षा और भत्तों का अभाव होता है। मजदूरी के कार्य के इस गहरे संकट के उपरांत, इसके पारंपरिक उतरदायित्वों को पूरा कर पाने की अपनी क्षमताओं को समाप्त करने के सुझाव दिये जाते हैं। मजदूरी का कार्य आधुनिक विश्व में प्रतिष्ठित मनुष्य की अवधारणा का केंद्रीय तत्व है।

इसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोगों का रोजमर्रा जीवन गहरे और दीर्घ आर्थिक अस्थिरता और असुरक्षा में रहता है। दक्षिण अफ्रीका में सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था जिसे अफ्रीकी महाद्वीप की सबसे व्यापक व्यवस्था के रूप में सराहा जाता है, बेरोजगारी के मुद्दे को अपने में समाहित नहीं करती है। इस तरह से बेरोजगार और मजदूरी करने वाले अन्य वर्ग के लोगों के समक्ष अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए जरूरी किसी स्थाई अनुमानित आय की कोई संभावना नहीं दिखाई देती है।

मेरा शोध दर्शाता है कि छंटनी किये गये पूर्व–खान मजदूरों के आर्थिक असुरक्षा के अनुभव अक्सर खान–मजदूरों की स्वगठित मर्दांगी से जुड़कर निर्मित होते हैं जिनमें अभी कमाने वाले मजदूरों के अनुभव भी शामिल हैं। उदाहरण के लिए मेरा एक साक्षात्कारदाता पूर्व खान–मजदूर रासेबोको ने बताया कि बेरोजगारी एक व्यक्ति के अस्तित्व को मिटा देती है क्योंकि वह अब अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता है। उसने कहा : "बेरोजगारी ने एक पुरुष के रूप में मेरा दर्जा छीन लिया है। एक पुरुष को इसका दर्जा अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के एवज में प्राप्त होता है। अगर मैं अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाता हूँ तो वहाँ पर क्या स्थिति बनेगी ?"

बेरोजगार पुरुष आत्मविश्वास खो देते हैं, निकम्मा महसूस करते हैं और बेरोजगारी के कारण सामने आये अचानक बदलावों और असामंजस्य के कारण वे आत्महत्या पर भी विचार कर सकते हैं। 'अगर एक पुरुष के रूप में तुम अपने परिवार का पालन नहीं कर सकते। मेरे परिवार की तरफ से इस तरह का दवाब बहुत अधिक था। मैंने भी आत्महत्या करने पर विचार किया। मुझे लगा कि मैं कुछ भी नहीं हूँ, मेरे परिवार में मेरा कोई महत्व नहीं है। मैं व्यर्थ हूँ। मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि अब मैं किस के लिए जी रहा हूँ।' वे जब किसी को अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूर्ण करते हुये देखते हैं तब ईर्ष्या का अनुभव करते हैं और स्वयं को सामाजिक कब्रगाह और बचत क्लबों में भागीदारी निभाने में असमर्थ पाते हैं।

सतही तौर पर इस अध्ययन के आंकड़े इस विचार का समर्थन करते हुए दिखाई देते हैं कि बेरोजगारी के प्रभाव मुख्य रूप से आर्थिक कठिनाइयों और गरीबी से संबंधित है। फिर भी, आर्थिक कठिनाइयां और गरीबी बेरोजगारों के लिए अनन्य नहीं हैं, 'कामकाजी गरीब' रोजगार में होने के बावजूद भी भौतिक रूप से वंचित होते हैं।

पूर्व खान–मजदूरों ने खोये हुए अगों के साथ घायल अश्वेत शरीरों की उत्तेजक तस्वीरों के माध्यम से उनके बेरोजगार होने के क्या मायने हैं का वर्णन किया। इसका

>>

नौकरी खोने का तात्पर्य सिर्फ आय खोना ही नहीं है बल्कि यह नैतिक दुर्बलता भी है। यह विश्व और उसमें जीवन के विभिन्न तरीकों को भी खोना है जो कि प्रमुख वेतन के कार्य और पूंजीवादी संबंधों, मानदंड और मूल्यों के अनुरूप है।

तात्पर्य एक विशेष तरह का 'अ–श्रेणीकरण' है जो उन्हें पूर्व की स्थिति से अलग एक भिन्न और उससे निम्न स्तर की स्थिति में डालने की प्रक्रिया है। रूग्ण और पिटे काले शरीरों की तस्वीरों को असंतुष्ट और टूटे हुए सामाजिक और नैतिक आदेशों का वर्णन करने के रूपकों के रूप में प्रयुक्त किया गया था। यह उस विचार को व्यक्त करता है कि उनका ऐसा अस्तित्व उन्हें विश्व से मिटा देने के लिए है।

मजदूरी का कार्य अब एक बाहरी गतिविधि नहीं रहा था जिसमें लोग स्थाई आजीविका को निर्मित और विकसित करने में यंत्रवत लगे हुये हैं, यह उनकी इच्छा का मूर्त रूप बन जाता हैं। मजदूरी के कार्य का मूर्त रूप गहरा, अधिक अस्तित्वगत और नैतिक अधिकार प्रदान करता है कि मजदूरी के लिए कार्य की अनुपस्थिति में यह सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक निहितार्थो का अतिक्रमण करती है और शक्तिशाली रूप से व्यक्ति के अछूत होने की स्थिति पैदा करती है जहां सबकुछ खो जाने के भाव का अनुभव प्राप्त होता है।

नौकरी खोने का तात्पर्य सिर्फ आय खोना ही नहीं है बल्कि यह नैतिक दुर्बलता भी है। यह विश्व और उसमें जीवन के विभिन्न तरीकों को भी खोना है जो कि प्रमुख वेतन के कार्य और पूंजीवादी संबंधों, मानदंड और मूल्यों के अनुरूप है।

इस प्रकार से बेरोजगारों का अपमान और कलंक सिर्फ इसलिए नहीं है क्योंकि उनकी आजीविका को समझौते करने पड़ रहे हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि एक मजदूरी केंद्रित विमर्श में बेरोजगारी एक संकट हैं क्योंकि यह उन स्थितियों का प्रतिनिधित्व करता है जिनमें एक निश्चित प्रकार के वर्चस्व के सहभाजीत और सामूहिक आदेश के सामंजस्य का अभाव हो। बेरोजगारी की हमारी समझ की सीमाएं आजीविका की समस्या के समक्ष प्रमुख चुनौतियां हैं जो हमें इस विचार की तरफ ले जाती है कि कुछ केस स्थानांतरण का उचित प्रशासन और बुनियादी आय अनुदान या बेराजगारी भता ही समस्याओं को हल कर देंगे। हालांकि पूर्व खान–मजदूर इस बात को नकारते हैं कि नगद स्थानांतरण व्यापक रूप से बेरोजगारी के लिए जिम्मेदार हैं। उनका एक निश्चित प्रकार के नगद स्थानांतरण को अस्वीकार करना इसलिए नहीं था क्योंकि वे इसका कोई मूल्य नहीं देखते हैं और इसी कारण यह उस कारण का स्थान नहीं ले पाया जो इन मजदूरों ने खोया था।

अगर मजदूरी कार्य असफल होता है तो भविष्य इसे केन्द्र से हटाने और एक नई साझा और सामूहिक प्रणाली की कल्पना करने की रणनीति के निर्माण पर निर्भर करता है। काम के बाद के वैकल्पिक चिंतन को इस तथ्य का सामना करना पड़ेगा कि एक शक्तिशाली रूप से सम्माहित इच्छा को व्यवस्थित रूप से पैदा किया गया है।

पूर्व खान–श्रमिक विकल्पों के बारे में सोचने की बजाय नौकरी चाह रहे थे। यह विकल्पों के बारे में सोचने की चुनौतियों को चित्रित करता है। मजूदरी–कार्य के प्रति नैतिक प्रतिबद्धता बेरोजगारों, नीति–निर्माताओं और विश्लेषकों को श्रम–कार्य के बाहर संभावित भविष्य के प्रति अंधा बना देती है।

काम के बाद के विकल्प को संभव बनाने के लिए पूर्व खान–मजदूरों, नीति–निर्माताओं और व्यापक रूप से समाज को एक ऐसी दुनिया की कल्पना करनी होगी जिसमें श्रम कार्य अब गरिमा कर धारणा के लिए अब केन्द्रिय नहीं है। ■

सभी पत्राचार थाबांग सेफलाफला
<Thabang.sefalafala@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> विश्व को खाद्य कैसे उपलब्ध करायें : तंजानिया से सीखना

मार्क सी.ए. वेगरिफ, प्रिटोरिया विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका, के द्वारा

दार एस सलाम में इलाला फ्रेश प्रोड्यूस मार्केट। फोटो : मार्क सी.ए. वेगरिफ

तंजानिया के दार–एस–सलाम के लिए आगे बढ़ते हुये मैं लगभग हर सड़क पर भोजन और घरेलू सामान बेचने वाली डुका (छोटी दुकानों) को देखकर मोहित हो गया। इसी तरह मैं पीपुल्स–मार्केट – जीवंत सामाजिक स्थलों, छोटे व्यापारियों से भरपूर इलाके जहां पर वे एक दूसरे को और अधिकांश उपभोक्ताओं को जानते हो जो मेरे रहने के स्थान से थोड़ी–सी पैदल दूरी पर स्थित थे, से भी बराबरी से रोमांचित था। मेरी यह रूचि मेरे शोध कि कैसे दार–एस–सलाम अपने पचास लाख निवासियों को खाद्य उपलब्ध कराता है मे फलीभूत हुई। यह हमारे विश्व की बढ़ती हुई और शहरी जनसंख्या के भोजन की टिकाऊ व्यवस्था के लिए सीख हो सकती है।

> अंडे का अनुसरण करते हुए

प्रारंभ में मैंने अपनी स्थानीय डुका में देखा कि अंडों को बेचने के बाद 30 अंडे के कार्डबोर्ड दो बार प्रयोग में लिये गये। यह देखने के लिए ये कहां से आते हैं मैं सैमुअल, जो अंडों की सप्लाई करता था, के साथ साइकिल से गया। 22 किलोमीटर की यात्रा करने के बाद हम सैमुअल के सीमांत–शहर में स्थित घर पर पहुंचे और एक पेड़ के नीचे बैठकर उसके परिवार के

>>

दार एस सलाम में डूका (छोटी दुकान) में अंडे देते हुए सैमुएल।
फोटो : मार्क सी.ए. वेगरिफ

साथ दोपहर का भोजन किया। सैमुअल 100 मुर्गियाँ रखता है और अपने पड़ोसी मुर्गीपालक किसानों से भी नकद में अंडे खरीदता है। वह हर शाम 600 से 900 अंडे खरीदता है और अगली सुबह इन्हें शहर में बेचने के लिए ले आता है। उस समय, उसके प्रति सप्ताह के तीन चक्कर से होने वाला लाभ एक पूर्णकालिक खेत–मजदूर की न्यूनतम मजदूर से ढाई गुणा अधिक था। मात्रात्मक विश्लेषण में पाया गया कि जिस सड़क पर सैमुअल यात्रा करता था उसी पर साईकिल से करीब दस लाख अंडे हर सप्ताह शहर में लाये जाते हैं। शहर में ताजा अंडों की सप्लाई करने का यह एक पर्यावरण के अनुकूल तरीका एक प्रमुख आपूर्ति का तरीका है और इसका भी यह उदाहरण है कि हजारों लोग अपने लिए कैसे उच्च गुणवतापूर्ण आजीविका सृजित करते हैं।

आगे के शोध से मालूम हुआ कि अंडा उधोग कैसे व्यापक भोजन व्यवस्था के साथ एकीकृत हुआ। सैमुअल अपने पास की एक मुर्गीदाना फैक्टरी से मुर्गीदाना खरीदता है जहां से वह इसे बोरियों में भरकर घर ले जा सकता है। मुर्गीदाना फैक्टरी स्थानीय मिलों जो दार–एस–सलाम में 2,000 से अधिक हैं से मक्के का चाकर प्राप्त करती है। मुर्गियों की बींठों का उपयोग बागवानी के लिए किया जाता है जिससे उगाई सब्जियां पड़ोसियों और स्थानीय बाजार में बेची जाती हैं।

मेरे अध्ययन ने शहर के अधिकांश लोगों के लिए महत्वपूर्ण अन्य खाद्य पदार्थों का भी अनुसरण किया, जैसे मक्का, चावल, दूध, बीफ और हरी सब्जियां। यद्यपि खाद्यों की प्रकृति भिन्न थी और इसके भौगोलिक स्त्रोत शहर से लेकर देश के कोनों तक फैले हुए थे, खाद्य उत्पादन के संगठन और वितरण में समानताएं थीं। अँडे की तरह हरी सब्जियाँ और दूध शहरी और सीमांत–शहरी इलाकों से ट्रकों द्वारा हजारों किलोमीटर से आता था। भीतरी इलाकों में चावल और मक्का लाखों किसानों द्वारा उगाये जाते हैं। इसमें से अधिकांश कुछ हैक्टेयर भूमि में उत्पादन करते हैं जो घरेलू उपभोग, बीज के लिए और व्यापारियों को बेचने के लिए उत्पादन करते है। स्थानीय ऐजेंटों के साथ कार्य करने वाले व्यापारी, जो अक्सर स्वयं भी किसान होते हैं, सुदूर गांवों में जाकर व छोटी मात्रा में नगद भुगतान से सामान खरीदकर एकत्रित करते हैं या तो दार–एस–सलाम के लिए या स्थानीय बाजारों में पहुँचाते हैं। व्यापारी खुदरा दुकान जैसे डुका और पीपुल्स–मार्केट के लिए परिवहन, प्रसंस्करण और वितरण की व्यवस्था करते हैं। विभिन्न परिवहन व्यवसायियों से जरूरत के अनुसार ट्रकों को मंगाया जाता है। स्थानीय मीलिंग मशीनों के व्यापारियों को प्रति बोरी या प्रति किलो का भुगतान करके अधिकांश मक्का मिलिंग और चावल की भूसी तैयार की जाती है।

> एक "सहजीवी खाद्य प्रणाली"

शहर के अधिकांश हिस्से को खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराने वाली खाद्य प्रणाली जिसमें किसानों से लेकर खुदरा विक्रेताओं तक बड़ी संख्या में छोटे स्तर के कार्य करने वाले लोग शामिल होते हैं जो संग्रहण के अलावा एक साथ बिना किसी कॉरपोरेट और राज्य के सहयोग के शहर को खाद्य उपलब्ध कराते हैं। मैं इसे 'सहजीवी खाद्य प्रणाली' कहता हूँ, चूकिं अन्य शब्द जैसे 'अनौपचारिक' इसके साथ तो न्याय नहीं करते। सहजीवी का तात्पर्य यह नहीं है कि सभी संबंध समान हों, लेकिन वे पारस्परिक रूप से लाभकारी हो और लूटेरे नहीं हो अन्यथा वे स्थाई नहीं रहेगें। संचालनकर्ता सामाजिक रूप से अंत स्थापित आर्थिक सम्बन्धों में काम करते हैं जहां पर प्रतिस्पर्द्धा और सहयोगात्मक कार्य करने के बीच एक तनाव उपस्थित रहता है, स्वायतता के साथ–साथ एकजुटता के भी प्रयास होते हैं। कुछ मामलों में जैसे नगरपालिका बाजारों में, निर्वाचित समितियों का एक औपचारिक ढ़ांचा और घोषित नियम होते हैं जो सामान्य पूल प्रबंधन सिद्धांत में फिट होते हैं। अक्सर, हालांकि, सहयोग बिना किसी घोषित नियमों, ढ़ांचे या अनुबंध के तहत होता है। अपेक्षाकृत न्यायसंगत स्थिति और समान सांस्कृतिक प्रदर्शन के साथ, अन्योन्याश्रित कर्त्ता एक–दूसरे के साथ व्यापार और कार्य करते हैं जो कम से कम सुपरिचित स्थापित मानदण्डों और संबंधों पर आधारित होता है। पारस्परिकता इन मानदंडों का हिस्सा है लेकिन वह संकीर्ण और प्रत्यक्ष भौतिक सामग्री विनिमय तक ही सीमित नहीं है। परिवहन और सूचनाओं का साझा करने, बाजार के व्यापारियों का एक–दूसरे का

>>

ध्यान रखना और बच्चों के पालन में सहयोग करना, जैसा सहकार्य उनकी संसाधनों की कमी को दूर करता है और मूल्यवान सामाजिक नेटवर्क तैयार करता है। यह किसी लक्ष्यपूर्ण एकजुटता (हालांकि इसके अभ्यास के माध्यम से एकजुटता विकसित होती है) या परोपकारिता पर आधारित नहीं है, अपितु यह किसी विशेष संदर्भ में क्या कार्य करता हैं पर आधारित है। इस संदर्भ में तंजानिया में, टैरिफ और अन्य उपायों से अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा से कृषि का संरक्षण और राज्य के हस्तक्षेप के इतिहास जिससे पूंजी का संचय कुछ लोगों के हाथों में हो जाता है, सम्मिलित है।

आपसी सहयोग का एक महत्वपूर्ण रूप यह है कि वे नये किसान, व्यापारी और खुदरा विक्रेताओं के प्रवेश को कैसे प्रोत्साहित करता है। आमतौर पर लोग जब कोई अपना व्यवसाय प्रारंभ करते हैं तो परिवार, मित्र और उस व्यवसाय में मौजूद किसी पूर्व परिचित से सहयोग लेते हैं। वे उन्हें कार्य के तरीकों और अवसरों के बारे में के बारे में परिचित कराते हैं एवं उस कार्य के प्रमुख कत्ताओं से परिचय कराते हैं। संकीर्ण आर्थिक दृष्टिकोण से वे अपने स्वंय के प्रतिस्पर्धियों को तैयार करने में सहयोग करते हैं, लेकिन वे भविष्य के सहयोगी भी तैयार करते हैं। सैमुअल ने एक अन्य व्यापारी द्वारा मार्गो और दुकानों को दिखाने, जहाँ वह आपूर्ति कर सकता था, के पश्चात् अंडे का व्यापार प्रारम्भ किया। चावल और मक्का व्यापारी उत्पादन क्षेत्र में कार्यरत वर्तमान व्यापारी के साथ यात्रा करते हैं और वे नये व्यापारियों का अन्य व्यापारियों और किसानों से परिचय करवाते हैं। दुकानदार सामान्यतः दुकान में सहायक के रूप में कार्य प्रारंभ करते हैं, उन्हें दुकान मालिक प्रशिक्षु के रूप में सीखने और पैसे की बचत करके अपना व्यवसाय प्रारंभ करने की अनुमति देते हैं। इस तरह के तंत्र प्रतिकृति के स्थापित मानदंडों का विस्तार करते हैं और इन्हें न्याय संगत बनाते हुए स्थापित मानदंडों में नए प्रवेशकों को अनुमति देते हैं।

तंजानिया में उत्पादित और सहजीवी खाद्य प्रणाली द्वारा वितरित खाद्य सामग्री सुपर मार्केट के बजाय डुका और पीपुल्स–मार्केट में सस्ती हैं। इसके अतिरिक्त ये आउटलेट भोजन को अधिक सुलभ बनाते हैं, क्योंकि वे लोगों के करीब होते है, खाने वाले अपने इच्छा के अनुसार इन्हें कितनी भी मात्रा में खरीद सकते हैं (सामर्थ्य अनुसार), देर रात्रि तक खुले रहते हैं और परिचित स्थाई ग्राहकों को ब्याज मुक्त ऋण प्रदान करते हैं। किसान भी सुपरमार्केट में या अन्य कॉरपोरेट मूल्य वाली व्यवस्था में जाने के बजाय इस सहभागी खाद्य प्रणाली के माध्यम से अपने उत्पादन का उचित मूल्य प्राप्त कर पाते हैं।

> खाद्य आपूर्ति प्रणाली पर प्रभाव

2014 से तंजानिया में तीन अंतर्राष्ट्रीय सुपरमार्केट समूह या तो बंद हो गए या फिर बाहर हो गए। बड़ी संख्या में योजनाबद्ध वृहद पैमाने के कृषि निवेश जिसमें बड़ी भूमि सौदे भी शामिल हैं, या तो ध्वस्त हो गए या फिर अपने लक्ष्य प्राप्त करने में असफल रहे, जिसमें मोंसेंटो, यारा और यूनिलीवर सहित बहुपक्षीय निकाय (उदाहरण के लिए जी–8, वर्ल्ड बैंक, खाद्य और कृषि संगठन) सम्मिलित है जिन्हे वर्ल्ड इकोनोमिक फॉर्म 2010 में लॉन्च किया गया।

इस असफलताओं के बाद दार–एस–सलाम में अल्मारियों में खाद्य उपलब्ध है। 2002 के बाद 25 लाख मिलियन जनसंख्या की वृद्धि के साथ एक शहर का अपने आकार में दोगुना होने के साथ सामंजस्य बैठाने के बावजूद पिछले पंद्रह वर्षों में तंजानिया का छोटे किसानों द्वारा उत्पादित मक्का और चावल उत्पादन लगातार बढ़ता रहा है। उसी डुका और कुछ नए लोगों को आपूर्ति के लिए सैमुअल को अपनी सप्लाई (प्रति–सप्ताह तीन से पांच बार) बढ़ानी पड़ी। ■

सभी पत्राचार मार्क सी.ए. वेगरिफ को
<marc.wegerif@up.ac.za> पर प्रेषित करें।

> जिम्बाब्वे का शिकारी राज्य : पार्टी, सेना और व्यवसाय

जबुसिल मध्यजविमबिशि शुम्बा, अफ्रीका विश्वविद्यालय, जिम्बाब्वे के द्वारा

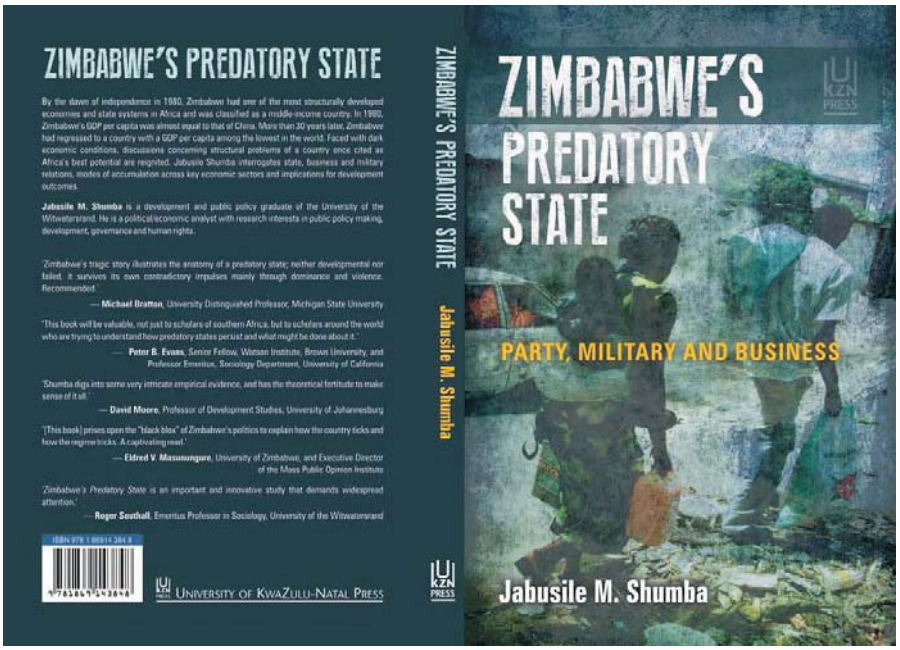

अकादमिक बहसों में जिम्बाब्वे की कहानी उतनी ही विवादास्पद है जितनी ध्रुवीकृत। राज्य की प्रकृति स्वयं संदेह और विवाद के घेरे में है: क्या जिम्बाब्वे वास्तव में मजबूत और नाजुक, असहयोगी या शिकारी राज्य का उदाहरण है? 15 नवम्बर 2017 को जब सेना ने लम्बे समय से शासन कर रहे राष्ट्रपति रॉबर्ट मुगाबे के खिलाफ विद्रोह किया तो लोगों ने इस सैन्य हस्तक्षेप को क्लासिक 'तख्ता पलट' के रूप में वर्णित किया। फिर भी, दूसरों के लिए, जो शायद लंबे समय से परेशान थे और किसी भी कीमत पर राष्ट्रपति रॉबर्ट मुगाबे के निकास को देखना चाहते थे, अंत ने साधनों को उचित ठहराया। इसे परवर्तियों ने रचनात्मक रूप से 'सैन्य सहायता संक्रमण' के रूप में देखना पंसद किया।

बहुत से लोग इससे सहमत होंगे कि जिम्बाब्वे आशावादी जनता और मुक्ति संघर्ष के बहुत से समर्थकों की उम्मीदों से दूर चला गया है। जहां तक मुक्ति संघर्ष का अंत श्वेत वर्चस्ववादी उपनिवेशिक अल्पसंख्कता की पराजय में हुआ, एक ऐतिहासिक विजय प्राप्त हुई। हालांकि सता में मुक्ति संघर्ष न केवल अपने शुभचिंतकों के लिए बल्कि कानून के दायरे में आने वाले अधिकांश नागरिकों के लिए निराशाजनक साबित हुआ। 1980 में अपनी स्वतंत्रता के समय एक बहुत ही होनहार युवा राज्य, जिम्बाब्वे की 2000 के दशक के बाद की छवि हिंसा, प्रलय, आर्थिक विफलता, गरीबी और दुख से जुड़ी रही है। कई प्रश्नों के उत्तरो की अपेक्षा है: ऐसा क्यों हुआ? यह कैसे हुआ? क्या शासक अभिजात्य यह जानते थे कि उनकी अभिरूचि जिम्बाब्वे के विकास में गिरावट लायेगीं ?

> शिकारी राज्य

जिम्बाब्वे का शिकारी राज्य : पार्टी, सेना और व्यवसाय में मेरा तर्क है कि जिम्बाब्वे राज्य अन्य तरीकों के बजाय शिकारी राज्य के रूप में सबसे अच्छी तरह से परिभाषित होता है। फिर भी शिकारी राज्य की अवधारणा एक मायावी अवधारणा बनकर रह गई है। मैं इस अवधारणा के अन्य पक्षधरों जो इसे विकासात्मक राज्य के विरोध में होने की धारणा के रूप में देखते हैं, से भिन्न मत रखता हूँ; अपराधीकरण का एक विशेष प्रकार या नवपाषाणवाद का एक रूप। वास्तव में, उतर–औपनिवेशिक अफ्रीका की राजनीतिक अर्थशास्त्र की अधिकांश धारणाएं केंद्रीय शक्ति की अनुपस्थिति पर बल देती रही हैं। विडम्बना यह है कि 'शिकारी' शब्द अपने आंतरिक स्वरूप में ताकत तो दर्शाता है यानि कि यह अपने लक्ष्य पर शिकार करने के लिए हिंसक शिकारियों को प्रेरित करता है, जिसमें उन्हें पीड़ितों को अपने अधीन करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है। राज्यों के

>>

लिए वास्तव में इस शक्ति केंद्रीय प्राधिकरण की अनुपस्थिति की बजाय उसकी उपस्थिति को नियंत्रित करने की राज्य की योग्यता में निहित है।

मेरे आनुभाविक अध्ययन के आधार पर मेरा सुझाव है कि शिकारी राज्य एक शासक वर्ग की विकास विरोधी संचयन और पुनरूत्पादन परियोजना है जिसकी विशेषताएं हैं – 1. राज्य में पार्टी और सैन्य प्रभुत्व, 2. राज्य–व्यापार संबंधों को प्रभुत्व और कब्जे द्वारा आकारित करना; और 3. हिंसा और संरक्षण द्वारा राज्य–समाज के संबंध को आकारित करना। हालांकि, 'अधिनायकवादी विकासवादी राज्य' और शिकारी राज्य के मध्य अंतर स्पष्ट करना आवश्यक है। असमान विकासात्मक प्रक्षेपवक्र को समझाने के लिए संरचनात्मक भिन्नताओं की समझ बनाने के लिए हम दोनों के मध्य राज्य ढांचे और समाज के साथ सम्बन्ध के संदर्भ में कैसे अन्तर कर सकते हैं?

> शिकारी राज्य बनाम अधिनायकवादी विकासवादी राज्य

मेरा तर्क है कि अधिनायकवादी विकासवादी राज्य और शिकारी राज्य दोनों के प्रारंभिक रूपों में प्राधिकार और व्यक्तिगत नेटवर्किंग की पर्याप्त भूमिका थी। उदाहरण के लिए, दक्षिण कोरिया के उच्च औधोगिक विकास के दौरान पार्क चुंग–ही ने देश के दो प्रमुख व्यवसाय हुंडई और दाएवो के साथ के व्यक्तिगत संबंधों का आनंद लिया। इस प्रकार से व्यक्तिगत लाभ के लक्ष्य से और क्रोनी कैपिटलिज्म से जन लक्ष्य की वृद्धि द्वारा राज्य की भूमिका का निर्धारिण मुश्किल हो जाता है। हालांकि राज्य हमेशा कमान में था; उसने निर्धरित लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपनी अनुशासनात्मक नियंत्रण की शक्ति को कभी नहीं खोया। उदाहण के लिए जब व्यवसाय अपने लक्ष्य प्राप्त करने में असफल हुए तो उन्हे प्रोत्साहन को वापस लेकर दंडित किया गया। राज्य की अनिवार्यता व्यापक और वास्तविक थी।

राज्य के ये दो प्रकार राज्य के व्यवसाय और सेना के साथ के संबंधों की प्रकृति के स्तर पर भी काफी भिन्न हैं। बीसवीं सदी का सतावादी विकासवादी राज्य ने व्यापार के साथ उत्पादक गठबंधनों को बढ़ावा देने के लिए उपयोग में लिये जाने वाली अनुशासनात्मक शक्ति का केंद्रीकरण किया। जबकि शिकारी राज्य के व्यापार के साथ संबंध उत्पादन केंद्रित होने की बजाय परजीवी हैं; इसलिए वे विकास के विपरीत परिणाम प्रदान करते हैं।

सेना के साथ संबंधों की प्रकृति इस बात में भिन्न है कि बीसवीं सदी के विकासान्मुख राज्य द्वारा सेना का उपयोग राष्ट्रीय परियोजना की तरफ उन्मुख रहा है न कि व्यक्तिगत संचयन की तरफ। उदाहरण के लिए एशियाई क्लासिकल विकासवादी राज्य मॉडल में सेना उद्योग प्रतिस्पर्दा में उत्पादन लागत को कम रखने के लिए घरेलू श्रमिकों के नियंत्रण और दमन करने में प्रमुख भूमिका निभाती थी। शिकार राज्य में सेना का हिंसक उपयोग ताकतवर अभिजात्य लोगों के व्यक्तिगत संचयन को दर्शाता है।

संचय के तरीकों के संदर्भ में विनिर्माण क्षेत्र की स्पष्ट अनुपस्थिति दिखाई देती है। यह एक शिकारी राज्य की किराया आधारित प्रकृति को दिखाता है : अर्थात यह संसाधनों के विनिर्माण की बजाय उनके निष्कर्षण को अधिक महत्व देता है। जिम्बाब्वे की अर्थव्यवस्था का परिवर्तित ढ़ांचा, जो अपने उतर–औपनिवेशिक महत्वपूर्ण विनिर्माण क्षेत्र से दूर होकर संसाधनों के निष्कर्षण की तरफ बढ़ रहा है, इस शिकारी प्रवृति के दौर से जुड़ा हुआ है। विनिर्माण क्षेत्र की अनुपस्थिति का प्रभाव है कि वह उत्पादन रणनीतियों की अप्रभाविकता को स्पष्ट करता है। यह सभी असमान क्षेत्रों की एक समान विशेषता बन गई है। वास्तव में नीति का मुख्य लक्ष्य (जैसे कि स्वदेशीकरण और सशक्तिकरण के कार्यक्रम) सताधारी अभिजात वर्ग के सदस्यों को किराये देने के प्रणाली से संबंधित है। अंततः राज्य को अपने आवश्यक सरकारी कार्यो के संचालन के समर्थन के लिए कर राजस्व और विदेशी मुद्रा पैदा करने के लिए (इस मामले में चीन और दक्षिण अफ्रिका) विदेश पूंजी के साथ सामंजस्य बनाने की आवश्यकता होती है। इसलिए विदेश पूंजी के साथ दोस्ती में उन्हें संसाधनों को किराये पर उपयोग करने की भागीदारी की छूट दे दी जाती है।

इस अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष सिर्फ यह नहीं है कि शक्तिशाली अभिजात्य के अपने वर्गीय हित, जिन्होंने आर्थिक परिवर्तन और विकास को बाधित किया बल्कि यह भी कि संचय और राजनीतिक पुनरूत्पादन के इसके प्रचंड तरीके बदल गये और उन्होनें जिम्बाब्वे की शिकारी स्थिति को बनाये रखा। इसके निहितार्थ दूरगामी होंगे। वर्षो से देश की विकास की क्षमताओं को शिकारी अभिजात्य द्वारा कम कर दिया गया जो सता को बनाये रखने और धन संचयन करने के लिए हिंसा और संरक्षण पर निर्भर था। यहां पर सुधार राजनीतिक कीमत चुकाकर आयेगा क्योंकि यह गहराई से एम्बेडड संरक्षण के नेटवर्क को कमजोर करता है। 2017 के सैन्य हस्तक्षेप के बाद पार्टी, सेना और व्यापार का गठजोड़ पुनः जवान हो गया है और आने वाले वर्षो में इसको भुगतना होगा। ■

सभी पत्राचार जबुसिल मध्यजविमबिशि शुम्बा को <jabusile_shumba@biari.brown.edu> पर प्रेषित करें।

> जोजी : अस्थिर स्वर्ण शहर

एलेक्सिया वेबस्टर, फोटोग्राफर एवं **एडवर्ड वेबस्टर,** विट्वाटरसैंड विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका, आई.एस.ए. की श्रम आंदोलनों पर शोध समिति (आर.सी. 44) के सदस्य और पूर्व अध्यक्ष द्वारा

जोहान्सबर्ग के बाहरी इलाके में एक त्यक्त सोने की खान शाफ्ट जो अनौपचारिक खनिकों द्वारा फिर से काम में ली जा रही है।
एलेक्सिया वेबस्टर द्वारा फोटो।

लगभग 125 वर्षों से अफ्रीका के आर्थिक केन्द्र के रूप में, जोहान्सबर्ग जिसे प्रेम से जोजी के रूप में जाना जाता है – दुनिया का सबसे बड़ा शहर है जो किसी नदी के किनारे या बड़े बंदरगाह के पास नहीं बसाया गया है। इसके बजाय इसे स्वर्ण पर निर्मित किया गया है। अपने प्रारंभ से सोने के खनन ने पूरे क्षेत्र और वास्तव में दुनिया भर से आये प्रवासियों की लहर से प्रेरित होकर निरंतर नवाचार के माध्यम से इसने अपने चारों ओर की दुनिया को बदल दिया हैं। यह जोहान्सबर्ग पर सराह न्यूटॉल और अचिल एमबीमेबे के निबन्ध संग्रहों में प्रबल रूप से दिखाई देता है जहां वे शहर को अतंर्मिश्रण और तात्कालिक प्रदर्शन के स्थान के रूप में चित्रित करते है, एक शहर जो महानगरीय संस्कृति का अपना ही ब्रांड विकसित कर रहा है।

लेकिन जोहान्सबर्ग का एक और पक्ष है, न सिर्फ मानवीय जीवन का विनाशकारी पक्ष बल्कि स्वयं प्रकृति का भी। जोसफ शुम्पीटर के शब्दों में, जोहान्सबर्ग "रचनात्मक विनाश" का एक मामला है। कुछ का मानना है कि शहर के बाहरी इलाको में त्यक्त खदानों में अवैध खनन सोने के शहर को नष्ट कर सकता है।

अनौपचारिक खनिकों एवं उनके बच्चों की फलती–फूलती बस्ती जनता से अछूती और छिपी हुई है। हताश बिना दस्तावेज वाले सीमा–पास प्रवासी अपने साथ अपने परिवारों को लाए है और सिटी सेण्टर से ज्यादा दूर नहीं छिपे हुए स्थानों पर एक अनिश्चित जिन्दगी का निर्वाह कर रहे है।
एलोक्सिया वेबस्टर द्वारा फोटो।

>>

> खनन् उद्योग की उत्पत्ति

जोजी में सोने के खनन को समझने के केन्द्र में इसकी अत्यन्त संवेदनशील लागत संरचना है। प्रांरभिक सोने की खाने खोजने वालों के सामने चुनौती सोना ढूँढने की नहीं थी बल्कि उसको भुगतान की मात्रा में ढूँढने की थी। दो कारणों से लाभ कम उत्पादन लागत पर निर्भर थे। प्रथम, चूंकि अयस्क में औसत सोने की मात्रा कम होती है और यह गहरे भूमिगत में पाया जाता है। दूसरा, सोने की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित कीमत खनन कंपनियों को कार्यशील लागत में कोई भी वृद्धि को उपभोक्ताओं पर स्थानांतरित करने से रोकती हैं। इसके परिणामस्वरूप, संकीर्ण रूप से सीमित इस लागत संरचना के अन्तर्गत लागत को कम से कम करने का क्षेत्र मजदूरी है। फिर खदान मालिकों का ऐतिहासिक कार्य सस्ते अफ्रीकी श्रम की व्यापक आपूर्ति का निर्माण और उसे समाहित करना था।

भूमि से बेदखली एवं अनिवार्य कराधान ने पुरूषों को मजदूरी करने के लिए मजबूर किया। उन्हें भीड वाले एकल–लिंग हॉस्टल में रखा गया। उन्हें परिवारों को अपने साथ लाने की अनुमति नहीं थी। परिवार का कार्य श्रम शक्ति का पुनरूत्पादन करना और उनके बीमार, घायल या वृद्ध होने पर उनकी घर पर देखभाल करना था। इस तरह से इस क्षेत्र की विशाल कृषक आबादी, विशेष रूप से महिलाओं ने खदान मालिकों को सब्सिडी प्रदान करी जिससे वे एकल व्यक्ति को बनाये रखने की लागत का भुगतान करने में सक्षम बनें।

न्यूनतम हेड़ स्पेस और अनिश्चित सहयोगी व्यवस्थाओं के साथ गहरे भूमिगत में, अश्वेत खनिक विस्फोट करने की तैयारी करते हुए। कई वर्षों के तत्पश्चात, उनके कार्य के अनुभवों ने उनके स्वास्थ्य को प्रभावित किया। उनमें से अधिकांश की श्वास की बीमारियों के चलते जल्दी दर्दनाक मौत हुई। फोटोः अज्ञात फोटोग्राफर, लूनी कैलीनिकोस के संग्रह से।

एक परिसर में कंक्रीट के चबूतरों पर आराम करते खदान मजदूर। भंडारण, प्रकाश व्यवस्था और हीटिंग के बहुत साधारण प्रावधान के साथ एक शयनागार जिसमें 40 पुरूष रह सकते थे।
फोटो : यू डबल्यू सी रोबेन द्वीप संग्रहालय, मेइबुइ अभिलेखागार।

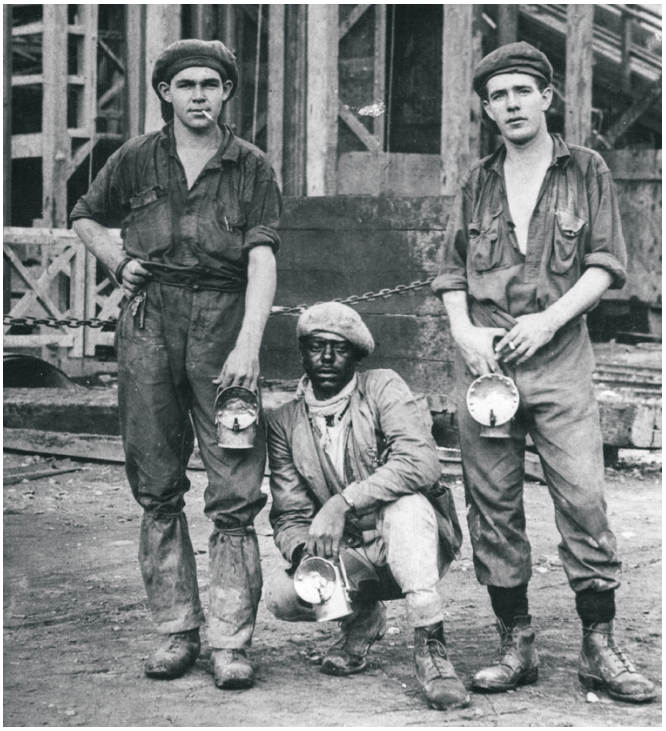

1907 में एक अनुभवी अश्वेत खनिक के पास दो युवा श्वेत खनिक। अश्वेत खनिक श्वेत खनिक का मोटे तौर पर दसवाँ हिस्सा कमाते थे।
फोटो : अज्ञात फोटोग्राफर, लूली कैलीनिकोस के संग्रह–स्वर्ण और कामगार से, पृष्ठ संख्या 75 ।

घर की तरफ चलते हुए। एक वर्ष के लंबे अनुबंध के बाद संविदा खनिक श्रमिक परिवारों के लिए भेंट से लदे हुए घर की तरफ यात्रा करते हुए।
फोटो : नीवे अफ्रीकाना संग्रह, संग्रहालय अफ्रीका अभिलेखागार।

>>

घर वापसी। 1933 में मुदुदुमा में अपने परिवार के लिए उपहारों से लदा हुआ एक प्रवासी लौट रहा है।
फोटो: एस ए रिव्यू पिक्टोरियल, 1935–36

उत्पादन को बनाये रखने के लिए, खदानें पृथ्वी के भीतरी भाग में गहरी और गहरी गईं। सोने की खानों में उच्च दुर्घटना दर स्वर्ण की निकासी वाली असाधारण गहराईयों के साथ जुड़ी हुई है। औसत गहराई 1600 मीटर से अधिक है, सबसे अधिक गहराई भूमिगत 4000 मीटर से भी अधिक तक पहुँचती है। दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण चट्टानों का टूटना और चट्टानों का गिरना है। 1983, जिस वर्ष हमने अपना शोध प्रारम्भ किया, में 371 खनिक चटटानों के गिरने के कारण मारे गये। 1900 और 1985 के मध्य, 66000 खनिक भूमिगत मर गये और एक लाख से भी अधिक गंभीर रूप से घायल हुए थे। चट्टान गिरने से कई पुरूष स्थायी रूप से अपंग हो गये थे। उन्होंने अपना बाकी जीवन व्हील चेंयर या पक्षापात से ग्रसित लोगों के लिए बने अस्पतालों में बिताया।

एक नई पुनः खोली त्यक्त खान पर बच्चों को पीठ पर लादे अयस्क को पीसते हुए महिलाएँ। एलक्सिया वेबस्टर द्वारा फोटो।

स्वर्ण एवं "अपव्ययी परिसंपति" है। समय के साथ, जोहन्सबर्ग के नीचे देय सोने की मात्रा समाप्त हो गई। शहर की आबादी चरघातांकी तरीके से बढ़ी और इसकी द्वैतीयक अर्थव्यवस्था फलफूल कर देश के सबसे बड़े वित्तीय केन्द्र के रूप में विकसित हुई। खदानों ने औपचारिक उतपादन बंद कर दिया और साइटों को त्याग दिया गया।

फिर भी, सिटी सेण्टर से ज्यादा दूर नहीं, आप सीमा पार के प्रवासियों को, जैसा जेनेट मुनकम्वे ने अपनी डाक्टोरल थीसिस में दिखाया है, खनन क्षेत्र की परिधि पर अवैध आजीविका कमाने का प्रयास करते हुए देख सकते हैं। उन्हें जमाजमा के रूप में जाना जाता हैं। वे हर सुबह रास्सियों और अपने मोबाइल फोन पर टॉर्च का इस्तेमाल करते हुए आदिम उपकरणों के साथ नीचे जाते हैं। वे चट्टानों की तरफ साधारण हथौडी, कुदाली/ खुरपी और छेनी लेकर जाते है और चट्टान को तोडते हैं और अयस्क को एकत्रित करते हैं।

एक खनिक भूमिगत चटटान को तोड़ने के लिए काम में लेने वाले हथौडे को पकडे हुए। एलेक्सिया वेबस्टर द्वारा फोटो

>>

एक बडे बर्तन के साथ "जमाजमा" बाल्टी में स्लश को डालते हुए। एलेक्सिया वेबस्टर द्वारा फोटो

अयस्क के टुकड़ों को साफ करते हुए महिला खनिक। एलेक्सिया वेबस्टर द्वारा फोटो।

बालो में चोटी करते हुए और बच्चों को खिलाने के साथ अयस्क को पीसते हुए। एलेक्सिया वेबस्टर द्वारा फोटो

श्रम के घंटो का अंतिम उत्पाद साने का एक छोटा सा डला है। एलेक्सिया वेबस्टर द्वारा फोटो

यह एक जोखिम भरा व्यवसाय है, एंजेला करियुकी लिखती हैः "भूमितल में भोजन खत्म होने की बहुत ही वास्तविक संभावना है, विशेषकर जब एक साथ कई सप्ताह (कभी कभी महीनों तक) तक काम चलता है। वे हवा की कमी की बात करते हैं जहाँ वायु–संचालन यंत्र अब काम नहीं कर रहे है। वे यह भी रिपोर्ट करते हैं कि कुछ लोगो का दम घुट गया है, विशेष रूप से जब वे या तो स्वयं को ठंडी भूमिगत परिस्थितियों में गर्म रखने के लिए या कठोर चट्टानी क्षेत्र को नरम बनाने के लिए आग जलाते हैं। और वे छाती के संक्रमण, जिद्दी खांसी और अक्सर चट्टानों के गिरने, या अन्य दुर्घटनाओं, टखनों को बचाव करने वाले सुरक्षा जूते की कमी के कारण होने वाली शारीरिक चोटों के बारे में बोलते हैं।

स्थापित यूनियन आंदोलन की उदासीनता का सामना करते हुए, ये खनिक सोशल मीडिया के सहारे से समाजिक नेटवर्को के माध्यम से स्वयं संगठन बनाने लगे हैं। इनमें से बहुत कम श्रम संघों से सम्बन्धित हैं लेकिन प्रतिनिधित्व एंव भागीदारी के नये स्वरूप उभर रहे है जैसे कि कामगार सलाह कार्यालय, शवाधान समाज और प्रवासी अधिकार संघ।

अतीत की औपचारिक खनन प्रणाली के विपरीत, अनौपचारिक खानें महिलाओं और पुरूषों दोनों और उनके परिवारों को शामिल करती हैं। एलेक्सिया वेबस्टर द्वारा फोटो

लेकिन अनियमित खनन ने एक नाटकीय मोड़ लिया जब जोहान्सबर्ग के मेयर, हर्मन मशाबा ने घोषणा की कि शहर "संभावित तबाही" का सामना कर रहा है (संडे आइम्स, 25 नवम्बर 2018)। उन्होंने कहा कि अवैध खननकर्ताओं ने शहर को अप्रत्याशित आपदा के कगार पर खड़ा कर दिया है क्योंकि जोहान्सबर्ग के नीचे अत्यधिक ज्वलनशील गैस और ईंधन लाइनों के कुछ ही मीटर दूर जमाजमा विस्फोट कर रहे थे। उन्होंने ऐलान किया कि यदि इन में एक भी लाइन नष्ट हो गई तो 300 मीटर के दायरे में सब कुछ "भस्म" हो जायेगा। सिटी काउंसिल के एक अधिकारी ने संडे टाइम्स को बताया कि शहर के प्रमुख हिस्से भी अवैध खननकर्ताओं द्वारा शहर के नीचे नई और मौजूदा सुंरगों के 140 कि.मी. के जाल में खुदाई या विस्फोट के कारण ढहने के खतरे में है।

अतः वह शहर जो सोने के खननकर्ताओं की पीठ पर निर्मित हुआ, अब जोजी की त्यक्त सोने की खानों में "अवैध खननकर्ता" के रूप में आजीविका प्राप्त करने का संघर्ष करतें हुए हताश महिलाओं और पुरूषों के प्रभाव से ढहने के कगार पर है। जहॉ कुछ लोग "मुक्त बाजार" और इन बहादुर खनिकों के उद्यम का जश्न मना सकते हैं, जैसा कार्ल पोलान्यी ने कई दशकों पूर्व कहा था, अनियमित बाजार ''किसी भी लंबे समय तक समाज के मानवीय और प्राकृतिक वास्तविकता को खत्म किये बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता है''।

पर्यावरणीय विनाश से प्रभावित खनन समुदायों ने इन अनिश्चित समुदायों की रक्षा करने के लिए नेटवर्को का गठन किया है। क्या ये प्रयास पोलान्यी द्वारा सोचे गये प्रतिकारी आंदोलन के बीज होगें, ऐसा असंभव लगता है, लेकिन यह अवश्य ही जिसे माइकल बुरावे एवं कार्ल वान होल्डट अपनी "कन्वरसेशन्स विद बोर्दयू" में कहते है, "जोहान्सबर्ग क्षण" का समर्थन करते है। वे लिखते हैं कि जोहान्सबर्ग क्षण एक रंगभेद पश्चात का समय, राजनैतिक फूटाव और "समाज की व्यापक अव्यवस्था" का समय भी है। ■

सभी पत्राचार
एलेक्सिया वेबस्टर को <alexiawebster@gmail.com>
एडवर्ड वेबस्टर को <edward.webster@wits.ac.za>
पर प्रेषित करें।

> एकजुटता परिपेक्ष्य से
दक्षिण–पंथी लोकलुभावनवाद

बोर्ग फ्लेकर, वियना विश्वविद्यालय, आस्ट्रिया और कार्य का समाजशास्त्र पर आईएसए, शोध समिति (आर.सी. 30) की सदस्य, एवं **करिना ऑल्ट्राइटर, इस्तवान गैज्जर** और **सस्काजा शिंडलर**, वियना विश्वविद्यालय, आस्ट्रिया के द्वारा

जनवरी 2019 में बुडापोस्ट, हंगरी में एक नये श्रम कानून के विरोध में प्रदर्शन।
श्रेय : अट्टिला किसबेनेडेक/एएफपी/गेट्टी चित्र

यूरोप में 2008 के आर्थिक और वितीय संकट के साथ सार्वजनिक संस्थानों पर भरोसा कम होने से पैदा हुये तीव्र सामाजिक–आर्थिक बदलाव का लाभ सुदूर की दक्षिणपंथी पार्टियों ने उठाया है। सदी के इस परिवर्तन के बाद कई राजनीतिक दलों ने अपने राजनीतिक ऐजेंडे में सामाजिक प्रश्नों को रखा। प्रवास को हमेशा एक केंद्रीय प्रश्न के रूप में रखने से, इन राजनीतिक दलों ने 2015 में बड़ी संख्या में पहुंचे शणार्थियों का उपयोग जनता में गुस्से और विरोध को पैदा करने के लिये सफलतापूर्वक किया। इस प्रकार से कल्याण रुढ़ीवाद का उनका ट्रम्प कार्ड कल्याणकारी–मित्रतापूर्ण–राज्य के आडम्बर और अधिक आक्रामक जेनोफेबिक रुख पर आधारित है। इस प्रक्रिया में, अति दक्षिणपंथ ने एकजुटता की अवधारणा पर दावा किया और वामपंथी राजनीति के लिए नहीं छोड़ा। उदाहरण के लिए हंगरी के प्रधानमंत्री विक्टर ऑर्बन ने यूरोपीय एकजुटता दिखाते हुए शरणार्थियों के लिए हंगरी की सीमाओं को पूरी तरह बंद करने के पेशकश की।

'सोलिडेरिटी इन टाइम ऑफ क्राइसिस' (एसओसीआरआईएस)[1] पर शोध प्रोजेक्ट अपने प्रारंभिक बिंदु के रूप में प्रतीकात्मक संघर्ष को एकजुटता की अवधारणा के ऊपर लेती है। प्रतीकात्मक संघर्ष से हमारा तात्पर्य उन विवादों से हैं जिनमें सामूहिक कर्त्ता सामाजिक विश्व के अपने दृष्टिकोण को दूसरों पर थोपने की कोशिश करते हैं यह उन दोनों से संबंधित है जिसे हम सही और गलत, अच्छे और बुरे, मूल्यवान और व्यर्थ में मानते हैं और 'प्रतीकात्मक सीमायें' जो समूहों को बांटती हैं और लोगों में समान और संबंधित होने की भावना पैदा करती हैं। यह परियोजना आस्ट्रिया और हंगरी पर केंद्रित है। ये दोनों देश आर्थिक संकट से भिन्न–भिन्न प्रकार से प्रभावित हैं लेकिन समान राजनीतिक विकास का दिखावा कर रहे थे। गुणात्मक और संख्यात्मक आंकड़ों की पद्धतिगत त्रिआयामी प्रविधि का उपयोग करते हुए एसओसीआरआईएस सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक व्यक्तिनिष्ठता के बीच के पेंचिदा संबंधों को समझने का आधार प्रदान करती है।

एकजुटता और इससे संबंधित प्रतीकात्मक संघर्षों की अवधारणाओं को समझने के लिए हमें इसके विभिन्न आयामों का दायरा और एकजुटता की लिए कल्पित समुदाय की सीमायें, एकजुटता के आधार और एकजुटता की गतिविधियों को देखना होगा, उदाहरण के लिए नागरिक समाज में। आस्ट्रिया और हंगरी में

>>

मार्च 2019 में वियना, आस्ट्रिया में जातिवाद के विरोध में प्रदर्शन। फोटो : बोर्ग फ्लेकर

जुलाई से सितम्बर 2017 के मध्य किया गया एसओसीआरआईएस सर्वे कार्यशील आयु के प्रतिनिधित्वपूर्ण निदर्शन पर आधारित था। आंकडों का विश्लेषण इस बारे में एक गहरी समझ प्रस्तुत करता है कि लोग किसके साथ एकजुटता प्रदर्शित करते हैं और कब और क्यों दूसरों की मद्द करने के लिए जिम्मेदार महसूस करते हैं और क्या वे विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए कल्याणकारी राज्य समर्थन क पक्ष में हैं।

एक महत्वपूर्ण शोध प्रश्न यह था : गहराई तक विभाजित हो चुके देशों में क्या अलग एकजुटता की अवधारणाएं हो सकती हैं, उदाहरण के रूप में शरणार्थी सहायता, साधन के मुद्दे, जांच हुये सामाजिक लाभ या राज्य द्वारा रोमा अल्पसंख्यक समुदाय का समर्थन? एकजुटता के प्रति उनके विचारों के आधार पर लोगों को समूहों में विभाजित करने हेतु सर्वे के आंकड़ों का सांख्यिकीय क्लस्टर विश्लेषण किया गया जिसमें प्रति देश 7 समूह थे। आश्चर्यजनक रूप से कुछ समूह दोनों देशों में एकजुटता की समान अवधारणायें दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए 'गैर–एकजुट और निष्क्रिय' समूह को कल्याणकारी राज्य के लिए कम समर्थन के रूप में देखा गया। वे परिवार और पड़ोस के लिए एकजुटता को सीमित करने और नागरिक समाज की गतिविधियों में भी कमी की विशेषता दर्शाते हैं। एकजुटता कर निरंतरता के दूसरे ध्रुव पर हम दोनों देशों में 'एकजुट और सक्रिय' समूह पाते हैं, अर्थात, कल्याण राज्य का मजबूत समर्थन और नागरिक समाज संगठनों में उच्च स्तर की गतिविधियों की विशेषता वाले एकजुटता के पैटर्न दिखाते लोग। फिर भी इस समूह की एकजुटता दोनों देशों में भिन्न हो सकती है : जहां पर आस्ट्रिया के लोगों में सम्पूर्ण मानव जाति के प्रति चिंता है तो हंगरी के लोगों की चिंता राष्ट्रीय स्तर तक सीमित है।

हालांकि जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग इन दोनों चरम सीमाओं के मध्य स्थित हो सकता है। वहां, हम ऐसे कई समूहों की भी पहचान कर सकते हैं जो नींव के विभिन्न प्रकार के मिश्रण और एकजुटता की संभावना के साथ–साथ गतिविधियों के स्तर भी दिखाते है। एक देश में किसी एक रूप का अस्तित्व हो सकता है लेकिन विशिष्ट रूपों का अंतर समूहों के आकार से संबंधित है। अगर हम समूहों को लेते हैं या संयुक्त एकजुटता के प्रकारों को देखते हैं और केवल समोवशिता और विशिष्टता के बीच अंतर करते हैं अर्थात क्या लोग सजातीय और राष्ट्रवादी घेरे के पक्ष में हों या सार्वभौमिक एकजुटता दर्शाते हों, तो हम देखते हैं कि आस्ट्रिया में 62 प्रतिशत किसी प्रकार की समावेशी एकजुटता है जबकि हंगरी में इसके पक्ष में सिर्फ 39 प्रतिशत उतरदाता हैं। इसके विपरीत यह शोध दर्शाता है कि 40 प्रतिशत हंगरियन लोग जातीय और राष्ट्रीयता के संदर्भ में सीमित एकजुटता के पक्ष में हैं जबकि आस्ट्रिया में इसके पक्ष में सिर्फ 27 प्रतिशत उतरदाता हैं।

दोनों देशों में जेनोफाबिक और कल्याणकारी अंधराष्ट्रवादी दलों के कारण हम यह भी देखने के इच्छुक थे कि क्या एकजुटता के तरीके दलों की प्राथमिकता से मेल खाते हैं या नहीं। अपेक्षानुसार इन दोनों देशों में चरमपंथी और लोकलुभावन दक्षिणपंथी दलों का सबसे मजबूत समर्थन गैर–एकजुट और राष्ट्रीय–विशिष्ट एकजुट समूहों के बीच पाया गया। हालांकि हमें यह भी ज्ञात है कि इन दलों का पर्याप्त समर्थन उन समावेशी इलाकों (हंगरी में 20 प्रतिशत और आस्ट्रिया में 15 प्रतिशत के आसपास) से भी हुआ है। इसका तात्पर्य यह है कि कुछ लोग अपने दलों को जेनोफेबिक और कल्याणकारी–अंधराष्ट्रवादी रूख के बावजूद मत देते है। हमें यह भी सचेत रूप से मानना चाहिए कि चरम दक्षिण पंथ सिर्फ आबादी में उपस्थित दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि लोग विभिन्न कारणों से इसके प्रति आकर्षित हैं।

दक्षिणपंथी लोकलुभावनेवाद पर मौजूदा बहसों के एक बड़े हिस्से के विपरीत एसओसीआरआईएस परियोजना के परिणाम दर्शाते हैं कि यह सिर्फ एक विशेष सामाजिक समूह नहीं है, जैसे कि वंचित ब्लू–कॉलर कार्यकर्ता, जिनका मतदान व्यवहार अति–दक्षिणपंथी पार्टियों की सफलता की व्याख्या करता है। जहां निम्न प्रस्थिति, वंचन और राजनैतिक शक्तिहीनता की भावना वास्तव में महत्वपूर्ण कारक है, आश्चर्यजनक बात यह है कि आस्ट्रियाई और हंगेरियन अति–दक्षिणपंथी पार्टियों के समर्थकों का एक बड़ा हिस्सा धनी है, आभार मानते हैं और हाल ही के सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों से लाभान्वित हुए हैं।

एकजुटता की अवधारणा समाज की दरारों की हमारी समझ में योगदान देती हैं और अतिदक्षिणपंथी का समर्थन करती है। यहां पर दलों की प्राथमिकताओं और एकजुटता की अवधारणा में एक निश्चित साम्यता है। फिर भी, कल्याणकारी–रूढ़ीवादिता के महत्व के उपरातं हम इन दलों की सफलता को सिर्फ 'विशिष्ट एकजुटता' के रूप में नहीं देख सकते हैं। एक तरफ अपने ही वक्तव्य के विपरीत पार्टियाँ राष्ट्रीय स्तर के समूह में विकसित कल्याणकारी–राज्य का समर्थन नहीं करती है। इसमें अधिक क्या है कि एकजुटता के प्रकार अक्सर जटिल होते हैं और आगामी अनिश्चिततायें और विरोधाभास निश्चित ही विभिन्न पक्षों में एक राजनीतिक गोलबंदी के लिए निश्चित खुलापन प्रदान करते हैं। ■

1. यह प्रोजेक्ट आस्ट्रीन साइंस फॉर्म (एन.आर. । 2698–जी 27) और द हंगरीयन साइंटिफिक रिसर्च फंड ओकटा द्वारा वित पोषित है। (एन.आर. ए.एन.एन 120360)

सभी पत्राचार बोर्ग फ्लेकर को
<joerg.flecker@univie.ac.at> पर प्रेषित करें।